हिंदी चेतना

हिन्दी प्रचारिणी सभा, कैनेडा की त्रैमासिक पत्रिका
Hindi Chetna quarterly magazine of Hindi Pracharini Sabha, Canada

वर्ष 10, अंक 38, अप्रैल 2008
Year 10, Issue 38, April 2008

Transfer money to any bank in India.*

Sending money home to your loved ones just got more convenient. You can now send money to any bank in India. ICICI Bank has tied up with all major banking networks in India to present this unique money transfer solution. Enjoy attractive exchange rates, low costs and the convenience of ICICI Bank's branches all over Canada.

*Over 100 banks in India.

To learn more, contact us at:

- **icicibank.ca**
- **1-888-ICICI-CA (1-888-424-2422)**
- Visit an **ICICI Bank branch** near you

OUR BRANCHES

Brampton	: 1 Bartley Bull Parkway
Mississauga	: 3024 Hurontario Street, Unit - G12 (Hurontario St. and Dundas)
Scarborough	: 5631 Steeles Avenue East
Toronto (Downtown)	: 130 King Street West, Suite 2130
Toronto (Gerrard Street)	: 1404 Gerrard Street East
Surrey, B.C.	: 9288-120th Street, Suite 303
Vancouver (Downtown)	: 569 Howe Street

Money Transfers | ICICI Bank

ICICI Bank Canada is not responsible for any charges that may be charged by other institutions facilitating the remittances. Money transfers may be subject to the rules and regulations of the country where the transfer is effected. For more information, visit our website at icicibank.ca or walk into any of our branches.' ICICI Bank name' and i-man logo contained herein are the property of ICICI Bank Limited.

इस अंक में...

स्थायी स्तम्भ

2 **मुखपृष्ठ**
3 **संपादकीय**
4 **संदेश**
6 **सभ्यता - संस्कृति**
7 **पाती**
48 **चित्रकाव्य - कार्यशाला**
63 **साहित्यिक समाचार**

कहानियाँ

17 **असली कलाकार**
डा. गौतम सचदेव
19 **लाश (कहानी)**
सुमन कुमार घई
25 **भगवान की सृष्टि (बाल कथा)**
डा. फुकन
31 बिल्ली (बालकथा)
रमेश शौनक
33 काठी की सीख
नीरज नैथानी
36 प्रायश्चित (बालकथा)
राधा गुप्ता

आलेख

8 **मस्कत में होली-**
अनुपमा सिंह
57 **भारतीय नारी**
कनिका सक्सेना

सभ्यता-संस्कृति

6 डा. राम चौधरी

व्यंग्य

56 **चमचा**
ओम कुमार आर्य

कविताएँ

9 **ग़ज़ाल**
अफरोज़ ताज
10 **रामसेतु**
गजेन्द्र सोलंकी
10 **तीन कविताएँ**
हलीम आइना
17 **झड़ते हुये पत्ते या उजड़ते हुये पत्ते**
डा. गौतम सचदेव
23 **कविता**
चंदर वर्मा
25 **नवयुग का गीत**
भगवत शरण श्रीवास्तव
26 **हिन्दी की आत्मकथा**
लक्खूराम चहवरिया
26 **दुनिया नई बसायेंगे**
राधा गुप्ता
27 **बोलो अहिल्या**
कुसुम सिनहा
27 **विदाई की पूजा**
नीना वाही
34 **ग़ज़ाल (उर्दू)**
नंदा जी
34 **नज़्म (उर्दू)**
जाफर अब्बास
35 **दास्ताने जीन्स व अंर्तरद्वन्द**
डा. नरेन्द्र नाथ टंडन
35 **ग़ज़ाल**
अजंता शर्मा
37 **दीवारों के कान**
नीरज नैथानी
37 **इच्छाओं के वृक्ष तले**
भगवान लाहोटी
38-45 होली संग्रह
कवि कुलवंत सिंह
वनीता सेठ
ऊषा देव
सुदर्शन प्रियदर्शनी
निर्मल सिद्धू
किरन सिंह
सुरेन्द्र पाठक
भारतेन्दु श्रीवास्तव
राज महेश्वरी
ब्रजराजकिशोर कश्यप
46 **चेहरों की दुकान**
रमेश शौनक
47 **शिक्षा के दीप जलाओ**
डा. सुरेश चन्द्र शुक्ल
57 **कबसे रही पुकार**
मरियम खान

साहित्यिक समाचार

61 **नार्वे से**
65 **मस्कत से**
63 **न्यूजर्सी में होली**
63 **न्यूजर्सी में हिन्दी प्रतियोगिता**
62 **मिसिसागा कैनेडा में कवि गोष्टी**
61 **सुदर्शन फ़ाकिर की (कुछ यादें)**
61 **शोक समाचार**

साहित्यिक चर्चा

52 **पुस्तक समीक्षा 'समय के साये'**
श्रीनाथ द्विवेदी
54 **उरोज 'उर के ओज'**
डा. नरेन्द्र टंडन

साक्षात्कार

11 **प्रेम जनमेजय से डा. सुधा ढींगरा की लम्बी बातचीत**
15 **फ़णिश्वर नाथ रेणू से रेणुभटनागर की मुलाकात**

संस्मरण

24 **बस का पास**
डा. कुश कुमार

उभरते लेखक...

41 वास्ती राम घई

चेतना सहायक मंडल

डैनी काबल - कैनेडा
डा. फुकन अमेरिका
रमेश शौनक - अमेरिका

हिन्दी चेतना वर्ष2008

संरक्षक एवं प्रमुख संपादक
श्री श्याम त्रिपाठी

सह संपादक
डा॰निर्मला आदेश (कैनेडा)
डा॰ सुधा ओम ढींगरा (अमेरिका)

संपादकीय मंडल
अभिनव शुक्ल (अमेरिका)
गजेन्द्र सोलंकी (भारत)

प्रबंध संपादक
डा. हरीशचन्द्र शर्मा (कैनेडा)
डा. ओम ढींगरा (अमेरिका)

मार्ग दर्शक मंडल

डा. प्रभाकर श्रोत्रिय (भारत)
सरोज सोनी (कैनेडा)
स्नेह सिंहवी (कैनेडा)
राज महेश्वरी (कैनेडा)
उदित तिवारी (भारत)
डा. कमल किशोर गोयंका (भारत)
अनुपमा सिंह (कैनेडा)
विनोद चन्द्र पाण्डेय (भारत)
देवेन्द्र सिंह (अमेरिका)
अनुराधा चंदर (अमेरिका)
डा. कृष्ण कुमार (यू.के.)

प्रमुखः विदेश
अनिल शर्मा (थाइलैंड)
ऊषा राजे सक्सेना(यू. के.)
सुरेश चन्द्र सक्सेना (नार्वे)
यासमीन त्रिपाठी (फ्राँस)
राजेश डागे (ओमान)

हिन्दी प्रचारिणी सभा
महाकवि प्रो॰ आदेश(संरक्षक)
श्याम त्रिपाठी (अध्यक्ष)
भगवत शरण श्रीवास्तव(उपाध्यक्ष)
सुरेन्द्र पाठक (मंत्री)
डॉ॰ चन्द्रशेखर त्रिपाठी (उपमंत्री)
श्रीमती सुरेखा त्रिपाठी (कोषाध्यक्ष)
शालीन चन्द्र त्रिपाठी (सदस्य)
सुरभि गोवर्धन (सदस्य)

■ मुख्य पृष्ठ

होली के रंगों से तन - मन रंग लो
'हिन्दी चेतना' से बुद्धि - विवेक रंग लो
जीवन को रंगों और रसों से भर लो
फिर आयेगा जीने का मज़ा
लगेगी नहीं जिन्दगी एक सज़ा।
डा. सुधा ओम ढींगरा

अरविंद नराले

आमंत्रणः

"हिन्दी चेतना" सभी लेखकों का स्वागत करती है कि आप अपनी रचनायें प्रकाशन हेतु हमें भेजें। सम्पादकीय मण्डल की इच्छा है कि "चेतना" साहित्य की एक पूर्ण रूप से संतुलित पत्रिका हो, अर्थात् साहित्य के सभी पक्षों का संतुलन। एक साहित्यक पत्रिका में आलेख, कविता और कहानियों का उचित संतुलन होना आवश्यक है, ताकि हर वर्ग के पाठक पढ़ने का आनन्द प्राप्त कर सकें। इसीलिए हम सभी लेखकों को आमन्त्रित करते हैं कि हमें अपनी मौलिक रचनाएँ ही भेजें। अगले अँक के लिए अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भेज दें। अगर संभव हो तो अपना चित्र भी साथ अवश्य भेजें। रचनाएँ भेजते हुये निम्नलिखित नियमों का ध्यान अवश्य रखें।

विशेष नियमः

1. *हिन्दी चेतना, अप्रैल, जुलाई, अक्टूबर, तथा जनवरी में प्रकाशित होगी।*
2. *प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचारों का पूर्ण उत्तरदायित्व लेखक पर होगा।*
3. *पत्रिका में राजनैतिक तथा विवादास्पद विषयों पर लिखित रचनाएँ प्रकाशित नहीं की जायेंगी।*
4. *रचना के स्वीकार व अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार संपादक मंडल का होगा।*
5. *प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जायेगा।*

संपर्कः

Hindi Chetna
6 Larksmere Court, Markham, Ontario, L3R 3R1
Phone (905) 475 - 7165 Fax: (905) 475 - 8667
e-mail: hindichetna@yahoo.ca

संपादकीय :-

हिन्दी चेतना दस वर्ष की हो गई है। दस वर्ष पहले हम जिस उद्देश्य को लेकर चले थे मुझे हर्ष है कि हम उस पर अडिग और अटल रहे। हमारे मार्ग में अनेकों बाधाएँ आईं किन्तु वे हमें एक नया अनुभव देकर चली गईं। इन दस वर्षों में हमें बहुत कुछ सीखने को मिला जो शायद हम कहीं भी न सीख पाते। हमें एक नया अनुभव, एक नया विश्वास , एक नया आनन्द और एक नई दिशा मिली। चेतना के कारण हमें ख्याति और सम्मान भी मिला। महान् साहित्यकारों के निकट पहुंचाया और हमारी भावनाओं को विश्व के कोने - कोने में पहुंचाया। हमनें अपनी त्रुटियों को सदा सामने रखकर अपना अगला कदम बढ़ाया। हमारे लेखकों ,पत्रकारों और पाठकों ने हमें हमेशा स्नेह और सम्मान के पालने पर झुलाया।

आज की हिन्दी चेतना इन्हीं दस वर्षों की स्मृतियों का इतिहास है। विभिन्न विचारों और परामर्श के सहयोग का परिणाम है।

चेतना के माध्यम से इन दस वर्षों में स्वर्गीय यशपाल जैन, स्वर्गीय हरिवंष राय बच्चन, दिवंगत पंडित चन्द्रशेखर पाण्डेय , महाकवि हरि शंकर आदेश तथा मुंशी प्रेमचंद आदि हिन्दी के महान् साहित्यकारों के सम्मान में विशेषाँक भी प्रकाशित हुये हैं। हमारा उद्देश्य चेतना के माध्यम से प्रवासी साहित्य को प्रोत्साहन देना और नये - नये लेखकों को हिन्दी भाषा और साहित्य की ओर प्रेरित करना है। नि:संदेह प्रवासी साहित्यकारों को भारत से बहुत कुछ सीखना है इसके साथ - साथ प्रवासी साहित्य को उन ऊँचाइयों तक पहुंचाना है कि हर प्रवासी साहित्यकार अपनी लेखनी पर गर्व कर सके। साहित्य मानव की संवेदनशीलता को सृजनात्मक गति प्रदान करता है। यही हिन्दी चेतना का महत्त्वपूर्ण अंग रहा है और साथ में विश्व के साहित्यकारों को एक मंच पर लाकर वसुधैव कुटुम्ब का निर्माण करना है।

चेतना के अनेकों हाथ हैं । सूची बहुत लम्बी है फिर भी कुछ प्रमुख लोगों का उल्लेख करना आवश्यक है : उदाहरणार्थ महाकवि आदेश , निर्मला आदेश , सुमन कुमारा घई , डा. सुधा ओम ढींगरा, अरविंद नराले, गजेन्द्र सोलंकी, डा. कमलकिशोर गोयनका आदि अनेकों ख्याति प्राप्त व्यक्ति हमारा पथप्रदर्शन करते हैं । हम नये -नये स्तम्भ, नई- नई रोचक सामग्री पत्रिका में प्रयोग करने का प्रयास कर रहे हैं। डा. सुधा ओम ढींगरा के प्रयास से हमने कुछ साक्षात्कार और सभ्यता संस्कृति के माध्यम से कई साहित्यिक विभूतियों को आप तक पहुंचाने का प्रयास किया है। यह पत्रिका हम सभी हिन्दी प्रेमियों की है। आप इसके सदस्य बनकर हिन्दी के यज्ञ में अपनी आहुति डाल सकते हैं ताकि यह यज्ञ चलता रहे।

धन्यवाद

प्रमुख संपादक - श्याम त्रिपाठी

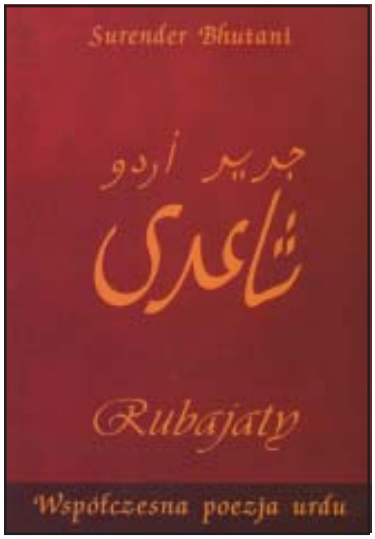

Hindi Chetna is a literary magazine published quarterly in Toronto, Ontario under the editorship of Mr. Shiam Tripathi. Hindi Chetna aims to promote the Hindi language, Indian culture and the rich heritage of India to our children growing in the Canadian society. It focuses on Hindi literature and encourages creative writers, young and old, in North America to write for the magazine. It serves to keep readers in touch with new trends in modern writing. Hindi Chetna has provided a forum for Hindi writers, poets and readers to maintain communication with each other through the magazine. It has brought many local and international writers together to foster the spirit of friendship and harmony.

भारत का राजदूत
سفير الهند
AMBASSADOR OF INDIA

सन्देश

"हिन्दी चेतना" के विषय में जानकारी पा कर अति प्रसन्नता हुई। श्री श्याम त्रिपाठी और उनके सहयोगियों का राष्ट्र भाषा हिन्दी की सतत सेवा करने के लिये हार्दिक अभिनन्दन।

हिन्दी को विश्व व भाषा का गौरव दिलाने व प्रवासी भारतीयों को अपनी मातृभूमि से जोड़े रखने में "हिन्दी चेतना" जैसे प्रयास बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। इस लिये हमें इन में सहभागी बनना चाहिये।

"हिन्दी चेतना" को मस्कत तक लाने और इस माध्यम से अन्य देशों विशेषकर उत्तरी अमेरिका और ओमन के हिन्दी प्रेमी भारतीयों को जोड़ने की प्रक्रिया को आरम्भ करने के लिये मस्कत स्थित श्री गजेश धारीवाल का प्रयास सराहनीय है।

"हिन्दी चेतना" परिवार को मेरी हार्दिक बधाई व शुभकामनायें।

(अनिल वाधवा)
भारत का राजदूत

P.O. Box 1727, Ruwi, PC 112, Muscat, Sultanate of Oman
Tel: (+968) 2468 4512/ 2468 4513, Fax: (+968) 2469 8291, Email: hom@indemb-oman.org

केदार नाथ साहनी
Kidar Nath Sahani

दिनांक 19 जनवरी, 2008

प्रिय श्री श्याम त्रिपाठी जी,

सप्रेम नमस्कार ।

'हिन्दी चेतना' के नए अंक के साथ नव वर्ष के लिए भेजी आप की शुभकामनाएं प्राप्त कर बहुत आनन्द हुआ। आप ने याद किया; आभारी हूं। कृपया मेरी मंगल कामनाएं भी स्वीकार करें।

कैनेडा में रहने वाले सभी भारतीयों को 'हिन्दी चेतना' अपनी सदा की सज धज के साथ राष्ट्रभाषा हिन्दी के साथ न केवल जोड़ती है किन्तु, उन्हें भारतीय जीवन मूल्यों, रीति रिवाजों, मर्यादाओं तथा परम्पराओं के साथ भी जोड़े रखने का अद्भुत कार्य करती है। भारत से हजारों मील दूर बैठे आप भारत माता की जो सेवा कर रहे हैं, उसके लिए मेरा साधुवाद।

हार्दिक मंगलकामनाओं के साथ,

शुभेच्छु,

(केदार नाथ साहनी)

श्री श्याम त्रिपाठी जी

☎ 011-65427165
निवास : जी–12, एनडीएसई-II, नई दिल्ली-49 Residence : G-12, NDSE-II, New Delhi-49

सभ्यता एवँ संस्कृति

डा. राम चौधरी (अमेरिका)

हिन्दी न्यास के संरक्षक एवँ कार्यकारिणी सदस्यों में से एक डा. राम चौधरी जी त्रैमासिक पत्रिका ' हिन्दी जगत ' के मुख्य संपादक एवं ' न्यास समाचार ' के सम्पादक, त्रैमासिक विज्ञान पत्रिका ' विज्ञान प्रकाश' के मुख्य सम्पादक हैं। यह लेख लिखने के कुछ घंण्टे पहले डा. राम चौघरी जी ने बताया कि वे अब सिर्फ ' विज्ञान प्रकाश' एवँ ' न्यास समाचार' सम्भालेंगे। 'हिन्दी जगत' का भार किसी और को सँभाला गया है। डा. राम चौधरी जी की बढ़ती उम्र और पत्नी के स्वास्थय हेतु एवँ न्यास के भविष्य की दूरदर्शिता को सम्मुख रख और लोग लाने बहुत ज़रूरी है। ऐसा निर्णय लिया गया है। कार्यकारिणी में भी फेर बदल हुई है। राम चौधरी जी का यह निर्णय बहुत सम्मान जनक है।

हिन्दी न्यास से , 'बाल हिन्दी जगत' बच्चों की पत्रिका भी प्रकाशित होती है। इन पत्रिकाओं के अतिरिक्त तीन पुस्तकें हिंदी में प्रकाशित हुई हैं - विज्ञान भावना, लोक विज्ञान तथा साहित्य - साधना, रमेश दत्त शर्मा : प्रतिनिधि रचनाएँ।

अमेरिका में विदेशी भाषाओं को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है। अधिक विद्यार्थी वाली भाषाओं को पहले वर्ग में तथा कम पढ़ाई जाने वाली भाषाओं को दूसरे वर्ग में रखा जाता है। इस स्थिति से उबरने के लिए न्यास ने एक छोटा सा प्रयास किया है: रटगर्स विश्वविद्यालय को सन् 2001 में 8000.00 डालर का अनुदान देकर प्रारम्भिक हिंदी कक्षाएँ तथा इस वर्ष 10,000 डालर अनुदान देकर हिंदी की माध्यमिक कक्षाएँ प्रारम्भ करवाईं हैं।

राम चौधरी जी न्यूआर्क स्टेट यूनीवर्सिटी में भौतिकी के प्रोफेसर हैं। फिजिक्स में इनका बहुत प्रकाशन हो चुका है। शोध से जुड़ी कई संस्थाओं, समितियों के संयोजक , सहसंयोजक रह चुके हैं। अमेरिका की कई स्वयं सेवी संस्थाओं से सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम करवा चुके हैं।

अमेरिका में हिंदी के प्रचार प्रसार में बहुत सक्रिय रहे हैं। राम चौधरी जी भौतिक शास्त्र के ज्ञाता होने के साथ - साथ हिन्दी के लिए भी भावनात्मक लगाव रखते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी समिति के सचिव, राष्ट्रीय संयोजक एवँ अध्यक्ष रह चुके हैं।

राम चौधरी जी 'विश्वा' त्रैमासिक हिंदी पत्रिका के सम्पादक एवं अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी समिति के संवाद पत्र के सम्पादक भी रह चुके हैं।

राम चाधरी जी ने एम.एस.सी . (फिजिक्स) आगरा कालेज उ.प्र. और पी.एच.डी ब्रिटिश कोलम्बिया विश्वविद्यालय वैन्कूवर, कनाडा से की । उत्तर प्रदेश (भारत) के जिला इटावा के गाँव फूलपुर में जन्में डा. राम चौधरी अपनी जन्मभूमि के गाँव से जुड़े एक प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं। गाँव में एक छोटे से स्कूल से लेकर , इंटरमीडियट कालेज तक की विकास यात्रा में उनका सहयोग रहा है। उन्होंने अपने गाँव में एक स्कूल के अतिरिक्त एक ग्रामीन विज्ञान केन्द्र की भी स्थापना की है। अमेरिका में भी बच्चे हिंदी पढ़े - इस दिशा में उन्होंने बहुत सराहनीय कदम उठाए हैं।

डा. राम चौधरी ने त्रिनिडाड , लन्दन एवं सूरीनाम तीन विश्व हिंदी सम्मेलनों में भाग लिया। सूरीनाम में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन में उन्हें सम्मानित किया गया है।

पाठको ! राम चौधरी जी जब अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी समिति के अध्यक्ष थे तो मैं राष्ट्रीय संयोजक थी। हिन्दी चेतना परिवार को भारतीयता के इस दूत पर गर्व है जिसने हिंदी , विज्ञान एवँ सामाजिक कार्यों में सराहनीय योगदान दिया है एवँ भावी पीढ़ी को एक नई दिशा दी है।

डा. सुधा ओम ढींगरा

पाठको! नव वर्ष के आगमन के साथ ही हमने " हिन्दी चेतना " में भी एक नई चेतना लाने की कोशिश की है। कई एक नये स्तम्भ शुरू किये हैं। सभ्यता - संस्कृति उनमें से एक है। इसके अर्न्तगत हम आपको अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी संस्थाओं, संस्थापकों, हिन्दी के प्रचार-प्रसार में जुटे महानुभावों से मिलवाते रहेंगे। विश्व में आप किसी का परिचय इस स्तम्भ में करवाना चाहें तो हमें लिख भेजें। अगले अंक में श्री देवेन्द्र सिंह (हिन्दी यू .एस. ए) एवँ श्री सुरेशचन्द्र शुक्ला (नार्वे)से आपकी मुलाकात करवाएँगे।

लेख भेजने का पता है.....

सभ्यता - संस्कृति
hindichetna@yahoo.ca

पाती - राधा गुप्ता (अमेरिका)

हिन्दी चेतना जनवरी 2008 मिली। आद्यंत पढ़ी। इसका बाह्य कलेवर तो आकर्षक है ही , आंतरिक कलेवर भी अति उत्तम है। चन्द्रशेखर त्रिपाठी का लेख ' संस्कारों से संस्कृति का उद्भव' अक्षरश: सत्य है। हमारे संस्कारों से ही हमारी संस्कृति का उद्भव होता है और हमारी यही संस्कृति एक सुदृढ़ समाज व राष्ट्र का निर्माण करती है। एक समय था जब भारत अपनी कला, संस्कृति और वैभव के लिए विश्वविदित था, आज हम खुद ही अपने मूल्यों को खोते जा रहे हैं । हमें फिर से आज के आधुनिक अनुसंधानों के साथ अपनी आत्मसत्ता का भी अनुसंधान (शोध) करना होगा, तभी हम अपनी खोई हुई संस्कृति को, प्रभुता को पुन: वापस पा सकते हैं।

"मैंने कविता को नहीं ,कविता ने मुझे ढूँढ़ा है" रेखा मैत्र और डा. सुधा ओम ढींगरा का साक्षात्कार मन को छू गया एवँ यह जानकर मन पुलकित एवँ गर्वित हो उठा कि हम प्रवासी साहित्यकारों पर भी शोधकार्य हो रहा है। रेखा जी को मेरी बधाइयाँ।

डा.सुधा ओम ढींगरा की कविता "कैसे थमें?" यथार्थपरक एवं हृदयग्राही है। कोई नहीं जानता कैसे थमेंगे जीवन के यथार्थ के ये आँसू! महाकवि आदेश की "रुकना जीवन का काम नहीं ", " गज़ल", श्री देवी त्रिपाठी की " अपने द्वार खुले रखना " आदि कविताएँ अच्छी लगीं।
श्रीनाथ प्रसादी द्विवेदी की व्यंगोक्तियाँ (कवितायें) " दम्भ की डुगडुगी और अहं का नगाड़ा " एवँ "चतुष्पदी " मन को गुदगुदा गई। पिछले अँक में उनकी उक्ति - " विदेशों में हिन्दी के उन्नयन के लिये हमें दिल्ली के मठाधीशों की जरूरत नहीं है " पढ़कर मैं तो खिलखिलाकर हंस पड़ी थी। सम्पादक और लेखक बधाई के पात्र हैं। हिन्दी चेतना की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना के साथ .....

हिन्दी चेतना के लिए मेरी पहली कोशिश

डैनी कावल - (कैनेडा)

मेरा नाम डैनी कावल है, मैं चेतना परिवार से जुड़ा हुआ हूं और हिन्दी सीख रहा हूं। मेरा परिवार भारत से है इसलिए मैं अपनी संस्कृति जानना चाहता हूं। मुझे गीता से प्रेम है, और हिन्दी भजन बहुत प्यारे लगते हैं। हिन्दी पढ़कर मैं बहुत सी चीज़ें समझ सकता हूं। हिन्दी चेतना के साथ काम करने में बहुत मज़ा आता है। अगर बचपन से मैं हिन्दी जानता होता तो मैं बहुत सी अच्छी बातों को समझता होता। पश्चिमी सभ्यता संस्कृति का मुझपर बहुत असर रहा है। मैं अपने गुरू जी डा. रत्नाकर नराले जी का बहुत आभारी हूं जो मुझे अपने परिवार की तरह हिन्दी सिखा रहे हैं। मैं आशा करता हूं कि एक दिन चेतना के लिए एक कहानी लिखूंगा।

त्रिपाठी जी,
एक अरसा पहले 'हिन्दी चेतना' देखी थी, उसके बाद फिर नया अँक मिला , देखकर आकार , प्रकार और स्तर सभी में आशातीत उन्नति नज़र आई। एक नई ताज़गी थी पत्रिका में। साथ ही आपने अपनी पत्रिका में जो स्थान व सम्मान दिया इसके लिए आपको शुक्रिया करती हूं। पत्रिका के निरन्तर उन्नति की कामना है।
रेखा मैत्र (अमेरिका)

त्रिपाठी जी ,
'हिन्दी चेतना' दिन प्रति दिन निखरती जा रही है। जनवरी अंक बहुत ही पसंद आया। ऊषा देव का संस्मरण दिल को छू गया। डा. सुधा ढींगरा की कविता ने मन मोह लिया।
सारी ही रचनाएँ व मुखपृष्ठ अत्यन्त ही अच्छे लगे।
शुभकामनाओं के साथ .....
डा. ध्रुवकुमार (अमेरिका)

मान्यवर,
सुधा ढींगरा से मुझे आपकी पत्रिका हर बार मिली रहती है। इस बार के अंक का कवर पेज उत्कृष्ट बन पड़ा है। सामग्री भी बहुत पसन्द आई। एक सुझाव है , कि हास्य रस को थोड़ा बढ़ाइए। मैं लेखिका नहीं हूं पर पाठक गंभीर हूं। बहुत पढ़ती हूं और अच्छी रचनाओं की परख भी है। पत्रिका का स्तर देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि यह एक उच्च स्तरीय ,साफ सुथरी साहित्यिक पत्रिका है। इस प्रयास के लिए हार्दिक बधाई। कविताओं का चयन ठीक कीजिये। पत्रिका के स्तर को बनाए रखने के लिए हर रचना को सोच समझकर छापें।
हरिन्द्र कौर सिंह (अमेरिका)

मस्कट में होली

अनुपमा सिंह- (मस्कत)

उत्सव और त्यौहार हम भारतीयों की महान सांस्कृतिक और सामाजिक धरोहर है। हम चाहे जहाँ भी रहे हमारे संजीवक त्यौहार हमारे जीवन का अभिन्न अंग बने रहते हैं। ये न केवल हमारे जीवन में उमंग और उत्साह लाते हैं बल्कि समाज को एकजुट रखने और समरस बनाने में भी बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मस्कट (ओमान) में बसे भारतीय, सभी त्यौहार बड़े उत्साह चाव व धूमधाम से मनाते हैं और होली का त्यौहार तो अपनी मस्ती आनन्द और हुड़दंग के कारण प्रिय है। विशेषरूप से बच्चों का उत्साह देखते ही बनता है। इस समय ऋतुराज वसंत का स्वागत करते हुये प्रकृति भी महक और ताज़गी लिये होती है, मौसम सुहावना होता है। होली के आगमन की सूचना भारतीय दुकानों को देखकर मिल जाती है।

मंदिर में होलिका दहन किया जाता है। जिसमें अलग - अलग प्रांतवासी और भाषा- भाषी भारतीय बढ़चढ़ कर भाग लेते हैं और बाद में खेला जाता है रंग पूरी मस्ती किन्तु संजीदगी के साथ। लेकिन उत्तर भारतीयों का कहाँ मन भरता है , होली के बाद के सप्ताहंत के दिन मस्तानों का जमावड़ा होता है । समुद्र के किनारे या किसी फार्म हाउस पर । फिर होता है जी भर कर नाचना - गाना - बजाना आदि और जमकर होती है रंगबाज़ी कभी सूखी, कभी गीली।

भारतीय सामाजिक संस्था की हिन्दी शाखा की ओर से विशेष रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। जिसमें होली के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुये होली से जुड़े गीत तथा नृत्य प्रस्तुत किये जाते है। आज विरज में होली रे रसिया और होली खेलत रघुवीरा की थाप पर कलाकारों के साथ सभी नाच उठते हैं। सहभोज में होली के पकवानों विशेषरूप से ग़ुझिया तथा ठंडाई को शामिल किया जाता है। आप सब को होली की शुभकामनाएँ कुछ ऐसे :

शुभ कीरत की सिर पाग रहे , हित मित्रन का अनुराग रहे,
नित रंग रहे नित राग रहे, हरि कृपा से आपके जीवन में बारह मासें फाग रहे।

पाठको! अक्टूबर 2008 का अँक हम विशेषाँक निकाल रहे हैं। आपको यह जानकर हर्ष होगा कि यह विशेषाँक हम श्रद्धेय, वरिष्ट एवं प्रख्यात उपन्यासकार , नाटककार , कहानीकार, व्यंग्यकार एवं निबन्धकार, डा.नरेन्द्र कोहली पर निकाल रहे हैं।

डा. नरेन्द्र कोहली आतंक, साथ सहा गया दुःख, मेरा अपना संसार, दीक्षा, अवसर,युद्ध, महासमर, अभ्युदय,अभिज्ञान एवं तोड़ो कारा तोड़ो इत्यादि उपन्यासों, आत्मा की पवित्रता,जगाने का अपराध, आधुनिक लड़की की पीड़ा, (व्यंग्य) आदि, गारे की दीवार, निर्णय रुका हुआ (नाटक), नमक का कैदी, निचले फ़्लैट में, कहानी का अभाव, (कहानियाँ) इत्यादि के रचयिता हैं । डा. कोहली के साहित्य की ये सिर्फ झलकियाँ हैं । डा. कोहली के व्यीक्तत्व , कृतित्व एवँ साहित्य पर रचनाएँ आमंत्रित हैं । लेखकों एवं पाठकों से निवेदन है कि रचनाएँ जुलाई तक हमें अपने चित्र सहित भेज दें ।

रचनाएँ भेजने का पता है:-

hindichetna@yahoo.ca
sudhaom9@gmail.com

ग़ज़ल
डा. अफ़रोज़ ताज

फूल तन से जो न जुदा होता
उनकी ज़ुल्फ़ों में न सजा होता

दुशमनों से जो वास्ता होता
तेरे मिलने का रास्ता होता

धूप ने रंग ले लिये सारे
बाग़ कैसे हरा भरा होता

रुख़ - ए- रोशन से उड़ गया आँचल
चाँद क्यों न बुझा बुझा होता

उठते उठते उम्मीद थी दिल को
तू ने बढ़कर बिठा लिया होता

पापियों की तालाश न होती
तेरे घर में जो आइना होता

रूठ जाता अगर तू पल भर को
एक पल एक उम्र का होता

सारी दुनिया के ग़म तेरे ग़म हैं
काश मेरा भी ग़म तेरा होता

मेरे होने से रंज होता है
मैं न होता तो दूसरा होता

एक ही वाहिमा सताता है
क्या वह रोके से रुक गया होता

बाग़बाँ को ज़ुनूँ ज़रूरी है
फूल पत्थर पे भी खिला होता

जान दे दी है आपके ख़ातिर
काश इक लफ़्ज़े शुक्रिया होता

सारे पत्थर मेरे तराशे हैं
मैं न होता तो क्या ख़ुदा होता?

है तमन्ना मुझे मनाने की
क्यों नहीं मुझ से तू ख़फ़ा होता

काश मेरी तरह कहीं वह भी
मेरे बारे में पूछता होता

जिन्दगी चैन से गुज़र जाती
तू किसी और से मिला होता

दूर रहने से बढ़ गई चाहत
और कुछ देर तक रहा होता

क्या मिलायेगा वह ज़माने से
'ताज' ख़ुद से तो मिल लिया होता

(डा. प्रेम जनमेजय दिल्ली विश्व- विद्यालय के कालेज आफ़ वोकेशनल स्टडीज़ के हिंदी विभाग में रीडर के पद पर कार्यरत हैं। व्यंग्य विधा को शिष्टता, संवेदना, माननीय स्पर्श एवं उत्कृष्टता देने में इनका बहुत बड़ा हाथ है। इनके व्यंग्य संकलन हैं - राजधानी में गँवार, पुलिस! पुलिस! मैं नहीं माखन खायो, आत्मा महाठगिनी, शर्म मुझको मगर क्यों नहीं आती है.....
. सुधा ओम ढींगरा ने ' हिन्दी चेतना' के लिए इनसे लम्बी बात चीत की)। पढ़िये पृष्ठ 11 पर

श्याम त्रिपाठी
मुख्य संपादक
हिन्दी चेतना

राम सेतु

कवि गजेन्द्र सोलंकी (भारत)

सागर के बीच सीना तान के अड़ा हुआ ,
त्रेतायुग से जो स्वाभिमान से खड़ा हुआ
निर्माण की कला की दिव्य तकनीक है,
रामसेतु साहस और शौर्य का प्रतीक है
ज्वार - भाटों का जो युग - युग से गवाह है,
कितनी सुनामियों के मोड़ता प्रवाह है
रामसेतु आसुरी शक्तियों का संहार है,
देव लोकभावना के क्रोधवाला ज्वार है
सेतु धर्म रक्षा हित विजय अभियान है,
रामसेतु नन्हीं सी गिलहरी का मान है
सेतु नल, नील , हनुमान जी की साधना ,
रामसेतु रामेश्वरम धाम की आराधना
सेतु सीतामाता के सतीत्व वाली आन है,
राम जी की पूजा शिवजी का वरदान है
सेतु ऋषियों के दिव्यशास्त्रों का संधान है,
सेतु दिव्य शक्तियों के शौर्य का विधान है
रामसेतु भारतीय एकता का मन्त्र है,
सेतु हिन्दुओं की दिव्यचेतना का तन्त्र है
रामसेतु भक्ति भावनाओं वाली प्यास है,
रामसेतु कल्पना नहीं इतिहास है
सेतु तोड़ने पे जो ये अड़ी सरकार है,
सेतु पे नहीं ये संस्कृति पे प्रहार है
वैश्विक धरोहर का मान होना चाहिये,
रामसेतु रक्षा का विधान होना चाहिये ।।

3 छोटी कविताएँ

हलीम आईना (भारत)

1. महाग्रंथ

संसार को
उन्हीं फटेहाल लोगों ने
ऊपर उठाया है,
जिन्होंने-
मोटे - मोटे
लिखने की बजाय
अपने जीवन को
महाग्रंथ बनाया है।

2. विश्व गुरु

जिस दिन भी,
वेदों की - ' दया '
बाईबिल की - ' सेवा'
कुरआन का - ' भाईचारा'
और
गुरुग्रंथ का - 'संदेश न्यारा'
मेरे देश को
मिल जायेगा,
उसी दिन-
सही अर्थों में
मेरे देश का तिरंगा
हर दिल में लहरायेगा।

3. घुटन

जब - जब भी
दिमागी प्रेशर कुकर में
दुश्चिंतन की
सब्ज़ी पकती है
बेईमानी की
सीटी बजती है,
तब - तब
यही घटता है,
दिल की किचन में
आदर्शों का
सिलैण्डर
फटता है।

प्रेम जनमेजय के साथ सुधा ओम ढींगरा की बातचीत

प्रेम जनमेजय व्यंग्य - लेखन के परंपरागत विषयों में स्वयं को सीमित करने में विश्वास नहीं करते हैं। उनका मानना है कि व्यंग्य लेखन के अनेक उपमान मैले हो चुके हैं। बहुत आवश्यक है सामाजिक एवं आर्थिक विसंगतियों को पहचानने तथा उनपर दिशायुक्त प्रहार करने की। पिछले दस वर्षों में पूँजी के बढ़ते प्रभाव, बाजारवाद, उपभोक्तावाद एवं बहुराष्ट्रीय कंपनियों की 'संस्कृति' के भारतीय परिवेश में चमकदार प्रवेश ने हमारी मौलिकता का हनन किया है। दिल्ली की जिन गलियों को कभी शायर छोड़कर नहीं जाना चाहता था अब वही गलियाँ माल - संस्कृति की शोभा बढ़ाने के लिए दिल्ली को छोड़कर जा रही हैं। अचानक दूसरों का कबाड़ हमारी सुन्दरता और हमारी सुन्दरता दूसरों का कबाड़ बन रही है। सौन्दर्यीकरण के नाम पर, चाहे वो भगवान का हो या शहर का, मूल समस्याओं को दरकिनार किया जा रहा है। धन के बल पर आप किसी भी राष्ट्र को श्मशान में बदलने और अपने श्मशान को माल की तरह चमका कर बेचने की ताक़त रखते हैं।

नँगई की मार्केटिंग का धंधा जोरों पर चल रहा है और साहित्य में भी ऐसे धंधेबाजों का समुचित विकास हो रहा है। कुटिल - खल - कामी बनने का बाज़ार गर्म है। एक महत्त्वपूर्ण प्रतियोगिता चल रही है - तेरी कमीज मेरी कमीज से इतनी काली कैसे? इस क्षेत्र में जो जितना काला है उसका जीवन उतना ही उजला है। कुटिल - खल - कामी होना जीवन में सफलता की महत्वपूर्ण कुँजी है। इस कुँजी को प्राप्त करते ही समृद्धि के समस्त ताले खुल जाते हैं।

व्यंग्य को एक गंभीर कर्म तथा सुशिक्षित मस्तिष्क के प्रयोजन की विधा जानने वाले प्रेम जनमेजय आधुनिक हिंदी व्यंग्य की तीसरी पीढ़ी के सशक्त हस्ताक्षर हैं। पिछले चौतिस वर्षों से साहित्य रचना में सृजनरत इस साहित्यकार ने हिंदी व्यंग्य को सही दिशा देने में सार्थक भूमिका निभाई है। परंपरागत विषयों से हटकर प्रेम जनमेजय ने समाज में व्याप्त आर्थिक विसंगतियों तथा सांस्कृतिक प्रदूषण को चित्रित किया है।

प्रस्तुत है सुधा ओम ढींगरा के साथ उनकी लम्बी बातचीत।

सुधा ढींगरा: लेखन की तरफ रुझान कब और कैसे हुआ?आपके शुरुआती लेखन - प्रेरणा के स्त्रोत कौन थे? आपकी आरम्भिक साहित्यिक यात्रा के कौन से बिंदु हैं जिन्हें आप आज याद करना चाहेंगे?

प्रेम जनमेजय: जैसे हिन्दी का हर लेखक अपना आरम्भिक लेखकीय जीवन , काव्य लेखन के साथ करने के लिए विवश है,मैंने भी किया। परन्तु कविता के साथ कहानी की भी शुरुआत हो गयी। उन दिनों मैं नवीं कक्षा में पढ़ता था और विज्ञान का छात्र था। हमारे अंग्रेजी के अध्यापक श्री बत्तरा जी के प्रयत्नों के फलस्वरूप पहली बार किसी सरकारी विद्यालय ने अपनी पत्रिका निकालने का स्वप्न पूरा किया। मैंने पत्रिका में अंग्रेजी की एक कविता के माध्यम से अपना तुच्छ योगदान दिया। कविता जब प्रकाशित होकर आई तो अपनी ही कविता को छपा देखकर तथा उसकी प्रशंसा सुनकर मन और रचनायें लिखने को प्रेरित हुआ। गर्मी की छुट्टियाँ होने वाली थीं और अध्यापक पढ़ाने में कम तथा अपने रजिस्टर और डायरियाँ लिखने में अधिक रुचि ले रहे थे। ऐसे में पिछले बैंच में बैठकर मैंने और मेरे सहपाठी मित्र सुदर्शन शर्मा ने एक कहानी लिखी, 'छुट्टियाँ'। सुदर्शन अब इस दुनियाँ में ज़िंदा नहीं है और न ही उसके साथ लिखी वह कहानी ही किसी पत्रिका के पन्नों में ज़िंदा है, पर उसकी यादें आज भी किसी ताज़ा रचना की तरह ज़िंदा हैं। विज्ञान की पढ़ाई तथा दोबारा पत्रिका न प्रकाशित होने की विवशता ने उस कहानी को किसी अनाम कोने में जैसे गुम कर दिया, पर मेरे अंदर लिखने की इच्छा अपने पंख तलाशती रही।

ग्यारवी की परीक्षा देने के बाद मेरे पास कुछ करने को न था। बात 1966 की है । उन दिनों इंजीयनिरिंग आदि परीक्षाओं के लिए गर्मियों की छुट्टियों का बलिदान नहीं करना पड़ता था । मेरे अंदर एक लेखक फिर जागा और मैंने एक प्रेम - कथा लिखी - कल आज और कल। इसे मैंने गाजियाबाद से उन दिनों अपने शीघ्र प्रकाशन की घोषणा करने वाली पत्रिका ' खिलते फूल' में भेज दिया। इधर हायर सेकेन्डरी का परिणाम आया और मैंने मेरे अंदर के लेखक ने धारा के विपरीत, विज्ञान छोड़ मुझे

हिन्दी आनर्स लेने को विवश किया। उन दिनों दिल्ली विश्वविद्यालय का आज का कालेज ' मोती लाल नेहरू कालेज' (जिसके वर्तमान प्रिंसपिल प्रसिद्ध कवि दिविक रमेश हैं) डिग्री कालेज के रूप में और बाद में हस्तिनापुर कालेज के नाम से जाना गया। नरेन्द्र कोहली और कैलाश वाजपेयी जैसे लेखकों को गुरु के रूप में पाने पर मेरे लेखक-मन की बलवती इच्छा प्रबल हो गई। प्रतियोगिताओं में जाना, पुरस्कार प्राप्त करना जैसे मेरे जीवन का अंग बन गया। इसमें दिल्ली विश्वविद्यालय का माहौल का बहुत बड़ा योगदान है

सन 1965 से सन् 1975 के समय को यदि मैं दिल्ली विश्व विद्यालय के हिंदी विभाग का स्वर्णिम समय कहूँ तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। आज हिंदी साहित्य में कृष्णदत्त पालीवाल , गिरीश पचौरी, कर्णसिह चौहान, कमलकुमार , दिविक रमेश, प्रताप सहगल , प्रेम जनमेजय , गोविंद व्यास, अशोक चक्रधर, हरीश नवल, सुरेश ऋतुपूर्ण , महेशानंद, सुरेश धींगड़ा, स्वर्गीय मनोहर लाल, प्रताप सिंह, मीरा सीकरी, शशि सहगल, आशा जोशी, आदि का जो सशक्त साहित्यिक स्वर सुनाई देता है , यह इसी काल का परिणाम है।

उस समय दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग तथा उससे संबंध विभिन्न महाविद्यालयों में डा.नगेन्द्र, विजयेंद्र स्नातक, निर्मला जैन, सावित्री सिनहा, मनु भंडारी, इंदु नाथ चौधुरी, कैलाश वाजपेयी, विश्वनाथ त्रिपाठी, गंगा प्रसाद विमल, डा. हरदयाल , स्नेहमयी चौधारी,पुष्पा राही , आदि जैसे साहित्यिक व्यक्तित्व थे। उस समय हिंदी विभाग की धरती बहुत उर्वर थी। साहित्यिक माहौल भी बहुत सक्रिय था।

(सारी सक्रियताओं का वर्णन करने के लिए एक महाकाव्य भी कम पड़ेगा।) 'धर्मयुग'का बैठे ठाले और साप्ताहिक हिन्दुस्तान का 'ताल बेताल' स्तंभ पहली पसंद बन गये। परसाई, जोशी और त्यागी की तिकड़ी का हास्य - व्यंग्य लेखन अपने रंग में रंगने लगा। उन दिनों टाईम्स की फिल्मी पत्रिका ' माधुरी' में मेरे व्यंग्य यदा कदा प्रकाशित होने लगे। उन दिनों कैलाश वाजपेयी के प्रभाव में मैंने आधुनिक कवितायें लिखीं तो एम.ए. में प्रसाद स्पेशल होने के कारण छायावादी प्रभाव की कविताएँ भी लिखीं। नरेन्द्र कोहली के गद्य - व्यक्तित्व ने मुझे आकर्षित किया और उन्होंने जो आत्मीय - समय दिया उसने मुझे उनके बहुत करीब भी किया।

मैं यह मानता हूं कि रचनाकार की प्रकृति , जीवन के प्रति उसका दृष्टिकोण तथा उसकी संवेदनशीलता का स्तर उसके लेखकीय व्यक्तित्व को तय करते हैं। मेरे माता - पिता ने हम तीनों भाईयों को आरम्भ से अनुचित को न सहने, सत्य पर दृढ़ रहने , सात्विक क्रोध को अभिव्यक्त करने तथा विषम परिस्थितियों में भी किसी के सामने हाथ न पसारने के जो संस्कार दिये और संयोग से अपने लेखन के शैशव में वरिष्ठ रचनाकारों से जो साहित्यिक संस्कार मिले, उन्हीं कारणों से मेरा व्यंग्यकार व्यक्तित्व बना। उस समय धर्मयुग और साप्ताहिक हिन्दुस्तान में प्रकाशित हरिशंकर परसाई, शरद जोशी , श्री लाल शुक्ल और रवीन्द्रनाथ त्यागी के लेखन को पढ़ना बहुत अच्छा लगता था तथा उनको ढूंढ़कर पढ़ने का क्रम आरम्भ हो गया। हरिशंकर परसाई के लेखन से मैं बहुत प्रभावित हुआ और उनकी व्यंग्य सम्बंन्धी मान्यताओं से लगभग सहमत। परसाई में विसंगतियों को लक्षितकर उनकी दृष्टि सम्पन्न विश्लेषणात्मक, रचनात्मक अभिव्यक्ति ने मेरे व्यंग्य लेखन को और गति दी। वैसे तो अनेक पत्र पत्रिकाओं में मेरी रचनाएँ प्रकाशित हुई पर धर्मयुग में प्रकाशित 'समीक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन' व्यंग्य को मैं अपने व्यंग्य लेखन का शुरुआती व्यंग्य कह सकता हूँ। इसके साथ मेरे 1978 में प्रकाशित पहले व्यंग्य संकलन 'राजधानी में गँवार' ने हिंदी - व्यंग्य सहित्य में मुझे प्रवेश दिलवाया।

सुधा ढींगरा: व्यंग्य को आप एक गंभीर विधा मानते हैं तो आप सबसे पहले यह बताइये कि गम्भीरता का स्वरूप क्या है? आपके अनुसार आज व्यंग्य का क्या स्वरूप है?

प्रेम जनमेजय: व्यंग्य की शुरुआत व्यंग्य को एक सार्थक हथियार के दिशापूर्ण आक्रमण रूप में हुई। स्वतंत्रता के पश्चात अनेक ऐसी राजनैतिक , सामाजिक , आर्थिक, धार्मिक आदि विसंगतियाँ थीं उनके कारण सजग साहित्यकार के विचार तंतुओं पर दबाव पड़ा। एक पीड़ा ने उसके अंदर जन्म लिया। देश के प्रति उसकी निष्ठा ने उसको विवश किया कि वह इन विसंगतियों के विरुद्ध अपने आक्रोश को अभिव्यक्त करे। व्यंग्य करना व्यंग्कार की आवश्यकता बन गया। ' सदाचार का तावीज़' की कैफियत में हरिशंकर परसाई ने लिखा, "इतने व्यापक सामाजिक जीवन में इतनी विसंगतियाँ हैं । इसे देखकर बीवी की मूर्खता का ब्यान करना संकीर्णता है। " चारों ओर विस्तृत विसंगतियों के कारण व्यंग्यकार का व्यंग्य लेखन विवशता बन गया था। आज भी अनेक लोगों के लिए व्यंग्य लेखन अकथित हास्य व्यंग्य लेखन, भी विवशता ही है, हुजूर क्या करें हास्य व्यंग्य लेखन बिकता

जो है, हुजूर क्या करें अखबार के संपादक कालम लिखने की फरमाईश लेकर पहुंच जाते हैं, हुजूर क्या करें । प्रकाशक भी हास्य व्यंग्य की किताब बिना लिए दिये छाप देता है।अब कोई कविता की पुस्तक ऐसे छपवा कर दिखाइए। ऐसे कई हुजूर, स्वयं को परसाई, जोशी, श्री लाल शुक्ल और त्यागी की कार्बन कापी माने, गर्विणी नायिका - से इठलाए हास्य - व्यंग्य के प्रांगण को सुशोभित कर रहे हैं।

व्यंग्य मूलत: सुशिक्षित मस्तिष्क के प्रयोजन की विधा है। महाज्ञानी मुझ अज्ञानी के इस वक्तव्य से यह अर्थ न लें कि व्यंग्य लिखने या समझने के लिये हिन्दी में एम. ए.पीएच. डी. करना आवश्यक है इस कारण विश्वविद्यालय के लिए कदम - कदम बढ़ा कर व्यंग्य के गीत गाने लगें। कबीर ने न तो मसि कागज छुआ और न कलम ही हाथ में गहि और ऐसे भी महानुभाव हैं, जिन्होंने मसि कागज छुआ और कलम गहि पर व्यंग्य की समझ उनसे कोसों दूर ही रही। (ऐसे ज्ञानियों से गाँव की गंवारन बेहतर जो बातों बातों में कब गहरा कटाक्ष कर जाती है पता ही नहीं चलता)। इसके प्रयोग में बहुत सावधानी की आवश्यकता है। इसका लक्ष्य मात्र विसंगतियों का उद्घाटन करना ही नहीं है अपितु उस पर प्रहार करना है। यहाँ सवाल उठता है कि इस प्रहार की प्रकृति क्या हो। व्यंग्य अगर हथियार है तो इसके प्रयोग में सावधानी की आवश्यकता भी है। तलवार को लक्ष्यहीन हाथ में पकड़कर घुमाने से किसी का भी गला कटकर अराजक स्थिति पैदा कर सकता है तथा स्वयं की हत्या का कारण भी बन सकता है। आज हिंदी व्यंग्य में इस तरह का अराजक माहौल पनप रहा है। इससे व्यंग्य अपने लक्ष्य से भटक रहा है । जिस व्यंग्य को नैतिक तथा सामाजिक यथार्थ की गहराई से जुड़कर , पाठक को सही सामाजिक परिवर्तन की ओर अग्रसर करना चाहिए, वही सस्ती लोकप्रियता के चक्कर में सतह पर ही घूम रहा है। व्यंग्य एक अराजक स्थिति में है । व्यंग्य की बढ़ती लोकप्रियता ने इसे बहुत हानि पहुंचाई, विशेषकर अखबारों में प्रकाशित होने वाले स्तम्भों ने नई पीढ़ी को बहुत दिगभ्रमित किया है। आज सात आठ सौ शब्दों की सीमा में लिखी जाने वाली अखबारी टिप्पणियों को व्यंग्य रचना मानने का आग्रह किया जाता है। क्षेत्रीय अखबारों में स्तम्भ लिखने वाले नए रचनाकार अपनी कमीज का कालर उठाए ,व्यंग्यकार का तमगा लगाए घूमते हैं तथा आग्रह करते हैं कि उनकी अखबारी टिप्पणियाँ के कारण उन्हें व्यंग्यकारों की जमात में शामिल कर ही लिया जाए। स्वयं को व्यंग्यकारों की जमात में जल्द से जल्द शामिल करवाने की लालसा तथा अखबारी कालम हथियाने की जुगाड़ दिशाहीन व्यंग्य को जन्म दे रही है।

व्यंग्य जहाँ एक ओर लोकप्रिय हुआ है वहीं उसके खतरे भी बढ़े हैं। अखबारों के इन स्तम्भों के कारण विषय भी सीमित हो गये हैं। ले देकर सामायिक राजनीति ही व्यंग्य का लक्ष्य रह गयी है। सामायिक विषयों पर आधारित होने के कारण इन रचनाओं का प्रभाव भी क्षणिक होता है। ऐसी रचनाएँ लगभग उसी दिन के अखबार के साथ मर जाती हैं। तथाकथित युवा हास्य व्यंग्य लेखक बिना किसी वैचारिक दृष्टि के व्यंग्य की तलवार का प्रयोग कर रहे हैं। राजनेताओं पर - व्यंग्यात्मक टिप्पणी को वह व्यंग्य रचना मनवाने का बाल हठ कर रहे हैं। किसी रचना के लिए जिस वैचारिक चिंतन की आवश्यकता होती है वह उनकी रचनाओं में से सिरे से गायब है। स्तम्भ लेखन ' कुकर्म 'नहीं है पर यदि उसके साथ लेखकीय दृष्टि न हो तो वह सुकर्म भी नहीं रहता।

सुधा ढींगरा : आपकी साहित्यिक यात्रा कैसी रही? प्रवासी साहित्य आपकी नज़र में।

प्रेम जनमेजय : यात्रा एक निरंतरता का नाम है। मेरे हिसाब से जो समाप्त हो जाए वो यात्रा नहीं होती है। यात्रा में गति होती है । और यदि अभी भी आप यात्रा पर हैं तो कहीं न कहीं वो इस बात का संकेत है कि यात्रा आपको पसंद है और वो अच्छी है। मैं अपनी साहित्यिक यात्रा से बहुत संतुष्ट हूं। इस संतोष में साहित्यिक उपलब्धियों की ओर संकेत नहीं कर रहा हूं अपितु उस लेखकीय - जीवन की ओर आपका ध्यान आकर्षित कर रहा हूं जो साहित्य के कारण मुझे मिला। यदि मैं साहित्य की ओर उन्मुख नहीं होता तो क्या मुझे स्वदेश में - हरिशंकर परसाई , रवीन्द्र नाथ त्यागी, श्रीलाल शुक्ल , कमलेश्वर , नरेन्द्र कोहली , कैलाश वाजपेयी , रामदरश मिश्र , महीप सिंह ,निर्मला जैन, नित्यानंद तिवारी , कन्हैयालाल नन्दन, शेरजंग गर्ग, श्रीकृष्ण, शंकर पुणतांबेकर, , रमेश उपाध्याय, जैसे शुभचिन्तक एवं दिविक रमेश, हरीश नवल, ज्ञान चतुर्वेदी, अशोक चक्रधर, गोविंद व्यास , प्रताप सहगल, सुधीश पचौरी, विष्णु नागर, , अनिल जोशी, नरेश शाँडिल्य एवं आदि (क्योंकि सूची बहुत लम्बी है) मिलते? इसी प्रकार विदेश में (प्रो. हरिशंकर आदेश, तेजेन्द्र शर्मा, पद्मेशगुप्ता, सत्येद्र श्रीवास्तव , ऊषा राजे सक्सेना , महेन्द्र वर्मा , गौतम सचदेव, , राकेश दुबे, सिल्विया मूदी, श्याम त्रिपाठी, दिव्या माथुर , सुमन कुमार घई , पूर्णिमा वर्मन , सुरेश चन्द्र शुक्ल और आप - सुधा ओम ढींगरा आदि (पुन: आदि क्योंकि इस बार भी सूची बहुत लम्बी है) मिलते? अब इतने अच्छे लोगों की लम्बी सूची है तो आप समझ सकती हैं कि मेरी साहित्यिक यात्रा कैसी रही।

साहित्य का आभारी हूँ कि उसने मुझे ऐसे आत्मीय दिये , जीवन के प्रति सकारात्मक सोच एवं दृष्टिकोण दिया, मानव - मूल्यों के प्रति सजग किया , अभाव ग्रस्त के प्रति करुणा का भाव भरा , एक व्यंग्यकार के रूप में सामाजिक - सफाई का उपकरण बनाया तथा मानवीय जीवन और समाज को रचनात्मक स्वरूप देने की प्रक्रिया में मैं भी एक बूँद बन सकूँ इसका सुअवसर दिया।

संतोंका कहना है कि पहला प्यार , पहला भ्रष्टाचार, पहली रचना, पहला पति - पत्नी , अर्थात जो भी पहला हो वह सदा याद रहता है । सन् 1999 से के आरम्भ में मेरे जीवन में बहुत कुछ पहला - पहला घट गया। यह पहला अवसर था कि मैंने हज़ारों किलोमीटर की हवाई यात्रा की और पहली बार त्रिनिडाड पहुंच गया। यह पहला अवसर था कि मैं स्वदेश , स्वजन , स्वपत्नी ,स्वमित्रों आदि 'स्वों' से दूर एक लम्बे अंतराल के लिए भीड़ में भी अकेला रहने को विवश हुआ। ऐसी ' पहली' उर्वर भूमि उपस्थित हो तो त्रिनिडाड क्या किसी भी देश से पहली नज़र में प्यार होना स्वाभाविक ही है । प्रथम - प्रेम दृष्टि में ऐसी धुंध उत्पन्न करता है कि दूर दृष्टि धुंधला जाती है और सावन के अंधे - सा व्यक्ति सब कुछ हरा ही देखता है। भारत से बाहर निकलते ही मन हिंदी और हिन्दुस्तान के लिए भावुक हो जाता है। जितना आप किसी अपनी चीज से दूर जाते हैं उतना ही वह आपके पास हो जाती है। विदेश में कोई भारतीय चेहरा दिखाई दे तो मन उसे लपककर पकड़ना चाहता है और यदि ' एतराज' न हो तो गले भी लगाना चाहता है।

लंदन , अमेरिका , कुरासाव, कैनेडा, आदि में मैंने वहां के समाज को देखा परखा। इन विदेश यात्राओं का एक लाभ यह हुआ कि मन से विदेश और विदेशी का भूत भाग गया, एक हीन भावना से छुटकारा मिला। इसके साथ ही प्रवासी साहित्य को पढ़ने - समझने और प्रवासी - साहित्यकारों की परिस्थितियों को जानने का अवसर मिला।

त्रिनिडाड एवं टुबैगो वैसे तो 50 प्रतिशत भारतीय मूल के लोगों का देश है पर हिंदी - साहित्य के नाम पर वहां रेगिस्तान बसता है। एक अजीब सा खालीपन है। वहाँ प्रो. आदेश की उपस्थिति ने एक सकून दिया और मैंने प्रवासी साहित्य को जानना आरम्भ किया।

प्रवासी साहित्य और साहित्यकारों के संबंध में मेरे नकारात्मक और सकारात्मक दोनों विचार हैं। प्रवासी साहित्यकार जब प्रवास में अपने अकेलेपन और विपरीत परिस्थितियों को भुनाने लगते हैं अपने लेखन के लिए साहित्यिक आरक्षण की मांग करते हैं। तो मुझे खराब लगता है। कोई रचना अपने अच्छे साहित्यिक गुणों के कारण अच्छी हो सकती है , इसलिए नहीं कि उसे विपरीत परिस्थितियों में लिखा गया और उसके लिए अनुदान - स्वरूप उसे अच्छा कहा जाए। विदेश के प्रति आप हमारी गुलाम मानसिकता को जानती ही हैं - गोरी चमड़ी और विदेशी वस्तुएँ हमारे यहाँ श्रेष्ठता की गारंटी मानी गई हैं। ऐसी श्रेष्ठता की गारंटी ही 'कुछ' साहित्य - सेवी अपने प्रवासी होने की चाहते हैं।

मैंने प्रवास में रहकर अनुभव किया है कि वहाँ की मानसिकता, विपरीत परिस्थितियों आदि को हम भारत में रहकर अनुभूत नहीं कर सकते हैं। वहां के अनुभव का आप 'भोगा हआ यथार्थ' कह सकती हैं पर भोगे हुये यथार्थ का तथ्यात्मक चित्रण तो साहित्य नहीं हो सकता, अखबार की खबर चाहे हो जाए। हाँ इसकी रचनात्मक अभिव्यक्ति एक नए अनुभव जगत को हमारे सामने लाती है।

इस अनुभव जगत को सामने लाने में अनेक प्रवासी साहित्यकारों ने अभूतपूर्व योगदान दिया है तथा हिंदी चेतना,अभिव्यक्ति, अनुभूति, साहित्य कुँज, बोले जी डाट काम, पुरवाई जैसी पत्रिकाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । अनेक संस्थाएँ सक्रिय हैं जो इस दिशा में काम कर रही हैं। सकारात्मतक दृष्टिकोण तो यह कहता है कि हरएक को अपने अनुसार काम करने का अधिकार है और समय सबसे बड़ी कसौटी है जो अच्छे बुरे का निर्णय कर ही देगा।

फ़णिश्वरनाथ रेणु

का जन्म 1921 मार्च की 4 तारीख को बिहार के पुर्णियाज़िले में हुआ था।इनकी शिक्षा अटरिया और फारबिसंगज में हुई। काशी विश्वविद्यालय से उन्होंने आई ए ि कया। उसके बाद स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लेते रहे। 11 अप्रैल 1977 में इनका देहावसान हो गया। इस छोटी सी आयु में ही इनको कई सम्मान मिले जिनमें भारत सरकार से मिला पद्यमश्री विशेष उल्लेखनीय है। हिन्दी साहित्य में फ़णिश्वरनाथ रेणु का नाम उपन्यासकारों की श्रेणी में प्रेमचंद के बाद के युग का वह चमकता हुआ सितारा है, जिसे देखकर अनायास ही साहित्य की उस विधा की याद आ जाती है , जिसे हमें आंचलिक उपन्यास के नाम से जानते हैं। वैसे तो रेणु जी ने कई उपन्यास लिखे लेकिन मैला, आँचल, परती परी कथा, दीर्घतापा, जुलूस , कितने चौराहे, आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। " मैला - आँचल " में बिहार के पूर्णिमाज़िले के ग्रामीण जीवन का जो चित्रण रेणु ने किया है वह अविस्मरणीय है। मैथली के मधुर ग्राम्य संगीत एक ओर जहाँ आपका मन मोहते हैं, वहीं जाति प्रथा की कलुष गाथा मन को विषात्त करती है। कहानियों में एक नाम जो भूलता नहीं वह है "मारे गये गुलफाम"। इस पर बनी राजकपूर की मशहूर फिल्म " तीसरी कसम" को कौन भूल सकता है। 'विकपिडिया से ' उनकी दूसरी प्रसिद्ध कहानियाँ हैं - लाल पान की बेगम, ठेस, तबे ,एकला चलो रे लक्षमी। कहानी संग्रह से ठुमरी,अग्निखोर , अच्छे आदमी, एक श्रावणी , दुपहरी आदि काफी मशहूर हुई। सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन 'अज्ञेय' जी से इनकी मित्रता प्रसिद्ध है। जब भी आंचलिक उपन्यासों की बात चलेगी " रेणु" जी बरबस याद आयेंगे।

"यहाँ इन्हीं महान फणिश्वर नाथ रेणु जी से रेणु भटनागर जी की मुलाकात प्रस्तुत है। "

श्याम त्रिपाठी

रेणु की रेणु से मुलाकात

पलट कर जब देखती हूँ तो इतिहास सा ही लगता है:- यादों के झरोखे से मरकत मणि सी झाँकती, देदीप्यमान वह घटना स्वत: एक हास्य मिश्रित मुस्कान बिखेर जाती है अधरों पर। कुछ भी लिखने से पहले यह लिखना अति आवश्यक है कि यह सब कुछ लालू जी (लालू प्रसाद यादव) के गाँव (पटना, बिहार) में तकरीबन पैंतीस साल पहले घटित हुआ था। जो बिहारी सभ्यता को जानते हैं वे यह भी अवश्य जानते होंगे कि आज से पैंतीस साल पहले बिहार में पुत्रियों/लड़कियों को कितना पोहा-पोहा (सम्हाल-2) कर रक्खा जाता था। घर के बाहर की धूप/हवा सबसे बचा कर! मुझे अब भी याद है पहली बार कॉलेज (हजारीबाग के कोलम्बस कॉलेज, जो को-एजुकेशन था) जाते समय, मेरे बड़े भाई जो सम्प्रति ऑस्ट्रेलिया में हैं; बाकायदा मेरे साथ गये थे कॉलेज पहुँचाने और वहाँ से लाने भी। यह सब विस्तार से जान कर ही "घटित घटना" को ठीक से समझा जा सकता है। हाँ.. तो वापिस इतिहास के पन्नो को पलटें -

पटना विश्वविद्यालय से एम. ए. हिन्दी में करते समय एक बार नहीं, न जाने कितनी बार मैला- आँचल के लेखक श्री फणिश्वरनाथ रेणु को पढ़ा था, और परीक्षा में भी पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या भी करती रही थी। बार- बार रेणु जी की जीवनी पढ़ते समय यह भी पढ़ा था कि डाक बंगला रोड पर स्थित भारत कॉफी हाऊस साहित्यकारों की गोष्ठी के लिये प्रसिद्ध था। रेणु जी के लिये भी साहित्य चर्चा का यह सहज/सामान्य स्थल हुआ करता था। मैंने पढ़ाई पूरी की और विवाह अगला कदम तो होता ही है। इस तरह मैं दिल्ली पहुँच गयी। मेरी शादी के दो साल बाद, मेरी छोटी बहिन की, जो आज गंगा देवी कॉलेज, पटना में हिन्दी की विभागाध्यक्ष है, शादी हुई। जिसमें शरीक होने मैं पटना आई थी। यद्यपि बहनोई छोटे थे लेकिन छोटे हुए तो क्या। बहनोई तो बहनोई होते हैं। तुलसी के पत्ते में बड़ा क्या और छोटा क्या! हर दिन उन्हें परेशान करने की, उनकी खिचाई करने के नये नये तरीके ढूँढे जाने लगे।

वीणा (मेरी छोटी बहन) द्विरागमन के बाद अपने पति, हमारे नये-नये बहनोई के साथ पीहर आई थी। शाम का समय था, सुबोध जी (मेरे बहनोई) ने बतालाया कि शाम को उनके मित्रों ने पति-पत्नी को खाने पर बुलाया है।

हमें नहीं बुलाया?" बिचारे नये-नये दामाद कहें भी तो क्या कहें? "जी...जी, नहीं-नहीं आप भी चलिये।" हम दोनों तो जैसे ताक में ही बैठे थे, कैसे उन्हें फिर से बेवकूफ बनाया जो। बस फिर क्या था- आगे आगे नवदम्पति का रिक्शा चला और पीछे-पीछे हम दोनों का। वे बिचारे हत्बुद्धि से रह-रहकर पलट कर स्थिति का अन्दाजा करते जा रहे थे कि कब पीछा करना बन्द हो। मगर वे सालियाँ ही क्या जो मैदान छोड़ दें!

इधर हम दोनों बहनें खुद अपनी जाल में आ फँसी थीं।

..अब क्या किया जाये जो साँप भी मर जाये और लाठी भी ना टूटे। इस समय हमारा रिक्शा "भारत कॉफी हाउस" के करीब पहुँच रहा था और उन दोनों का डाकबंगला रोड से फ्रेजर रोड पर मुड़ चुका था। मैंने झटपट रिक्शे से तकरीबन कूदते हुए मन्जू से कहा- "जल्दी उतरो, इसके पहले कि वे लोग हमें देख लें" और बिना आगा पीछा सोचे बिचारे हम सामने की इमारत में, जो इत्तेफाक से भारत "कॉफी हाऊस" था, घुस गये। शायद तब तक की जिंदगी में वह पहला मौका था कि हम दो लड़कियाँ, बिना किसी पुरुष सदस्य के, होटल या कैफे में पहुँचे थे। मन्जू तो निश्चिंत थी- दीदी साथ थीं, पर अपने तो छक्के छूट रहे थे । सबसे पहले तो यह टटोला कि पर्स में चाय/कॉफी के लायक पैसे भी हैं या नहीं, फिर दूसरा प्रश्न था ठसाठस भरे इस स्थल में बैठा कहाँ जाये? खैर; एक मेज पर एक अधेड़ से सज्जन को देख कुछ हिम्मत बढ़ी,सोचा-बुजुर्ग की मेज पर बैठना अपेक्षाकृत सुरक्षित रहेगा। पूछकर हम बैठ तो गये मगर घबराहट से बुरा हाल था। उस जमाने में दो अकेली जवान लड़कियों को अगर अकेले बैठे देख लिया जाये तो बातें बनते देर नहीं लगती थी।

अब औपचारिकतावश जो सज्जन बैठे थे, उनसे अभिवादन का आदान-प्रदान हुआ। कुछेक बातों के बाद वे कहने लगे-आपकी हिन्दी तो बहुत अच्छी है, क्या साहित्यरचना के क्षेत्र में भी कुछ करती हैं? उनका आशय था कहीं कुछ छपा भी है? मैंने बौखलाहट में कहा- "जी- इस भाई-भतीजेवाद के युग में "सधन्यवाद वापिस" के अलावा कुछ भी हाथ नहीं लगता!"

उन्होंने आग्रह किया- अगर याद हो कुछ; तो सुनायें। आज सोचती हूँ तो अविश्वासनीय सा ही लगता है- न जाने कैसे मैंने धडाधड़ तीन-चार कवितायें सुना दीं।

व्यवहार ही कहूँगी। बहरहाल सुनने के बाद उन्होंने एक पता दिया और कहा- "अगर चाहें तो इस पते पर कुछ भेजिए शायद कोई बात बन जाये।" मैंने पता ले तो लिया मगर व्यंग्यमिश्रित मुस्कान चेहरे पर न आने देने के लिये प्रयास करना पड़ा। क्यों नहीं, धर्मयुग के पब्लिशर तो आप ही हैं न!

अब तक हमलोग कुछ सहज हो चले थे - नाम पूछने पर जब मैंने अपना नाम बताया तो बड़े तपाक से बोले- "तब तो हम 'मीता' हुए"। जो पहला विचार मन में आया वह था - 'जान न पहचान, खाला बीबी सलाम'; किसके "मीता काहे के मीता?" फिर उन्होंने पूछा- आपने "तीसरी कसम" फिल्म देखी है? मुझे याद नहीं मैंने क्या जवाब दिया, शायद हाँ ही कहा था।

वे थोड़ी देर तक उस फिल्म के बारे में बताते रहे। उस फिल्म के गाने बहुत मशहूर हुए थे, अब भी हैं "सजन रे झूठ मत बोलो".. आदि-आदि। हम श्रोता बने रहे। हमने जब पैसे देने की कोशिश की तो यह कहकर रोक दिया कि आप हमारी मेहमान हैं, आप भला पैसे कैसे देंगी? उनका आशय था कि मैं दिल्ली से आने के कारण पटनावासियों के लिए 'मेहमान' तो हो ही गई न! हमदोनों को घर भागने की ऐसी जल्दी थी कि फटाफट धन्यवाद/नमस्कार आदि की औपचारिकता पूरी की और छूटे!

रिक्शे पर बैठते-बैठते मन्जू ने कहा- "रेणु जी जितने प्रसिद्ध हैं, उतने ही विनम्र भी हैं न!" मैं चौंकी! "कौन रेणु?" आश्चर्यमिश्रित हैरानी से वह बोली- "फणीश्वर नाथ जी 'रेणु' और कौन! उनसे इतनी बातें करके तो हम आ रहे हैं।" मैं कह नहीं सकती मुझे कैसा लगा! हर्ष ज्यादा या विषाद! इतने सुनहरे अवसर को करीब-करीब खो देने का सा एहसास ! कितनी मूर्खता हुई! भारत कॉफी हाउस।.. रेणु जी की वहाँ नियमित गोष्ठी।..

मैला आँचल।...तीसरी कसम।....सब जैसे तीव्र गति से मेरे सामने से भाग रहे थे और मैं हतबुद्धि सी मुँह बाए उन्हें बस घूर रही थी। बाद में मैंने अपनी कवितायें उनके बताये पते पर भेजीं और भूल भी गई इस घटना को। दिल्ली लौटकर अपने सामान्य जीवन में व्यस्त हो गई। एक दिन इसी बीच "प्रस्थान" नामक पत्रिका डाक में आई, जिसमें 'पहली बार' मेरी तीन कविताएँ छपीं थीं। "रिश्ते", "भीष्म का अवसाद" और "एक बार फिर" (सम्पादक -रामबचन राय)

असली कलाकार

डा. गौतम सचदेव (यू. के.)

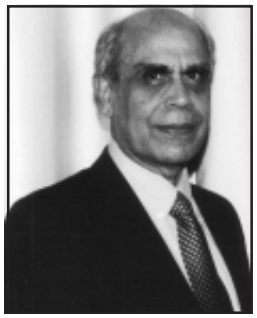

चाँद का पिता काशी बहुत अच्छी मूर्त्तियाँ बनाता था , लेकिन उसके ग्राहक बहुत कम थे। छोटा सा क़स्बा था, जहाँ स्थानीय बिक्री तो छठे - छमाही ही होती थी और वह भी एक - दो मूर्त्तियों की। लोग दाम भी बहुत कम देते थे। उधर , राजधानी के जिस मूर्त्ति व्यापारी से काशी को मूर्तियों के ज़्यादातर आर्डर मिलते थे, वह मूर्त्ति का तीन - चौथाई मूल्य अपने पास रखता था और केवल चौथाई ही काशी को देता था। काशी को भुगतान करने में भी वह महीनों की देरी लगाता था।

चाँद कहता था - बाबा , या तो मूर्त्तियाँ बनाना छोड़ दो, या राजधानी चलकर अपनी दुकान खोलो।

काशी में न तो राजधानी जाकर कारोबार करने का साहस था और न ही पूँजी, इस लिए अच्छा कारीगर होने के बावजूद वह बड़ी मुश्किल से घर का खर्चा चला पाता था।

ऐसी बात नहीं है कि मूर्त्तियों की बिल्कुल माँग नहीं थी। लोगों में अब पहले से कई गुणा ज़्यादा श्रद्धा उमड़ी हुई थी और केवल अमीर ही नहीं, मध्य वर्ग के बहुत - से लोग भी अपने घरों में मन्दिर बनाने और इष्ट देवों की मूर्त्तियाँ लगाने लगे थे, लेकिन शहरों में जिन मूर्त्तियों की माँग सबसे अधिक थी , वे थीं नेताओं की मूर्त्तियाँ। आये दिन नये - नये नेता पैदा हो जाते थे, जो सत्ताधारी बनें या न बनें, जगह - जगह अपनी मूर्त्तियाँ अवश्य लगवाते थे।

चाँद अपने दोस्तों के साथ कई बार राजधानी हो आया था और यह बात समझता था ।

उसे यह भी मालूम था कि जब चुनाव होते हैं, तो नेताओं के चित्रों और मूर्त्तियों की माँग बेहद बढ़ जाती है। उसने अपने दोस्त कैलाश के साथ राजधानी में आर्ट एम्पोरियम खोलने का फ़ैसला किया।

जल्दी ही चाँद और कैलाश का आर्ट एम्पोरियम खूब चलने लगा। पहले दोनों मित्र नेताओं के पोस्टर और मूर्त्तियाँ बनवाकर बेचते थे, फिर जल्दी ही भीड़ इकट्ठी करने वाले , नारे लगाने वाले , बैंड बजाने वाले , मारपीट करने - करानेवाले और गुंडे भी सप्लाई करने लगे। ताज़ा खबर यह है कि चाँद ने राजधानी के एक प्रतिष्ठित क्षेत्र में तीन मंज़िला कोठी बनवाई है, जिसका गृह- प्रवेशोत्सव में स्वयं मुख्य मन्त्री भी पधारे थे। अब वह कहता है कि मैं एक मन्त्री सम्पर्क कम्पनी खोल रहा हूँ, जो लोगों के सरकार में अटके किसी भी काम को चुटकियों में करवा दिया करेगी।

झड़ते हुए पत्ते कि उजड़ते हुये पत्ते

डा. गौतम सचदेव (यू. के.)

झड़ते हुए पत्ते कि उजड़ते हुये पत्ते
बेघर हैं जुर्म उखड़ते हुये पत्ते

किस ग़म से गये सूख सिकुड़ते हुये पत्ते
रिश्तों को चले भूल बिछुड़ते हुये पत्ते

मौसम की लगी चोट कि अपनों के सताये
मिट्टी में मिले खून चुपड़ते हुये पत्ते

वादे हैं न दिल और न क़समें हैं किसी की
क्यों फिर भी गये टूट उखड़ते हुये पत्ते

मरने पे न मिल पाई कभी क़ब्र या अरथी
घूरे पे बिना कफ़न अकड़ते हुये पत्ते

बाँहों में न आकाश समेटा है किसी ने
कंगाल रहे चाँद पकड़ते हुये पत्ते

मर्मर ही करें पर न कहें और न कुचलो
क़दमों में गिरे नाक रगड़ते हुये पत्ते

Beacon Signs 1985 Inc.

7040 Torbram Rd. Unit # 4, Mississauga, ONT. L4T 3Z4

Specializing In:

Illuminated Signs awning & pylons

Channel & Neon letters

Banners

Architectural signs

Vehical graphics

Engraving

Silk screen

Silk screen

Design Services

Precision CNC cutout plastic, wood & metal letters & logos

Large format full Colour imaging System

SALES – SERVICE - RENTALS

Manjit Dubey

दुबे परिवार की ओर से हिन्दी चेतना को बहुत बहुत शुभकामनायें

Tel: (905) 678-2859 **Fax: (905) 678-1271**

E-mail: beaconsigns@bellnet.ca

लाश (कहानी)

सुमन कुमार घई (कनाडा)

उसकी लाश सड़क के किनारे फुटपाथ पर पड़ी मिली थी। उस लाश को पहले इन्हीं गलियों में रहने वाले लोगों ने देखा था। इस इलाके के अधिकतर निवासी भारतीय या पाकिस्तानी हैं। अपने देशों से दूर रहते रहते स्वदेश की राजनीतियों का रंग कब का पुराने कपड़े सा हो गया है - फीका। मनों में देशों की सीमा रेखा कब की मिट चुकी है। अब इन गलियों में बस बिरादरी-भाईचारा है तो भाषा का दैनिक रहन-सहन का। एक पुराने गाँव जैसा माहौल है इन गलियों में। सभी एक दूसरे को जानते हैं। युवा पीढ़ी के काम पर चले जाने के बाद पुरानी पीढ़ी के लोग रह जाते हैं तीसरी पीढ़ी की देख-भाल के लिए - तब तो एक दूसरे के घर जाने से पहले फोन करने की आवश्यकता भी समाप्त हो जाती है। तीनों पीढ़ियाँ अपने-अपने वृत्तों में जी रही हैं, सभी खुश हैं। बड़े-बूढ़ों को अकेलापन नहीं सताता, युवा पीढ़ी को अपने बच्चों की देख-भाल की चिन्ता नहीं है और सबसे अधिक खुश हैं बच्चे। जिस बात के लिए माँ-बाप मना करते हैं, वह दादा-दादी या नाना-नानी से मनवाने में कोई दिक्कत नहीं। एक संतुलन है सबके जीवन में। दिनचर्या सभी की नियमित है। सबसे पहले जागने वाली पहली पीढ़ी है। पर वह घर में रह कर कोई सुबह-सुबह खटर-पटर नहीं करते। अपने बेटे, बेटियों, बहुओं, दामादों के जागने से पहले ही सुबह सैर के लिए निकल जाते हैं। ठीक ही है यह, नहीं तो माँ-बाप नाश्ते के लिए टोक ही देते हैं बच्चों को, जोकि युवा पीढ़ी को पसन्द नहीं और यह संतुलन बिगड़ने लगता है। जब बड़ी पीढ़ी के लोग सैर से लौटते हैं तो युवा लोग काम पर जाने के लिए निकल रहे होते हैं। फिर दिनचर्या का दूसरा सीन इस मंच पर खेला जाता है। बच्चों को जगाकर स्कूल के लिए तैयार करना और उन्हें स्कूल छोड़ना और वापिस लाना दादा-दादी, नाना-नानी का काम है। सभी अपना - अपना दायित्व संभाले हुए हैं - संतुलन बना हुआ है।

उस दिन कुछ भी अटपटा नहीं था। रोज की तरह पहला जोड़ा अपने घर से निकला और साथ वाले घर के आगे जाकर खड़ा हो गया जब तक दूसरा जोड़ा बाहर नहीं आ गया। घंटी बजाने की अनुमति नहीं है सुबह-सुबह। रोज का यही क्रम है। चुपचाप गली के सिरे तक पहुँचते पहुँचते सात-आठ जोड़े हो जाते हैं और तब तक औरतें अलग और आदमी अलग हो जाते हैं। औरतें अक्सर आदमियों से पंद्रह-बीस कदम आगे चलती हैं। पहला कारण सुबह-सुबह जो भी दुख-दर्द वो आपस में बाँटती हैं उसकी भनक वह आदमियों को नहीं होने देतीं। संतुलन का सवाल है। दूसरा इस पीढ़ी के आदमी हर बात पर औरतों को टोकते ही रहते हैं।

मुँह खोला नहीं या उसके मुँह खोलने से पहले ही पति की गर्दन नकारात्मक दिशा में डोलने लगती है। यह दूरी ही सुरक्षा या यूँ कहिए स्वतंत्रता कवच है। उसकी लाश को भी पहले औरतों ने ही देखा था। किसी ने कहा-

"नी, जरा देख ता, लगता है कोई धुत्त होकर फुटपाथ पर लेटा है।"

"अभी तो दूर है, सड़क पार कर दूसरी तरफ हो लेते हैं। सुबह-सुबह क्यों बदबू सूँघें उसकी?"

"नहीं मैं तो नहीं जाऊँगी उस पार। जरा बचकर निकल लेंगे - कौन सा ट्रैफिक है सड़क पर इस वक्त।"

तब तक औरतें उस लाश तक आ पहुँची थीं।

"अरे देख तो! यह तो कोई औरत है! एक ने हैरानी से कहा।"

"कोई आवारा होगी। लगती तो कनेडियन ही है। ब्लॉंड है। देख तो औंधी लेटी है..।" अचानक बदबू की बात भूल कर यह रोचक घटना बनती जा रही थी। सब औरतें एक घेरे में खड़ी उस औंधे लेटे शरीर को कौतुहल से देख रहीं थीं। मृत्यु का आभास किसी को भी नहीं था। अचानक औरतों को इस तरह घेरे में खड़ा देख आदमी भी चौकन्ने हो जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाने लगे। तभी एक ने लाश की पिंडली तक सरक आई जीन के नीचे से झलकती पायल को देखा।

"अरे, यह तो कोई देसी है। देख तो पायल पहने है।"

"हाय नी! देसी ब्लॉंड! जरूर ही आवारा है।"

"ऐसे ही आवारा आवारा की रट लगा रही है तू! कैसे जानती है तू कि यह आवारा है?"

"देखती नहीं तू इसके ब्लॉंड बालों को। देसी औरत और ब्लॉंड बाल!" पहली ने अपना तर्क दिया।

"तो क्या बाल रँगने से आवारा हो गयी तू भी तो मेंहदी लगा कर लालो-परी बने घूमती है।" दूसरी ने अपने मन की रड़क को निकालने का अवसर नहीं गँवाया। अचानक ही बहस लड़ाई का रंग लेने लगी थी। अच्छा हुआ कि आदमियों की टोली आ पहुँची।

"पीछे हटो! देखने तो दो क्या हो रहा है।" एक ने अधिकारपूर्वक कहा। होना क्या है - तमाशा है! देसी ब्लॉंड औंधी धुत्त होकर सड़क पर लेटी है। वह अभी तक बालों के रंग पर ही अटकी थी - चटकारे लेते हुए उसने टिप्पणी कर डाली। आदमी ने झुककर पास से देखा। एक झटके से सीधा खड़ा होकर एक कदम पीछे हट गया।

"यह तो मरी हुई है!""क्या..?" सामूहिक रूप से कई आवाजें उभरीं।"इसको सीधा करके देखें कौन है?" -

एक औरत ने सुझाव देते हुए पूछा। "पागल हुई है - पुलिस को बुलाना होगा .. अभी..।" पति ने घुड़का। "अरे रहने दो। चुपचाप निकल चलो यहाँ से। ऐसे ही पुलिस के पचड़े में पड़े तो कचहरियों के चक्कर लगेंगे और बेटे-बेटियाँ अलग से परेशान होंगे।" दूसरे ने कहा। "क्या बात करते हो! यह कोई अपना देश है कि पुलिस रिपोर्ट लिखवाने वाले को ही पीटना शुरू कर देगी।" अभी बात चल ही रही थी की शर्मा जी ने अपनी नेतागिरी संभाली और तुरन्त अपने मोबाइल से पुलिस को फोन कर दिया। पुलिस ने धन्यवाद देते हुए हिदायत दी कि किसी भी चीज को छूयें मत और पुलिस के आने तक वहीं रहें। कुछ ही मिनटों में पुलिस आ पहुँची और उनके पीछे ही एम्बुलेंस और फायर-इन्जन।

"नी अब एम्बुलेंस आकर क्या करेगी। वह बेचारी तो मरी पड़ी है।" स्पष्ट था वह विचलित हो चुकी थी।

"बहन यह अपना मुल्क थोड़े ही है कि जिन्दे पर भी एम्बुलेंस नहीं आती। यहाँ तो मरों पर भी आती है।" दूसरी ने ठण्डी साँस भरी।

पुलिस के अधिकारी ने शर्मा जी से कुछ सवाल पूछे और धन्यवाद देते हुए कहा -

"अब आप सब लोग यहाँ से जा सकते हैं। अगर आवश्यकता पड़ी तो हम आपसे फिर संपर्क करेंगे।"

अब इस भीड़ को न चाहते हुए भी वहाँ से हटना था। इस घटना ने सब को अन्दर तक हिला दिया था। रोमांचित मन इस कहानी का अंत भी देखना चाहता था। टोली ने सड़क पार की और ठीक सामने चर्च के लॉन में लगे पिकनिक टेबलों पर अड्डा जमा लिया। अब वातावरण कौतूहल से बदल कर दया और जीवन के क्षण भँगुर होने की दिशा में पलट चुका था। पुलिस के अधिकारियों को मुस्तैदी से अपना अपना काम करते देख सभी प्रशंसा करते हुए साथ ही साथ स्वदेश की पुलिस की भर्त्सना भी करते जा रहे थे। देखते ही देखते फोटो ली गईं। कुछ लोग आस पास की सड़क का बारीकी से निरीक्षण करने लगे।

पौ फटने लगी थी। सड़क पर इक्का-दुक्का कार तेजी से निकल जाती। यह शहर का बहुत ही पुराना इलाका था। लगभग तीस साल पहले भारतीय और पाकिस्तानियों ने इस इलाके में इसलिए बसना शुरू किया था कि उजड़ा-सा होने के कारण घर, दुकानें और किराये बहुत सस्ते थे। बाजार की आधे से अधिक दुकानें बन्द पड़ी थीं। टूटे हुए शो-केसों के शीशों को ठीक करने की बजाय सेलो-पेपर से ढाँप दिया जाता था। चोरी का डर तो तब होता अगर दुकान में चोरी करने लायक कुछ बचा होता। धीरे-धीरे इन्हीं देसी लोगों ने इस इलाके की शक्ल ही बदल डाली। जीवित दुकानें, जीवित बाजार, चहकते पार्क और खिलखिलाते स्कूल। किसी को बताने पर भी तीस साल पहले वाली हालत पर विश्वास नहीं होता था। अब तक यातायात की सुगमता के लिए के अधिकारी तैनात हो गया था। लाश पर एक छोटा सा टैंट तान देने के कारण अब गतिविधियाँ इतनी रोचक नहीं रहीं थीं। अब अटकलों का बाजार गरम हो चुका था। समय का ध्यान आते ही सभी को अपने घरों की जिम्मेदारियों की भी चिन्ता हो रही थी पर यहाँ से हटने को भी मन नहीं था। शर्मा जी ने कमान फिर से संभाली। कमलेश की ओर मुड़ते हुए बोले- "कमलेश बहन, किसी को तो घर लौटना होगा बच्चों को स्कूल पहुँचाने के लिए और तुम न लौटी तो जानती ही हो कि तुम्हारी बहू बखेड़ा खड़ा कर देगी। बाकियों की तो भली चलाई। यह काम तुम्हें ही करना होगा।"

कमलेश भी जानती थी की शर्मा जी कोई गलत नहीं कह रहे। सभी को एक दूसरे के घरों का सब कुछ पता था। कमलेश अनमने से उठी और अपनी गली की तरफ चल दी। पीछे से शर्मा जी ने आवाज दी -

"बहन नाश्ते के लिए न रुकना। हम सबका इन्तजाम यहीं पर कर रहे हैं। जल्दी लौटना।" लग रहा था कि शर्मा जी ने फैसला कर लिया था कि जब तक पुलिस यहाँ से नहीं जाती वह लोग भी वहीं टिकेंगे।

कमलेश लगभग भागते हुए मुहल्ले में पहुँची और एक सिरे से घरों के दरवाजे खटखटाती हुई हिदायत देती गई कि बच्चों को तैयार कर दें और आज वह ही सभी को स्कूल ले जायेगी। युवा लोग कुछ हैरान और कुछ परेशान हुए कि उनकी दिनचर्या में अचानक यह कैसा रोड़ा अटक रहा है। पर अधिक तर्क-वितर्क का समय नहीं था। काम पर भी जाने की जल्दी थी।

मुहल्ले के सभी बच्चों को लेकर कमलेश स्कूल पहुँची तो साथ के मुहल्ले से आई हुई सहेली मिल गई। कमलेश ने उसे तुरंत सुबह की घटना का बताया। लाश का हुलिया सुनते सुनते सहेली के चेहरे का रंग उड़ने लगा। कमलेश ने भी देखा और बोली -

"तुम्हारे चेहरे पर क्यों मुर्दानी छा रही है। तू क्या जानती है उसे?"

"शायद, पर यहाँ कुछ नहीं कहूँगी। किसी के बारे में पूरा जाने बिना कैसे कह दूँ? तू मुझे जल्दी से वहाँ ले चल।"

बच्चे स्कूल के अन्दर जा चुके थे। अब वहाँ पर रुक कर बतियाने का कोई तुक नहीं था। दोनों लगभग भागती हुई चर्च पहुँची। तब तक कोई जाकर कोने की कॉफी-शॉप से नाश्ते का सामान ला चुका था और सभी लोग कॉफी सुड्डुक रहे थे। मेज पर डोनट भी पड़े थे। दोनों को भागते आता देखकर सभी हैरान थे कि यह दूसरी कौन आ रही है कमलेश के साथ। पास से देखकर पहचाना तो सही पर हैरानी बढ़ती गई। दोनों की साँस फूल रही थी। किसी ने दोनों के हाथ में कॉफी के गिलास थमा दिये थे और बैठने के लिए बेंच पर जगह बना दी थी। एक बोली-

"चल कम्मो काफी पी ले।"
"काफी नहीं भागवान, कॉफी कहो।" आदत के अनुसार पति ने टोक दिया था। पर समय की गंभीरता और विस्मय में उसकी बात अनसुनी ही रही। जैसे ही कमलेश का हाँफना कुछ कम हुआ उसने बताया कि शायद उसकी सहेली कुछ जानती है लाश के बारे में। अब सभी की उत्सुकता बढ़ गई। अचानक सब कुछ व्यक्तिगत लगने लगा। सहेली ने भी देखा कि सभी की आँखें उसी पर टिकी हैं।
"कैसी जैकेट पहने है वो?" सहेली ने प्रश्न किया। एकदम कई स्वर उत्तर में उभरे। शर्मा जी ने फिर डोर संभाली और सहेली से कहने लगे-
"बहन जो पूछना है मुझ से पूछो। मैली सी शायद लाल रंग की जैकेट है।"
"और नीली जीन है पहुँचे पर कढ़ाई भी है?"
"हाँ!"
"पायल सिर्फ़ एक पैर में है?"
अब तक सबका साँस लगभग रुक चुका था।
"ठीक कहती हो।" अब शर्मा जी की आवाज में दम नहीं रहा था।
सहेली एकदम निढाल सी हो गई। स्वर गले में ही अटक रहा था। रुँधे गले से बोली-
"इसी का डर था। मर गई बेचारी। कोई सुख नहीं देखा जिन्दगी भर!"
अब लोगों की उत्सुकता पर शर्मा जी का नियन्त्रण नहीं रहा था। पर बोला कोई नहीं - बोलने की आवश्यकता ही कहाँ थी। अनपूछे सवालों से हवा भी भारी हो रही थी। उसने फिर से कहना शुरू किया -
"यह नरेन्द्र की बीवी है।"
"कौन नरेन्द्र?" शर्मा जी ने पूछा।
"वही जो हर रविवार को मन्दिर के कीर्तन में पहले ढोलकी बजाता है और बाद में बाहर खड़ा होकर इंश्योरेंस बेचता है।"
"पर उसकी बीवी तो दूसरी है, मैं तो जानती हूँ उसे, उसके बेटे को भी।" एक ने पहचानते हुए कहा।
"हाँ, पर यह पहली थी और वह बेटा भी इसी का है।"
"क्या??" कई आवाजों में हैरानी थी। कहानी एक नया मोड़ ले रही थी। सहेली ने एक लंबी साँस भरी। अपने भरे गले को संभाला और कहानी कहनी शुरू की -
"यह लोग हमारे ही गली में रहते थे। माँ-बाप जब भारत से आये तो यह गोद में थी। यहीं पर पली-बढ़ी। बहुत सख्ती की इस पर इसके माँ-बाप ने - शुरू से ही।"
"क्यों?"
"इकलौती सन्तान थी बेचारी। माँ-बाप के मन में डर था कि यहाँ के माहौल में रँगी गई तो उनसे टूट जायेंगे। इसलिए शुरू से ही काबू में रखने की ठान ली थी उन्होंने। कोई सहेली नहीं, कहीं अकेले आना-जाना नहीं। किसी हम-उम्र से बात-चीत नहीं।"
"यह तो कैद से भी बदतर हुआ!" कमलेश अपने को नहीं रोक पाई। सभी नजरों ने उसे घूरा। कहानी के प्रवाह में रुकावट किसी को भी सहन नहीं थी। उसने फिर तार पकड़ा-
"हाँ, ठीक कहती हो बहन! बेचारी को हाई-स्कूल में भी छोड़ने और लेने के लिए माँ जाती थी। बेटी बेचारी अपने साथ पढ़ने वालों के आगे रोज शर्मिन्दा होती। इस पर फब्तियाँ कसी जातीं। कह किसी से भी कुछ नहीं पाती। मेरी बेटी भी इसी की क्लास में थी। पर उससे बात करने की इजाजत नहीं थी इसे।"
"पर नरेन्द्र से इसका संबन्ध कैसे?" कहानी की गति कुछ धीमी थी। सुनने वाले आज तक जल्दी पहुँचना चाहते थे।
"नरेन्द्र इसका दूर का रिश्तेदार था।"
"क्या??" फिर से कहानी ने रोचक मोड़ ले लिया था।
"हाँ, अस्सी के पंजाब के झगड़ों के समय रफ्यूजी बनकर कैनेडा आ गया था और इन्हीं के यहाँ टिका। होनहार और बहुत ही शरीफ लड़का था। कई साल तक उसका इमिग्रेशन का केस लटका रहा। इस लड़की को बताया गया कि रिश्ते में तेरा भाई है। राखी बाँधती रही उसे।"
"हाय-हाय! फिर भाई से ही शादी कर दी!" रँगे बालों वाली ने हैरानी व्यक्त की। शर्मा जी ने उसे घूरा।
"हाँ, यही तो हुआ। लड़के का केस फेल हो गया। वापिस भेजने का नोटिस आ गया। इसके माँ-बाप को इन बरसों में नरेन्द्र में अपना सुखी बुढ़ापा दिखाई देने लगा था। जब नरेन्द्र के यहाँ रहने के सारे रास्ते बन्द हो गए तो अपनी ही बेटी से उसकी शादी कर दी। सोचा कि बेटी और जमाई दोनों ही पास रहेंगे। लड़का भारत से है, देखा-भाला है। रिश्ता भी दूर का ऐसा है कि शादी हो सकती है।"
"इस लड़की ने कुछ नहीं कहा क्या?" शर्मा जी ने टोका।
"कहा तो बहुत कुछ, पर दबा कर पाली थी माँ-बाप ने। इसकी मर्जी को बचपन से ही मार दिया था माँ-बाप ने। बस कह दिया कि इस रिश्ते में शादी हो सकती है - कोई बुराई नहीं है। पर बेटी यह नहीं समझ पा रही थी कि कल तक जो मेरा भाई था और जिसे मैं राखी-टीका कर रही थी उससे आज मेरा विवाह कैसे? यह तो पाप है - बस यही इस बेटी के मन में बैठ गया।"
"फिर? यहाँ तक कैसे पहुँची?"
"बता रही हूँ। अपराध-बोध में जीती रही बेचारी। एक ऑफिस में काम करती थी। वहाँ पर भी नहीं बता पाई

अपनी शादी के बारे में। पेट से हो गई तो वहाँ पर भी पेट के साथ-साथ सवाल भी उभरने लगे। क्या कहती किसी से? बस अपने अन्दर ही अन्दर घुटती रही। अपनी जिन्दगी अपने जीने को ही पाप समझती रही। नौकरी छोड़ दी एक दिन। बेटा भी पैदा हो गया। उसके बाद तो अपराध-बोध और भी बढ़ गया। अपने ही बेटे को पाप की निशानी मान बैठी। माँ थी पर ममता नहीं थी। जन्म तो दिया पर प्यार से चूमा तक नहीं उसे कभी। नरेन्द्र और इसके माँ-बाप इसकी हालत देखकर और दुखी थे। पर अपना किया तो पलट नहीं सकते थे। बात बस वहीं अटकी हुई थी। सभी जी रहे थे एक ही छत के नीचे। एक दूसरे से टूटे हुए। कोई संबन्ध था तो बस दोष का उस परिवार में। कोई अपने को दोष देता तो कोई दूसरे को।"

"आगे क्या हुआ?"

"होना क्या था। एक दिन अपने बेटे को डॉक्टर के पास चैक-अप के लिए ले गई तो लौटी ही नहीं। दो दिन बाद पुलिस ने ढूँढा - यँग स्ट्रीट पर दुकान के छज्जे के नीचे बैठी थी - भूखी प्यासी। बच्चा गोद में लिए। उसके बाद दिमागी हालत बिगड़ती चली गई। कई बार हुआ कि बच्चा गोद में लेकर निकल जाती। कभी झील के किनारे मिलती या कभी किसी पुल के नीचे। परिवार वाले बुरी तरह से घबरा चुके थे। डॉक्टर ने सलाह दी तो पागलखाने में भर्ती करा दिया। माँ-बाप ने चैन की साँस ली कि कम से कम बच्चा तो सुरक्षित है।"

"हाँ, यह तो ठीक किया उन्होंने।"

"पर अधिक देर ठीक रहा नहीं। यहाँ की सरकार बदली। बजट कम होने लगे अस्पतालों के। पागलखाने के जो मरीज ज्यादा बुरे नहीं थे उन्हें घर भेज दिया गया। यह भी घर लौट आई। पागलखाने में इसकी कुछ सहेलियाँ, दोस्त बन गए थे जोकि इसके साथ ही छूटे। अब यह माँ-बाप के हाथ से निकल चुकी थी। दबी हुई लड़की अचानक बदले लेने लगी गिन गिन के। परिवार में रोज हाथा-पाई की नौबत आने लगी। कोई भी सुरक्षित नहीं था। बच्चा भी नहीं। घबराकर इसके माँ-बाप ने नरेन्द्र को तलाक लेने की सलाह दी।"

"क्या? अपनी बेटी से तलाक दिलवा दिया माँ-बाप ने?"

"क्या करते वह भी। नशे की लत लग चुकी थी इसे। कई बार तो बच्चे को भी बुरी तरह से पीट दिया इसने - पाप की औलाद कहते कहते। तलाक हो गया। यह घरसे भी बेघर हो गई ।" "पर जीती कैसे थी? नशे की लत भी तो पैसे माँगती है। कहाँ से लाती थी पैसे?" रँगे बाल वाली के सारे सवाल ऐसे ही थे। अपनी सहेलियों की नजर में ही उसे अपने सवाल का जवाब मिल गया – "ठीक है, आगे बताओ।""नशीली गोलियों ने दिमाग और खराब कर दिया। पगला गई बेचारी। माँ-बाप ने शर्म के मारे और इसके बार-बार वापिस आकर दरवाजे पर शोर-शराबा करने से बचने के लिए एक दिन चुपचाप घर बदल लिया। बच्चा अब तक स्कूल जाने लगा था। उसका स्कूल भी बदला गया। जब इसे पता चला तो बुरी तरह से बौरा गई। अपने परिवार को बेशक दुखी करती थी पर शायद इसके बदले में भी अपनापन छिपा था। इसकी हालत और बिगड़ गई। अक्सर गली-मुहल्ले के घरों के दरवाजे खटकाती पूछती अपने बेटे के बारे में। घंटों स्कूल के प्ले-ग्राऊँड के जंगले से चेहरा चिपकाए अपना बेटा पहचानने की कोशिश करती रहती। हताश होकर कभी वहीं फुटपाथ पर घंटों बैठी रहती जब तक स्कूल वाले इसे वहाँ से भगा नहीं देते।"

"बहुत बुरा हुआ बेचारी के साथ। सब माँ-बाप का किया धरा है। अपने स्वार्थ के लिए बेटी की जिन्दगी बरबाद कर दी।" एक से नहीं रहा गया।

"सारा गली-मुहल्ला तंग आ चुका था इसकी हरकतों से।" सहेली ने बात को अनसुना करते हुए कहानी आगे

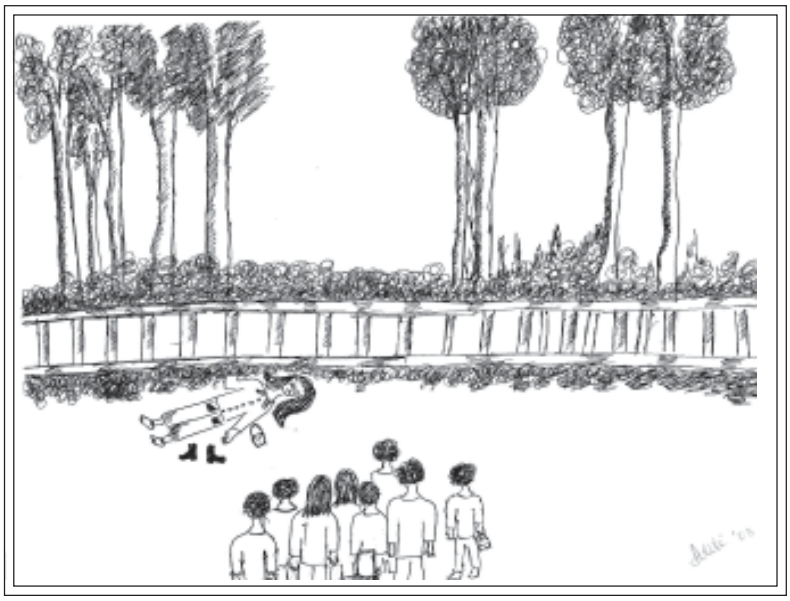

बढ़ाई- कभी यह महीनों गायब हो जाती और फिर अचानक लौट आती। कई बार चेहरे पर मार-पीट के निशान दीखते। देखते-देखते कपड़े फटे पुराने चीथड़ों में बदल गए, बाल का रंग भी बदल गया। बुरा हाल था बेचारी का और माँ-बाप और नरेन्द्र ने लौट कर सुध भी नहीं ली। बाद में सुनने में आया कि उन्होंने ही रिश्ता ढूँढ कर नरेन्द्र की फिर से शादी कर दी।"

इस बार किसी को हैरानी नहीं हुई। कोई प्रश्न नहीं उछाला गया। कोई प्रतिक्रिया नहीं। बस एक चुप्पी सी छाई रही। सभी की आँखें भरी हुई थीं। आदमी भी अपनी कोरों को पोंछ रहे थे। समय रुक सा गया था। सड़क पार पुलिस की गतिविधियाँ, सड़क ट्रैफिक, पत्तों का हिलना सब कुछ मानो वातावरण का भारीपन महसूस करते हुए थक से गए थे। गति धीमी हो चुकी थी।

सहेली ने फिर बोलना शुरू किया। लगा कि आवाज किसी दूर कुएँ से आ रही हो। शब्द थे - अर्थ दिमाग तक पहुँच नहीं पा रहे थे। पीड़ा थी पर चोट दिखाई नहीं दे रही थी -
"बेचारी बेटी होकर भी कभी बेटी न हुई, शादी हुई पर बीवी न बनी, जन्म तो दिया माँ न बन सकी। ममता अगर मन मे उठी तो मन के पाप ने उसे दबा लिया। मर तो बेचारी उसी दिन गई थी जिस दिन इसकी शादी हुई थी। लाश को कभी न कभी तो गिरना ही था। आज वह भी गिर गई।"कहते कहते वह फूट-फूट कर रोने लगी। अब कौन किस को संभालता। शर्मा जी कुछ समय के बाद बोले- "उठ बहन, सड़क पार करते हैं।
क्यों"?"
पुलिस को बताना है कि लावारिस नहीं है यह लड़की। अपनी ही बेटी है। यंत्रवत वह उठी और सड़क पार करने लगी। किसी के पास कहने के लिए कुछ बचा ही नहीं था।

एक कविता

चंदर वर्मा (शिकागो)

कैनवास पर
जो रंग
बिखेरे थे तुमने
उभरी उन रंगों से कई
इच्छाओं की आकृतियाँ
आकृतियों ने
पूछा जो कैनवास से
वो गई कहाँ
जिसने दी जिंदगी हमें?

कैनवास ने कहा
मैं भी तो शव था
इससे पहले
हम दोनों ने
ढूँढा तुमको
न पाया, जब कोई निशान
इच्छाओं ने की बग़ावत
और
कैनवास फाड़ डाला।

तुम्हारी आँखों में
इक रुवाब है
नई सुबह का।
मैं नहीं जानता
वो तुमसे कितनी दूर है
लेकिन पास ही
चिड़ियों के चहचहाने की
आवाज़ आ रही है।

सुखमय भविष्य की
असंख्य शुभकामनाएँ सँजोए
यह सुबह उतरेगी
तुम्हारे आँगन।

बस का पास (संस्मरण)

डा. कुश कुमार - अमेरिका

उन दिनों हम बनारस में रहते थे और हम सब भाई बहन राजकीय बस से स्कूल जाते थे। पिता जी ने बस का मासिक पास बनवा दिया था जो रोज रोज के टिकट खरीदने की झंझट से निजात तो था ही साथ में विद्यार्थी रियायत योजना के कारण सस्ता भी था। घर के पास ही बस स्टैन्ड था जहाँ से बस मिलती थी जो आधे बनारस शहर का चक्कर लगाने के बाद स्कूल पहुंचाती थी। अत: हम लोग घर से थोड़ा जल्दी निकलते थे। देर से स्कूल पहुँचने का मतलब था अध्यापकों व सहपाठियों का कटाक्ष, लेट फाइन व स्कूल में प्रवेश से वंचित होना।

एक दिन किसी कारण वश हमें घर से निकलने में देरी हो गयी और जल्दी जल्दी आनन फानन में अपना स्कूल का बस्ता लगा कर हम भागते हुये बस स्टैंन्ड पहुंचे। रास्ते भर ये मनाते रहे कि जल्दी से बस मिल जाये और हम ठीक समय पर स्कूल पहुंच जायें। शायद भगवान ने हमारी विनती सुन ली थी और जैसे ही हम बस स्टैन्ड पहुंचे , हमने देखा कि बस उधर से आ रही थी । बस क्या था हम बस के रुकते ही लपक कर बस पर चढ़ गये और उतरते समय देरी न हो इसलिए आगे के दरवाज़े के पास जा कर बैठ गये। फिर हमेशा की तरह हमनें सोचा कि बस का पास अपने बस्ते से बाहर निकाल लें जिससे कन्डक्टर को दिखाने में आसानी हो। बस्ता खोलते ही हम धक रह गये, बस्ते के विशेष पाकेट में जिसमें हम बस का पास रखते थे वहाँ बस का पास नहीं था। हमने जल्दी - जल्दी बड़ी सावधानी के साथ कि कोई देख तो नहीं रहा है, सारे बैग को छान मारा परन्तु पास कहीं नहीं था। फिर हमने सोचा कि चलो स्कूल में लंच खाने के पैसे से टिकट खरीद लेंगे और आज लंच नहीं करेंगे। मेरे तब प्राण पखेरू उड़ गए जब जेब खाली पाई। हम जल्दी और हड़बड़ी में पास और पर्स दोनों ही घर में भूल आये थे।

अब क्या करते , बस इसी उलझन में थे कि कहीं कंडक्टर महोदय हमारी तरफ न चले आयें। वैसे तो रोज़ रोज़ जाने की वजह से कई कंडक्टर एवँ ड्राइवर थोड़ा बहुत परिचित हो गये थे परन्तु आज दोनों ही नये नज़र आ रहे थे। मैंने धीरे से कनखियों के सहारे कंडक्टर को पहचानने की कोशिश की पर इसके पहले कि कंडक्टर महोदय की नज़रें हम पर पड़तीं , हमने झट से मुख फेर लिया और थोड़ा खिड़की के बाहर चेहरा निकालकर बाहर देखने लगे। कंडक्टर महोदय से नज़र मिलाने का मतलब था, आ बैल मुझे मार। मैं बस हनुमान चालीसा के सहारे समय काट रहा था। किसी तरह से स्कूल आ जाये और हम झट से उतर जायें। मैं जितना मना रहा था कि बस जल्दी चले , वो उतना ही धीरे चल रही थी। हर थोड़ी देर पर रुकती थी। मेरी तो रूह फ़ना थी। बस थोड़ा खाली थी इसलिए और भी डर लग रहा था। शीघ्र ही बस फिर रुकी और जैसे हनुमान जी ने हमारी फरियाद सुन ली थी। बस में करीब बीस से पच्चीस मद्रासी तीर्थ यात्रियों का एक जत्था चढ़ा और बस खचाखच यात्रियों से भर गयी। मैंने सोचा कि अब कंडक्टर साहब इन यात्रियों के टिकट काटने में मशगूल हो जायेंगे और तब तक हमारा स्कूल आ जायेगा। हमारी यह दूरगामी सोच क्षणभंगुर निकली जब हमने धीरे से देखा कि कंडक्टर साहब जो बस के पीछे के दरवाज़े के पास बैठे थे, बस के आगे आते हुये नज़र आये। शायद उन्होंने नये यात्रियों का टिकट आगे से काटते हुये पीछे जाने की ठान ली। मैं खिड़की से बाहर चेहरा निकाल कर एक अनभिज्ञ व्यक्ति के समान बाहर देखने लगा। मेरे पीठ पर साँप रेंगने लगा जबकि मेरे ठीक पीछे कंडक्टर महोदय जल्दी जल्दी टिकट काट रहे थे । इतने में बस फिर रुकी और कुछ और यात्री बस में चढ़े। यात्रियों का आगे आने की हिदायत देते हुये वो जल्दी जल्दी टिकट काटते हुये पीछे चले गये। फिर जान में जान आयी। अब स्कूल भी पास आ चला था परन्तु शायद भाग्य को इस तरह से हमारा बारीकी में छूट जाना मन्ज़ूर न था।

थोड़ी देर के बाद बस फिर रुकी और सारे मद्रासी तीर्थ यात्रियों का जत्था जो एक साथ बस में चढ़ा था वह और बस के कुछ अन्य यात्री बस से उतर गये। अगला स्टाप हमारे स्कूल का था परन्तु बस तकरीबन खाली हो चुकी थी। अब फिर हमारी वही हालत। मैं फिर खिड़की से बाहर कुछ और चेहरा निकालकर बाहर देखने लगा। मैं सोच रहा था कि किसी तरह अगला स्टाप आये और मैं झट से बस से कूद जाऊं। इतने में कंडक्टर महोदय ने पीछे से आवाज़ दी ऐ बच्चे! अब तो हमारी वो हालत कि काटो तो खून नहीं। परन्तु वीरता का परिचय देते हुये हम उनकी पुकार अनसुनी करते हुये शरीर का और भाग भी खिड़की से बाहर निकालकर बाहर देखने लगे। फिर मैंने एहसास किया कि कंडक्टर महोदय जल्दी जल्दी हमारी तरफ चले आ रहे हैं। मैं और भी साहसी बन कर कुछ और शरीर का भाग खिड़की से बाहर निकालकर बाहर देखने लगा। इतने में कंडक्टर महोदय ने पीछे से हमारे कालर को पकड़ा । हम पर उस समय क्या गुज़री उसका ब्यान करना मुश्किल है। कंडक्टर महोदय के वो हाथ यमराज के लगे। हम पत्थर के हो चुके थे। स्कूल के इतना पास पहुँचने के बाद पकड़ा जाना बहुत दुखदायी था।

कंडक्टर महोदय ने हमको कालर पकड़कर बस के अन्दर खींचते हुये गरजते हुये नाराज़ मुद्रा में कहा बहरे हो क्या?इतनी देर से चिल्ला रहे हैं, सुनाई नहीं देता ? शरीर का कोई भी अंग चलती गाड़ी से बाहर निकालना मना है। जानते हो इसमें कितना ख़तरा है? कुछ भी हो सकता है। वो झल्ला रहे थे और मैं चुपचाप झुकी नज़रों से उनको झेल रहा था कि इतने में बस फिर रुकी। हमारा स्कूल आ गया था। हम सौरी सर, कह कर झट से बस से कूद कर उतर गये और बस धुआँ उड़ाती हुई चली गई। मैं बस को बाई - बाई करता हुआ दौड़ता हुआ ठीक टाइम पर स्कूल में दाखिल हो गया।

नवयुग का गीत

भगवत शरण श्रीवास्तव (कैम्ब्रिज)

मानव ब्रह्माँण्ड में चक्कर लगा रहे।
तुम अन्धकार में हो गोते लगा रहे।
कल की कुछ मान्यताएँ आज स्वीकार नहीं
चेत जाओ अब भी हम सोते जगा रहे।

विश्व इक कुटुम्ब है सबका ही जानते हो।
फिर क्यों कूप में निज नगरी बसा रहे।
तजो कुरीतियों को अपनाओ सुरीतियों को
देखो समय के स्वर यही तो गीत गा रहे।

समय नहीं रुकता है कभी नहीं झुकता है।
कितने युगों भानु शशि हैं यही तो जता रहे।
जीवन की फुलवारी होती है अति प्यारी।
नवयुग में नव अंकुर भाल हैं उठा रहे।

पुरातन नवीन को एक में घड़ देंगे हम।
ऐसी मर्यादा का सपन हैं हम सब सजा रहे
उनका भी मान हो अपना भी ध्यान हो।
एक ऐसी नव विधा की आशा हम हैं लगा रहे।

आओ लिख डालें आज नवयुग का गीत फिर
जिसको हम सब समझे ऐसी धुन हैं लगा रहे।
चेतना तो आयेगी हर मन में बस जायेगी
समय का फेर फेरने का समय सगुन बता रहे।

भगवान की सृष्टि (बाल कथा)

डा. नीलाक्षी फुकन नेउग

बहुत समय पहले किसी गाँव में नरेश नाम का एक अहंकारी आदमी रहता था । वह अपने आपको इस संसार का एकमात्र विद्वान समझता था । जब भी मौका मिलता वह अपनी विद्वता दिखाने में पीछे नहीं रहता था।गाँववालों के साथ उसकी कभी नहीं बनती थी । वह हमेशा गाँव वालों को अनपढ़, गँवार कहकर नीचा दिखाता था । वह भगवान को भी नहीं मानता था । उसने भगवान की सृष्टि पर भी प्रश्न उठाया । वह कहता है कि वह भगवान से ज़्यादा बुद्धिवान है । भगवान हर समय सौ प्रतिशत न्याय नहीं कर सकता । उसके अनुसार भगवान ने पीपल, बरगद, आम जैसे बड़े-बड़े पेड़ों में छोटे-छोटे फल और लौकी, कद्दू जैसे पतले-छोटे पौधों में बड़े-बड़े फल देकर एकदम इन्साफ नहीं किया । यहाँ तक कि फलों के वज़न से ये पौधे सीधे खड़े भी नहीं हो सकते । ऐसे कार्यों से तो भगवान की बुद्धिहीनता ही प्रकट होती है । गाँव के किसी भी व्यक्ति में इतनी हिम्मत नहीं थी कि उसकी बातों का खंडन कर सकें । एक बार नरेश को किसी काम से शहर जाना पड़ा । उस समय यातायात के साधनों की कमी थी । लोगों को कहीं पर भी जाना होता था तो वे पैदल ही चलते थे । गर्मियों का दिन था । दोपहर की तपती धूप में वह ज्यादा दूर चल न सका और एक बरगद के छांव तले बैठ गया । उसे भूख भी ज़ोर से लग रही थी । थैले में से रोटी-सब्ज़ी निकाली और खा-पी कर उसने थोड़ी देर आराम करने की सोची । ठंडी हवा चलने लगी तो पल भर में ही उसकी आँख लग गयीं । अचानक ऊपर से उसके सिर पर कुछ गिरा और दर्द के मारे वह चिल्ला उठा । उसे समझ में नहीं आया था कि ऊपर से इतनी ज़ोर से क्या गिर सकता है । तभी बरगद का एक और फल उसके पैरों के पास आकर गिरा । उसने सोचा इतना छोटा फल गिरने से ही उसे इतना दर्द हुआ, अगर इस बड़े बरगद के पेड़ में कद्दू, कटहल, नारियल जैसे फल होते तो आज उसकी क्या हालत होती । शायद जान ही चली जाती । तभी उसे समझ में आया कि भगवान की सृष्टि कितनी महान है । भगवान ने बड़े-बड़े पेड़ों तले लोगों को आराम करने को दिया है । उस दिन से नरेश का अहंकार कम हुआ । भगवान जो करता है हमेशा सोच-समझकर ही करता है ।

हिन्दी की आत्म कथा

लक्खूराम चहवरिया (मध्य प्रदेश)

मधुकर दलपत नरपत चंद।
नल्लसिंह रचके रासो छंद।।
जगनिक सारंग श्रीधर संग।
वीर रस भनत अनूप प्रसंग।।
सुनत मन भायो है।
हिया हुलसायो है।।1।।

चुनरिया कबिरा दई उड़ाय।
सितारे निर्गुण के टँकवाय।।
तुलसी मानस हार बनाय।
अनूपम सात फलक दर्शाय।।
बहुल मणियारो है।
प्राण से प्यारो है।।2।।

जड़िया नंददास जग जान।
कुम्भन तज्यो न स्वअभिमान।।
अमरत कृष्ण चरित गुणगान।
पिलाकें सूरदास मोहि आनि।।
अमर कर दीनी है।
कृतारथ कीन्ही है।।3।।

बिहारी भरके गागर सिन्धु।
घोरिकें माहुर ईंगुर इंदु।।
देव,मति, कजरा ' बेनी ' सार ।
केशव रीति नीति श्रृंगार।।
मदन मद छायो है।
जिया सरमायो है।।4।।

भूषण आन दई ललकार।
वीर रस हिन्दुन कर संचार।।
राष्ट्रहित जयी करी गुंजार।।
हरीचंद ऐसे कहें पुकार।
बिना निज भाषा के।
न उन्नति आशा के ।।5।।

द्विवेदी दिनकर गुप्ता आय।
निराला बच्चन अंचल गाय।।
दीने रचना सुमन चढ़ाय।
सुसंस्कृत उन्नत दई बनाय।।
मान अति कीन्हों है।
सुआसन दीन्हों है।।6।।

राष्ट्र भाषा का पहिना ताज।
दिखायीं प्रगतिशील कविराज।।
झुपड़ियाँ रोटिन को मुँहताज।
थिगड़ियाँ ढाँके 'चहवरिया' की लाज।।
सिसकती आहों की ।
बिलखती माँओं की ।।7।।

"दुनिया नई बनायेंगे" *(बाल गीत)*

राधा गुप्ता (अमेरिका)

नन्हें - नन्हें क़दम हमारे
आगे बढ़ते जायेंगे,
हम सब सच्चे , उगते सूरज
दुनिया नई बनायेंगे।

हमें न डर है आतंकवाद का
और न आतंकवादियों का,
मानवता का पाठ पढ़ा है
इस पर मर - मिट जाने का।

ठान लिया है मन में अपने
आतंकवाद मिटायेंगे,
हम सब बच्चे, उगते सूरज
दुनिया नई बनायेगें।

हमीं बनेंगे वीर भगत सिंह
हमीं जवाहर औ गाँधी,
हमीं बनेंगे लिंकन औ किलंटन
रोकेंगे आतंकवाद की आंधी।

मुंबई और न्यूआर्क सिटी का
बदला हमीं चुकायेंगे,
हम बच्चे, उगते सूरज
दुनिया नई बनायेंगे।

हमीं जहां की आन बनेंगे
हमीं जहाँ की शान,
हमीं जहाँ की ध्वजा बनेंगे
फहरायेंगे नभ में बन मुस्कान।

बस इतना सा संकल्प हमारा
इसी ध्येय पर जायेंगे,
हम सब बच्चे, उगते सूरज
दुनिया नई बनायेंगे।

बोलो अहिल्या

कुसुम सिनहा (अमेरिका)

बोलो अहिल्या क्यों किया ऐसा?
क्यों अहिल्या क्यों?
भले पूजें लोग तुम्हें
राम कहाएँ पतितपावन
लेकिन कहती हूं मैं
लज्जित किया है तूने
नारी की गरिमा को
किया क्यों विरोध नहीं
उस आरोप का?
लगे थे जो? तुम निर्दोष पर ?
वह छल जो किया था
किसी शक्तिशाली ने?
पति तो ऋषि थे
शक्ति से भरपूर थे?
कैसे पहचान नहीं पाये
वह छल?
तुम्हारे त्याग तपस्या का
यही दिया मूल्य?
दे दिया अभिशाप
पत्थर बन जाने का?
ऐसा कहते हुये
क्या वे नहीं बन गये थे
खुद पत्थर?
कैसे ऋषि कैसे भगवान?
एक ने छल किया
दूसरे ने शाप दिया
और तुम ? तुम भी तो चुप रही?
एक निरपराध को दण्ड
देनेवाले लांछित करनेवाले को
क्यों नहीं दिया श्राप?
क्यों नहीं किया
अन्याय का विरोध?
चुपचाप सहकर
क्यों बन गई तुम
निरीह दुर्बल?
कहीं इसलिए तो नहीं कि
ऋषि की महिमा पर
लगे नहीं दाग?
या शक्तिशाली का विरोध
नहीं कर सकी तुम?
शक्ति तो थी तुम्हारे पास भी?
क्यों अहिल्या ? क्यों?
बोलो अहिल्या ? क्यों?

विदाई की पूँजी

नीना वाही (अमेरिका)

विदाई की बेला आ गई
फिर एक साँझ ढल गई

चाँदनी स्याह हो गई
अरमानों की डोली उठ गई

नयनों की कोरें भीग गईं
दो पल जो तुम्हारे साथ बिता पाई

उनको समेट कर आँचल भर लाई
मैं सम्पूर्ण जीवन की पूँजी का सौदा

उन मिलन के दो पलों में कर आई।

ASTROLOGER

Dr. M. L. Mishra, (Ph.D.)

Phone: 416-745-9325
Cell Phone: 416-529-4150
Fax: 416-745-1737

2631 Islington Avenue, Suite 1
Etobicoke, Ont. M9 V 2X4
(Albion & Islington)

Hindi Pracharini Sabha & Hindi Chetna proudly present a

Hasya Kavi Sammelan

Please join us for a memorable evening of beautiful poetry, gourmet food and a unique opportunity to meet and hear three eminent poets from India.

Friday, April 25, 2008

Location:
Shingar Banquet Hall
2084 Steeles Avenue East
Brampton, Ontario
Telephone 905-790-3607

Program:
Appetizers 6:30 pm
Kavi Sammelan 8:00 pm
Buffet Dinner 10:30 pm

Cost:
Tickets: $20.00 per person
(See below for ticket information)

About our presenters...

Dr. Suresh Awasthi
of Kanpur is a leading satirist in India who has entertained and awakened the conscience of millions of people with his humor and deep penetrating satire. Eleven books to his credit, Dr. Awasthi is a maestro of haasya-vyang. He is also a professor of Hindi and a journalist. This is his first trip to Canada.

Dr. Sunil Jogi
of Delhi is a young and talented Haasya Kavi who has achieved in few years what others dream of achieving in decades. A film songwriter, author of fifty books, Dr. Jogi is a recognized star in India. This is his first trip to Canada.

Mr. Gajender Solanki
of Delhi is a gifted artist, a former advisory member of the Indian Film Censor Board, and an Oj Kavi. His inspirational and patriotic poems glorify the nation, its soil and culture. Solanki's forceful voice with an equally effective message leaves the audience spellbound. This is his first trip to Canada.

For tickets and additional information, please contact:

Raj Bhasin	905-415-8806	Bhuvneshuri Pandey	905-452-0197	Ranjna Sharma	905-477-3780
Aruna Bhatnagar	905-270-9549	Surrinder Pathak	905-858-9408	Saroj Soni	905-265-2102
Nirmal Sidhu	905-997-3394	Suman Kumar Ghai	416-286-3249	Shiam Tripathi	905-475-7165
Raj Maheshwari	416-293-4953	Vijaya Vikrant	905-279-6860		

Sponsored by: International Hindi Association USA
Supported by: Vishwa Hindu Parishad, Hindi Abroad, Sahitya Kunj, Hindi Sahitya Sabha, Hindi Parishad & Hindi Writers Guild

अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति का १४वाँ अधिवेशन वाशिंग्टन डी सी
(14th Convention of International Hindi Association in Washington, DC)

हिन्दी सम्मेलन २००८ (Hindi Sammelan 2008)

शनिवार १२ अप्रैल २००८ प्रातः ७:०० से रात्रि ११:३० बजे तक

विशेष कार्यक्रम के साथ शुक्रवार ११ अप्रैल २००८ को सम्मेलन का शुभारम्भ

(Saturday, 12 April 2008 7:00 AM – 11:30 PM)

(Starts Fri, April 11 @ 6 PM - Special Programs including Cultural program & Kavi Sammelan - Free & – $15pp for dinner)

Crowne Plaza Hotel *2200 Centreville Road, Herndon, Virginia*

2 miles from Dulles Airport IAD • Complimentary shuttle service • www.cpdulles.com • 703-471-6700

केन्द्रीय विषय (Theme)- *'वैश्वीकरण के युग में हिन्दी'* (Hindi in globalization age)

Scholarly discourses, discussion on relevant issues and fun-filled extravaganza for the whole family

A Kavi Sammelan by world famous Poets (Kavis) from India

Dr. Suresh Awasthi (Hasya & Vyang)

Dr. Sunil Jogi (Hasya Kavi)

Sh. Gajendra Solanki (Geetkar)

Registration by March 15: $75 for IHA members, $100 for non-members. After March 15, add $25 pp

Seats are limited, reserve now. Saturday evening Kavi Sammelan only (limited seats) $25/person

Children under 5 years are Free. Spouse and children of the member pay member registration fee. Registration includes parking, meals (Breakfast, Lunch, Banquet Dinner, 2 Snacks, and Tea & coffee all day), and admission to all convention programs on Saturday including Kavi Sammelan by famous poets from India. One registration packet per family. A block of rooms has been reserved at Crowne Plaza at a deeply discounted rate of $82/room/day + tax, double occupancy effective until March 15, 2008. Please contact Hotel directly at the above number to get IHA rates.

A *Smarika* (Souvenir Book) is being published. Deadline for articles and advertisements is Feb. 28, 2008.

All tax-deductible donations and sponsorships will be appropriately recognized in the *Smarika and at the convention. For details, sponsorship or advertisement in Smarika, please visit www.hindi.org or contact below.*

Local Organizing Committee
Beena Akolkar 240-683-1228
Hari Bindal, 301-262-0254
Asha Chand, Chair, 301-527-8265
Kamal Chopra, 301-990-2255
Madhu Govil 703-425-4684
Dhananjaya Kumar 703-573-1983
Madhu Maheshwari 703-451-2453
Astha Naval 703-865-5910
Mohini Purohit 301-990-8757
Rikhi Sharma, 301-464-5139
Soma Singh, 301-972-3944
Somesh Sood, 301-931-1133
Narendra Tandon, 301-948-3695

National Program Committee
Mahadeo Chand, 330-598-0642
Sudha Dhingra, 919-678-9056,
Ram Babu Gautam, 201-941-4637
Renu Gupta, 606-341-9383
Shailendra Gupta, 504-468-2479
Alok Misra, 603-898-4881
Himanshu Pathak, 732-946-0568
Ravi P. Singh, 615-895-8104
Sher Bahadur Singh, 718-470-0345
Vidya Nand Singh, 703-356-4747
Uday Shukla, 407-296-8242
CONVENTION CONVENER:
Satish Misra 301-340-2983

पंजीकरण-पत्र (Registration Form)

नाम Name: .....(Spouse/Children): .....

पता Address: .....

दूरभाष Phone: ..... ई-मेल E-mail: ..... Current IHA Member: Yes ☐ No ☐

1) IHA member $75, non-member $100. Add $25 pp after March 15 (Member's spouse & children pay member rates) US $ _____
Children under 5 yrs Free. **Saturday evening Kavi Sammelan only (limited seats) $25 per person**

2) Save by becoming a member: $25 Annual membership, $150 Life membership. For Ads/Sponsorship please contact US $ _____

Total Amount Enclosed US $ _____

Please make check or bank draft payable to 'International Hindi Association' and mail (including poems, articles & ads for Smarika) to:

Renu Gupta, 6070 Eaglet Drive, West Chester, OH 45069, USA Email: nishved@yahoo.com Tel: 248-320-7281 (cell)

*The International Hindi Association is a 501(c)(3) non-profit organization registered in the state of Tennessee. The Donations may be tax deductible. Consult your accountant.

BEST WAY CARPET & RUGS INC.

$50.00 Off All wall to wall Carpet with purchase up to 300 sq. ft.
10% Off all Area Rugs

Free delivery under pad Installation

• Residential • Commercial • Industrial • Motels & Restaurants

Free Shop at Home Service Call: (416) 748-6248

• Broadloom • Area Rugs • Runners • Vinyl & Hardwood • Blinds & Venetian
Custom Rugs • All kind of Vacuums

Interest Free
6 months No Payment
OAC

7003, Steeles Ave. Unit 8
Etobicoke
ON M9W OA2
Ph: 416-748-6248
Fax: 416-748-6249

1 Select Ave, Unit 1
Scarborough
ON M1V 5J3
Ph: 416-321-6248
Fax: 416-321-0929

बिल्ली - बालकथा

पुनर्कथन: उमा कृष्णा स्वामी की पुस्तक " ब्रोकन टस्क में" दी कैट कहानी पर आधारित

रमेश शौनक - (अमेरिका)

छुटपन में गणेश कैलाश पर्वत की तराई के जंगलों में खेलकर अपना मन बहलाया करता था।कई बार वह नई खेलें सोच लिया करता था , जैसे कि वह बहुत बड़ा राजा है जो काल्पनिक योद्धाओं को लेकर युद्ध के लिए कूच कर रहा है। एक बार उसे करने को कुछ नहीं सूझा तो उसने माँ पार्वती से कहा , " हमारे पास करने को कुछ नहीं है।"

पार्वती को आश्चर्य हुआ। बोलीं, " सारा पहाड़ पड़ा है , ऐसे क्रीड़ास्थल में तुम्हें खेलने को कुछ नहीं मिला? जब मेरा मन उखड़ जाता है या मेरी आत्मा नई दृष्टि मांगती है तो मैं वहां जाती हूं जहाँ बन्य प्राणी रमते हैं और मैं उनकी दृष्टि से संसार को देख पाती हूं।"

गणेश ने कुटिया के बाहर इधर उधर देखा। उसने एक मोटी सी लकड़ी उठा ली और एक चपटा सा पत्थर ले लिया। बेलों से उस पत्थर को लकड़ी से बाँध दिया , और उसे अपनी कुल्हाड़ी मानकर उसे घुमाता हुआ , पहाड़ की पगडंडियों पर उछलता , कूदता दौड़ने लगा और रौबीले स्वर में गरजने लगा, " हम सबसे बड़े शिकारी हैं। जंगल के जानवरो , भागो अपनी जान बचाकर।"

गणेश ने रुककर इधर उधर देखा " लेकिन हम किस चीज़ का शिकार करें? कोई पशु तो है नहीं यहाँ शिकार करने के लिए ।"

अचानक उसे एक बिल्ली चट्टान के पीछे दिखाई दी। गणेश चिल्लाया , " हमने सोच लिया है तुम एक शेर हो और हम शिकारी हैं ।" वह बिल्ली के पीछे भागा।

डर के मारे म्याऊँ करती हुई बिल्ली पहाड़ की ढलान पर भागी जा रही थी । गणेश अपनी खेल में इतना मस्त था कि उसने ध्यान ही नहीं दिया कि बिल्ली कितनी डरी हुई है। उसने तो यही सोच रखा था कि वह एक शेर है और वह उस शेर का शिकार करके छोड़ेगा।

जब वह बिल्ली तक पहुंचा तो उसने बिल्ली की पूँछ पकड़ ली और उसे ज़मीन पर दबोच दिया और वह चिल्लाया , " पकड़ लिया न तुम्हें , अरे कमीने शेर!"

बिल्ली बेचारी इतनी डर चुकी थी कि चुपचाप लेटे रहने के सिवा कुछ नहीं कर पा रही थी। वह " म्यायूँ " तक नहीं कर रही थी।

वह काँप रही थी ज़ोर ज़ोर से। गणेश ने देखा कि उसके भयावने शिकार ने पूरी तरह से समर्पण कर दिया है। रुआँसे - से होकर उसने बिल्ली की पूंछ छोड़ दी। बिल्ली तेज़ी से उठ भागी।

गणेश बड़बड़ाया , " बिल्कुल मज़ा नहीं आया ।" वह उठा और घर की तरफ चल पड़ा। जब वह घर पहुंचा तो उसे यह देखकर बहुत हैरानी हुई कि उसकी माँ पार्वती का शरीर खरोंचों और खराशों से भरा हुआ था जैसे कि पत्थरों और चट्टानों से उनके शरीर की चमड़ी कट गई हो और उनके गाल कांटे से बिंध गये थे।

गणेश को अपनी दिन भर की निराशा भूल गई , उसने पूछा , " अम्मा , यह क्या हुआ आपको?"

पार्वती बोली, " बेटा यह तुम्हारी ही करतूत है । याद नहीं , हमने तो कुछ नहीं किया। हम कभी आपको इस तरह की चोट नहीं पहुंचा सकते।" पार्वती बोलीं , " सोचकर देखो। थोड़ी देर पहले तुमने एक जीव को सताया था ?"

गणेश इस घोर अपवाद से इन्कार करने ही वाला था कि उसे बिल्ली की याद आ गई । शर्म से उसका सर झुक गया - नीचे और भी नीचे ; इतना कि उसके बड़े बड़े कान उसकी छाती पर लटक रहे थे और उसकी सूंड जमीन पर ढेर हो गई थी।

"वह बिल्ली मैं ही थी " पार्वती बोली , " यह बात याद रखना सारी उमर । जब तुम किसी प्राणी को सताते हो तो तुम मुझे ही सताते हो।"

शर्मिन्दा और उदास गणेश अपनी मां से लिपट गया, " मुझे क्षमा कर दो , माँ। मैं तुम्हें चोट नहीं पहुंचाना चाहता था । मैं तो खिलवाड़ कर रहा था।"

" वह तुम्हारे लिये खेल रहा होगा ।" पार्वती बोली , " जैसा कि तुम देख ही रहे हो , मेरे लिए यह खेल नहीं था। हमेशा ध्यान रखो कि खेलते हुये तुम किसी को घायल न करो, दुखी न करो , न ही डराओ।" " नहीं करूंगा , अम्मा ।" गणेश ने वादा किया। उसके बाद गणेश ने हमेशा खास ध्यान रखा कि वह जंगल और नदी नालों के जानवरों से सौम्य व्यवहार करेगा। तुम सबको भी ऐसा ही करना चाहिये।

क्योंकि उनमें से कोई भी रूप बदलकर आई हुई माँ पार्वती हो सकती है।

Teachers Training

RYS 200
Registered Yoga School

FREEDOM YOGA

Become a Yoga Alliance Registered Yoga Teacher

July 1st 2008 - July 25th 2008

Every Saturday ~ 9 a.m. – 3 p.m.

What are the benefits of yoga?

- Reduces stress & tension
- Lowers fat
- Stimulates the immune system
- Creates sense of well being and calm
- Seasonal Allergies

Research shows Yoga can manage or control anxiety and depression, insomnia, arthritis, asthma, back pain, high blood pressure, carpal tunnel syndrome, chronic fatigue, diabetes, headaches, heart disease, pms and menopause symptons, multiple sclerosis, and more.

Please contact us for information on the 25 day Intensive Teachers Training July 2008

Everyone is Welcome!

Freedom Yoga Gurukul
Brampton, ON
www.freedomyoga.ca
omfreedomyoga@yahoo.ca

Explore:

- Asana/Yoga Sutra
- Gentle & Advance Pranayama
  -Kapalabhati
  - Bhastrika
- Meditation
- Philosophy
- Yoga Kriya
  -Jal & Sutra Neti
- Yogic Diet & Lifestyle
- Ayurveda
- Hatha Yoga
- Gentle Yoga
- Family Yoga
- Kid's Yoga
- Hot Yoga
- Private Lessons
- Corporate Yoga
- Teachers Training

Aacharya Sundeep Tyagi: (647) 282-2529
Haley Tyagi: (416) 402-9642

काठी की सीख

नीरज नैथानी - (श्रीनगर गढ़वाल)

हमारा दल, वासुकी ताल, गान्धी सरोवर का पथारोहण अभियान पूर्ण कर केदारनाथ धाम से गौरीकुंड पहुँचा तथा वहाँ से हमने गुप्त काशी के लिए बस पकड़ी। बस में हमें पीछे वाली सीट मिली थी। हमारे बीच में गौरीकुंड का रहने वाला 17-18 वर्ष का एक लड़का भी बैठ गया। हम लोग स्थानीय दुकानदारों , घोड़े - खच्चर वालों तथा ढाबा चलाने वाले लोगों की पर्यटन जनित व्यावसयीकरण सोच से प्रभावित हो रही उनकी ईमानदारी व सदायशता पर चर्चा कर रहे थे कि वह लड़का बीच में बोल पड़ा, बाबू जी बेईमानी से कोई लाभ नहीं होता, मिलता उतना ही है जितना मेहनत व ईमानदारी का होता है। मैं आप लोगों को अपने साथ घटित एक सच्चा किस्सा बताता हूँ। पिछले यात्रा सीजन की बात है ..... तब मेरे पास अपना घोड़ा नहीं था। मैं किसी और घोड़े वाले के साथ नौकर का काम करता था। मेरा मालिक यात्रियों से गौरीकुंड से केदारनाथ आने जाने का घोड़े का किराया तय करके सारे पैसे एडवान्स में ही ले लिया करता था। मेरा काम घोड़े पर यात्री को बैठाकर उसे सँभालकर,धीरे - धीरे आराम से केदारनाथ पहुंचाना तथा मन्दिर दर्शन आदि कराकर वापस गौरीकुंड लाना होता था। जबकि रास्ते में पड़ने वाली दुकानों में जहाँ - जहाँ यात्री उतरकर विश्राम करता तथा चाय - नाश्ता लेता तो मुझे भी कुछ न कुछ अवश्य खिलाता। हमेशा की तरह उस दिन भी मेरे मालिक ने यात्री से तय किये पूरे पैसे वसूले तथा मुझे घोड़े के साथ भेज दिया। मैं यात्री को घोड़े पर बैठाकर केदारनाथ ले गया, वहाँ एक रात ठहरकर दूसरे दिन दर्शन, पूजा पाठ कराने के बाद नीचे गौरीकुंड ले आया। गौरीकुंड में यात्री ने मुझसे पूंछा कि लौट-पौट के एक चक्कर का कितना पैसा बनता है। मैंने उसे घोड़े के एक चक्कर के तीन सौ रुपये बता दिये। उसने अपनी जेब से पर्स निकालकर मेरी ओर तीन सौ रु. बढ़ा दिये। मैं समझ गया कि यात्री गलतफहमी में मुझे पैसे दे रहा है, शायद उसे पता नहीं था कि मैं घोड़ेवाले द्वारा रखा गया नौकर हूँ जो कि मुझे प्रत्येक चक्कर के हिसाब से स्वयं पैसा देता था। थोड़ी देर तक तो मेरे मन के अन्दर उन फोकट के पैसे के लिये हां - ना, हां - ना, की जो आजमाइश चली लेकिन, सौ - सौ रुपये के वे तीन करारे नोट मेरे इमान पर भारी पड़े। मैंने अन्ततः पैसे अपने जेब के हवाले करते हुये उससे हाथ जोड़कर विदा ली। हालांकि मन ही मन अपराधबोध भी कचोट रहा था। तभी अचानक मेरे पिता जी मुझे मिल गये। उनके पास भी अपना एक घोड़ा था जिसमें वह यात्रियों को लाने - ले जाने का काम करते थे। किन्तु उसी दिन हमारे घोड़े की काठी टूट गयी थी अतः उन्होंने मुझसे कहा कि मैं गुप्तकाशी बाजार से काठी को ठीक करवाकर ले आऊं। शाम को मैंने उखीमठ जाने वाली बस की छत में काठी रख दी तथा गुप्तकाशी तक का टिकट लेकर अन्दर बैठ गया। हल्की बून्दा - बान्दी से मौसम सुहाना बना हुआ था.....और मैं अपनी सीट पर बैठा अनायास पा गये इन तीन सो रुपयों को खर्च करने के तरीके सोच रहा था। ढेर सारे बनते - बिगड़ते विचारों के बाद मन ही मन तय किया कि गुप्तकाशी उतरकर सबसे पहिले एक ट्रान्जिस्टर खरीदा जायेगा। इस सुखद कल्पना के बीच पता ही न चला कि कब गुप्तकाशी आ गया। बस के रुकते ही मैं उतरकर सीधा रेडियो की दुकान में पहुंचा। बिना मोल भाव किये मैंने तत्काल एक ट्रान्जिस्टर खरीद लिया। नया ट्रान्जिस्टर हाथ में लिये खुशी से इतराता मैं सड़क पर टहलने लगा। रेडियो में न जाने कौन सा स्टेशन लगा था लेकिन कोई बढ़िया गाना आ रहा था। हल्की - हल्की रिम झिम में मैं रेडियो के गाने के बोल के साथ बोल मिलाते हुये झूमते हुये मस्ती में टहल रहा था कि अचानक ख्याल आया कि अगर पिता जी पूछेंगे कि यह नया ट्रान्जिस्टर कहाँ से - .....आया..? और पिता जी की तसवीर दिमाग में कौन्धते ही याद आया कि मुझे तो पिता जी ने काठी ठीक कराने के लिए भेजा था। और काठी की याद आते ही..... मैं पलटकर तेजी से बस स्टैंण्ड की ओर भागा। वहां जाकर पता चला कि बस तो उखीमठ चली गयी है। मैं पिता जी के गुस्से की कल्पना से ही काँप गया। मरता क्या न करता तुरन्त टैक्सी करके उखीमठ पहुंचा। वहाँ बस स्टैंण्ड में देखा बस खड़ी थी। मैं आनन फानन में दो - दो सीढ़ी एक साथ चढ़कर बस की छत पर पहुंचा, वहां खाली छत देखकर दिल धक से रह गया। घबराहट में मेरा दिमाग काम न कर रहा था, छत से उतरकर इधर - उधर की दुकानों में ड्राइवर - कंडक्टर को बड़ी मुश्किल से ढूंढ़ पाया । कंडक्टर ने पूछने पर बताया कि भैया इस बीच बस से कई सवारी उतरी - चढ़ी हैं। बता नहीं सकता कि तुम्हारी काठी कौन ले गया .... और मुझे काटो तो खून नहीं .....। मैं जानता था कि पूरी की पूरी नयी काठी गददी - वेल्ट सहित चार - पांच सौ रुपये से कम नहीं आयेगी। मेरा मन स्वयं से कहने लगा कि अगर तूने उस भोले अनजान यात्री से बेईमानी के तीन सौ रुपये न लिये होते तो .... । लेकिन बाबू जी लकड़ी की वह मूक काठी मुझे बहुत बड़ी शिक्षा दे गयी थी। उस दिन मैंने कसम खाली कि आज के बाद से बेईमानी व धोखे के एक पैसे पर भी हाथ न लगाऊंगा।

ग़ज़ल

महेश नन्दा " शैदा"

पूछे है दिल ग़म सहेंगे कहाँ तक
कोई आ के समझाओ मेरे जहाँ तक
मुझे दर्द कोई नहीं सब ये समझे
गो नाले उठे पै न पहुंचे ज़बां तक
फल पै सितारे हैं क्यों टिमटिमाते
क्या पहुंची मेरी दास्तां आसमां तक
गुज़र गये कई काफिले इन ही राहों
पै मिलते कहीं भी न उसके निशां तक
जिसे बेरुखी का न अहसास हो उनकी
वो पहुंचा के पैग़ाम देखें बुतां तक
जो कश्ती किनारे लगी में हैं बैठे
थपेड़ो का वो ज़ोर जानें कहां तक
लो तूफाँ ने कशती किनारे लगा दी
रसाई हुई गोया जूए - रवाँ तक
ठहर सा गया वक्त मिलने वो आ गये
कहीं खबर पहुंचे न उमरे - खाँ तक
निभाते रहे हम था मुमकिन जहाँ तक
के " शैदा " जी कहिये और अब कहाँ तक

غزل

۱. پوچھے ہے دل غم سہنگے کہاں تک
کوئی آ کے سمجھاؤ میرے جہاں تک
۲. مجھے درد کوئی نہیں سب یہ سمجھے
گو نالے اٹھے پہ نہ پہنچے زباں تک
۳. فلک پر ستارے ہیں کیوں ٹمٹماتے
کیا پہنچی میری داستاں آسماں تک
۴. گزر گئے کئی قافلے ان ہی راہوں
پہ ملتے کہیں بھی نہ انکے نشاں تک
۵. جسے بے رخی کا نہ احساس ہو انکی
وہ پہنچا کے پیغام دیکھے بتاں تک
۶. جو کشتی کنارے لگی میں ہیں بیٹھے
تھپیڑوں کا وہ زور جانیں کہاں تک
۷. لو طوفاں نے کشتی کنارے لگا دی
رسائی ہوئی گویا جوئے رواں تک
۸. ٹھہر سا گیا وقت جو ملنے وہ آگئے
کہیں خبر پہنچے نہ عمر رواں تک
۹. نبھاتے رہے ہم تھا ممکن جہاں تک
کہ شیدا جی کہیے اور اب کہاں تک

مہیش نندہ شیدا

मेरे साजन हैं उस पार

जाफर अब्बास - अमेरिका

सोचा था शब्दों की नैय्या पर उस पार चला जाऊँगा
जिस्मों के शादाब जज़ीरों से भी आगे
लम्हों की लहरों के भी उस पार, जहाँ पर
ख़ामोशी के फूलों की भीनी खुशबू से
मेरी रातों के सब तारे
पिघल पिघल कर यकजा होंगे, मिल जायेंगे
एक ठंडा, अंधा कर देने वाला सूरज बन जायेंगे
मैं अपनी आँखें खो कर
शायद खुद को पा जाऊंगा

लेकिन ये शब्दों की नैय्या
तेरी जलती साँसों से भी
कुछ ज़्यादा बोझल लगती है
और मैं बैठा जाने कब से
अपने मुरझाये ख्वाबों के
गजरे यूँ ही गूँध रहा हूँ

میرے ساجن ہیں اُس پار

سوچا تھا شبدوں کی نیا پر اُس پار چلا جاؤں گا
جسموں کے شاداب جزیروں سے بھی آگے
لمحوں کی لہروں کے بھی اُس پار، جہاں پر
خاموشی کے پھولوں کی بھینی خوشبو سے
میری راتوں کے سب تارے
پگھل پگھل کر یکجا ہوں گے، مل جائیں گے
اک ٹھنڈا اندھا کر دینے والا سورج بن جائیں گے
اور میں اپنی آنکھیں کھو کر
شاید خود کو پا جاؤں گا
لیکن یہ شبدوں کی نیا
تیری جلتی سانسوں سے بھی
کچھ زیادہ بوجھل لگتی ہے
اور میں بیٹھا جانے کب سے
اپنے مرجھائے خوابوں کے
گجرے یونہی گوندھ رہا ہوں

हम कितने भाग्यवान हैं कि हमारे साथ विभिन्न भाषाओं के ज्ञाता विद्यमान हैं। चेतना का सदा प्रयास रहा है कि वह नये - नये स्तम्भों को पाठकों के लिए प्रस्तुत करे और अन्य भाषाओं की रचनाओं का हिन्दी के माध्यम से सभी पाठकों को अवगत कराये। इस समय हम उर्दू भाषा को ही प्रस्तुत कर रहे हैं। हमें आशा है कि भविष्य में अन्य भाषाओं की प्रतिभाएँभी चेतना में भाग लेंगी।

दास्ताने - ज़ीस्त

नरेन्द्र नाथ टंडन
(जीवन कथा)

अजब है दास्ताँ, इन्साँ तेरे फ़साने की
एक तरफ़ दौलते - जाँ हासिल
तो दूजे, फिक्र मर जाने की
अजब है दास्ताँ.....

रोज़ ब रोज़ उलझी जावे है, ज़ीस्त यहाँ
कोई तो होगी, कहीं तो होगी?
सूरत इसे सुलझाने की!!!
अजब हे दास्ताँ.....

तमाम उम्र उधार पे गुज़री अपनी
पाँव अब कब्र में लटके
तो फिक्र कर्ज़ा चुकाने की!!!
अजब है दास्ताँ.....

सूद दर सूद चढ़ा आवे है इधर
अस्ल और सूद की किसको है खबर
फिक्र होने लगी हर्जाने की!!!
अजब है दास्ताँ.....

यह घबराहट कैसी,
यह हिचकिचाहट क्योंकर " साहिल"?
क्या, हुक्म सफर - आख़री आया?
घड़ी है जाने की !!!
अजब है दास्ताँ.....

अंर्तद्वंद

नरेन्द्रनाथ टंडन- मुरादाबाद (भारत)

सूरज घूमें अम्बर घूमें , थमा दिखे संसार।
जो दीखे सब सच कहाँ, छुपी जीत में हार।।
मनमा कपट जियामा उलझन मुखपा रंग हजार।
चादर मैली ओढ़े बैठ्ठयो , क्या सज्जा श्रृंगार।।
लालच हियामा घर कियो , सरपे खौ़फ सवार।।
नइया तल्ले छेंद रे, साजन है उस पार।।
शीश नवाऊँ , तुझे रिझाऊँ, सुनियो पालनहार।
मन अधीर मोहे धीर धरियो , कीजीयो नइया पार।।
मानव और ईश्वर के बीच पतरी सी दीवार।
नयन हृदय के खोलिए , मुमकिन हैं दीदार।।
कौन सुने किस्से कहें, सभई यहाँ हशियार।
"निर्मल" चुप भी राखिये, हँसी होइ संसार।।

गज़ल

अजन्ता शर्मा - दिल्ली

सोज़ - ओ - साज़ बिन कैसे तराने सुनते
आमों के मंजर , कोयल के गाने सुनते

न टूटता दम , न दिल , न यकीं , न अज़ां
चटकती कली की खिलखिलाहट ग़र वीराने सुनते

हारकर छोड़ हीं दी तेरे आने की उम्मीद
आखिर कब तलक तुम्हारे बहाने सुनते

क़ैस की ज़िन्दगी थी लैला की धड़कन
पत्थर के बुतों में अब क्या दीवाने सुनते

मेरी फ़ुगां तो मेरे अश्कों में निहां थी
अनकही फ़र्याद को कैसे ज़माने सुनते

बयान -ए- हकीक़त भी कब हसीं होता है
और आप भी कब तक मेरे अफ़साने सुनते

प्रायश्चित (बाल कथा)

राधा गुप्ता (अमेरिका)

कहानी बहुत पुरानी है। तब आजकल की तरह प्रेसीडेंट एवं प्राइम मिनिस्टर नहीं हुआ करते थे। उस समय राजा - महाराजा हुआ करते थे। उसी समय की बात है कि नगर में अक्षम प्रताप नाम का राजा राज्य करता था। उसकी रानी बुद्धिमती बुद्धिमान होने के साथ - साथ बड़ी सहृदय एवं उदारमान थी। राजा अपने विशिष्ट गुणों के कारण प्रजा में (देवतुल्य) पूज्य था।

राजा और रानी एक - दूसरे को बहुत प्यार करते थे। एक -दूसरे का बड़ा सम्मान करते थे। अचानक रानी बीमार पड़ी और बिस्तर से जा लगी। राजा ने बहुतेरा इलाज करवाया किन्तु सब व्यर्थ।

एक दिन बिस्तर में पड़ी हुई रानी की नज़र अपनी छत के नीचे बने एक गौरैया पक्षी के घोंसले में पड़ी। रानी ने देखा कि दोनों नर - मादा पक्षी के बीच गाढ़ी दोस्ती है। दोनों में सह - अस्तित्व की भावना है। दोनों बड़े चाव से अपने बच्चों का पालन कर रहे थे। एक दिन अचानक मादा चिड़िया की मृत्यु हो गई और नर पक्षी अकेला उदास रहने लगा। पर अपने बच्चों के पालन - पोषण में कोई कसर न छोड़ी।

एक दिन वह अपने बच्चों की देख - रेख के लिए एक नई पत्नी ले आया। वह जब अपने बच्चों के लिए दाना - पानी चुंगने जाता तब यह नई पत्नी चोंच मार - मार कर उसके बच्चों को लहू लुहान कर देती। बच्चे चीं - चीं कर दिन भर बिलखते रहते। थोड़े ही दिनों में वे अधमरे से हो गये और एक दिन मर गये। नई पत्नी ने उन्हें अपनी चोंच से नीचे गिरा दिया।

रानी यह देखकर सूखे पत्ते सी काँप गई। उसने अपने दोनों बच्चों को सीने से चिपका लिया और सुबक - सुबक रोने लगी। राजा आये , पूछा ; तुम क्यों रो रही हो? रानी ने पूरा वृतान्त सुना दिया। राजा ने रानी को आश्वासन दिया- " वे दूसरा विवाह कभी नहीं करेंगे।" आश्वस्त हो रानी ने उसी समय दम तोड़ दिया।
राजा अपने बच्चों का बड़ा ख्याल रखते। खुद अपने हाथों से उन्हें खिलाते - पिलाते एवं अपने साथ सुलाते । दिन बीतने लगे । बच्चे बड़े होने लगे। राजा के रिश्तेदार राजा को दूसरी शादी के लिए बाध्य करने लगे। राजा मना करता रहा , मना करता रहा और आख़िरकार एक दिन किसी नज़दीकी रिश्तेदार के दबाव में आकर उसने सुगंधा नाम की लड़की से शादी कर ली।

लेकिन सुगंधा अपने नाम के अनुरूप थी नहीं। राजा के सामने वह बच्चों पर ऐसा स्नेह बरसाती कि राजा मुग्ध हो उठते। और राजा के पीठ फेरते ही वह बच्चों को ऐसे आग्नेय दृष्टि से घूरती कि बच्चे सहम जाते। अंततः बच्चों को अपनी मां की याद सताने लगती।

मां की आत्मा कब तक चुप रहती । एक दिन स्वप्न में राजा से पहली रानी ने कहा- ' राजन ! कैसा झूठा वचन था तुम्हारा । शादी की तो की किन्तु बच्चों का ख्याल तो रख सकते थे ' । राजा बोला - प्राण बल्लभे ! मेरी दूसरी पत्नी सुगंधा बच्चों को ऐसे प्यार करती है जैसे वे उसके अपने बच्चे हों। रानी बोली , झूठ ! कभी पर्दे के पीछे भी झाँककर देखना। सच्चाई का पता लग जायेगा। मैं फिर आऊंगी कहकर अंतर्ध्यान हो गई।

दूसरे दिन राजा का स्वप्न टूटा । वह अन्दर से उद्विग्न रहा, परेशान रहा लेकिन प्रकट में शांत रहा । वह लुक-छिपकर सच्चाई जानने की कोशिश करने लगा। उसका मोह भंग हुआ। सच्चाई सामने आ गई। उसने सुगंधा को बच्चों को घुड़कते हुये देख लिया। उसके इस सुवासित नाम से उसी क्षण उसे दुर्गन्ध आने लगी। उसने सुगंधा से कहा - भद्रे ! तुम्हारे इस दोहरे आवरण की जरूरत नहीं थी। गल्ती तुम्हारी नहीं है। अपराधी तो मैं हूं, जिसने तुम पर विश्वास किया, अपनी पहली पत्नी को दिये हुये वचन को तोड़ा। मैं अपने बच्चों का भी अपराधी हूं , मेरी वजह से मेरे बच्चों का दिल टूटा। वह बच्चों के सिर पर प्यार से देर तक हाथ फेरता रहा।

कुछ दिन बाद वह एकदम शांत हो गया, स्थिर हो गया , उसके निश्चय में दृढ़ता आ गई। उसने अपने राज्य के तीन हिस्से किये । एक हिस्सा अपनी पत्नी सुगंधा को देते हुये उसने क्षमा मांग ली - कल्याणी ! मेरा अपराध तो सिर्फ इतना था कि तुम्हारे विश्वास की छांव - तले मैं अपने बच्चों से विमुख होता गया। दूसरा हिस्सा अपनी पुत्री के नाम कर दिया और तीसरे हिस्से का राज्य उसने अपने बेटे को सौंप दिया। उस अल्प - वयस में ही उसका राज्याभिषेक कर दिया और एक अमात्य की भाँति राजकाज का संचालन करने लगा। यही उसका सच्चा प्रायश्चित था।

दीवारों के कान

नीरज नैथानी- श्रीनगर

गढ़वाल

क्या कहा? दीवारों के भी कान होते हैं!
ये सच नहीं है , मेरे दोस्त।
अगर ऐसा होता
तो कलम से निकली
तेज़ आवाज़,
राजसत्ता की बहरी दीवारों से
टकराकर , खामोश न लौट आती।
ये कानून वाला आदमी
जिसके बदन पर काला जामा है,
और जिसने हाथ में
न्याय का तराजू थामा है।
आँखों पर पट्टी होने बाबजूद,
देख सकता है
सत्ता नशीं बड़े आदमी को।
ये खाकी वाला
रईसी इलाकों पे
हाथ नहीं डालता ।
इसे मालूम है
इनके दामन मैले हैं।
पर उन्हें छेड़ता नहीं।
क्योंकि
सबके तार सत्ता प्रतिष्ठान तक फैले हैं।
सत्ता प्रतिष्ठान तक फैले हैं।

इच्छाओं के वृक्ष तले

भगवानदास लाहोटी - पावेल आहाओ

इच्छाओं के वृक्ष तले बसा यह जीवन संसार।
कोटि नारी पुरुष अनन्त इच्छाएँ चिन्ताएँ अपार।
कोटि पदार्थ कोटि निर्माण कोटि औषधि उपचार।
कैसे भी ये इच्छाएँ पूर्ण हों कर उद्यम यह विचार।

मानव इच्छाओं का पुतला क्रिया का इंधन।
इच्छाओं को लेकर हुआ यों जन्म सुख दुख बन्धन।
इच्छाओं को पूर्ण करने हम निकले यह यात्रा अनूप।
इच्छा पूर्ति है लक्ष्य हमारा इच्छा के अनेक हैं रूप।

कैसे प्राप्त हो पूर्णता इच्छा पूर्ति में बसा सुख संसार।
हम मानते निज को अपूर्ण तभी तो इच्छाएँ हैं अपार।
अनेक भोजन व्यंजन वस्त्र वेश स्वर्णमय आभूषण।
मित्र परिवार बन्धु बान्धव धन समत्ति यों कण कण।

पूर्ण होती नहीं इच्छाएँ बिना लिए पूर्णता का ज्ञान।
हम हैं पूर्ण सत् चित् आनन्दरूप यही सही विज्ञान।
पूर्णता हमारा स्वरूप तब पूर्णता का कैसा अंनुसंधान।
पूर्ण परमात्मा से बना सर्ग पूर्ण पूर्ण का यह पूर्ण ज्ञान।

पूर्ण से निकला विश्व पूर्ण तब भी रहा परमात्मा पूर्ण।
उस पूर्ण के हम पूर्णता है सही ज्ञान यह सम्पूर्ण ।

होली के रँग

कवि कुलवंत सिंह -(भारत)

रंग होली के कितने निराले,
आओ सबको अपना बना लें,
भर पिचकारी सब पर डालें,
पी को अपने गले लगा लें।

रक्तिम कपोल आभा से दमकें,
कजरारे नैना शोखी से चमकें,
अधर गुलाबी कंपित दहकें,
पलकें गिर गिर उठ उठ चहकें।

पीत अँगरिया भीगी झीनी,
सुध बुध गोरी ने खो दीनी,
धानी चुनर सांवरिया छीनी,
मादकता अंग अंग भर दीनी।

हरे रंग से धरा है निखरी,
श्याम वर्ण से छायी बदरी,
छनकर आती है धूप सुनहरी,
रंग रंग की खुशियाँ बिखरीं।

नीला नीला है आसमान,
खुशियों से बहक रहा जहान,
मस्ती से चहक रहा इंसान,
होली भर दे सबमें जान।

होली प्रियतम से

आचार्य संदीप त्यागी(कनाडा)

सात जनम तक भी ना छूटेगा याद रहेगा सारी उमर।
प्रेम रंग में रंग डालेंगे दिलवर तेरे दिल की चुनर।।
कंचन काया पिचकारी की बौछारों से तर होगी।
लाल गुलाल की लाली निराली गोरे गालों पर होगी।।
रंग बिरंगी कर देंगे प्रियतम हम तोरी पतरी कमर।।

भागोगे जो दूर तुम हमसे छम छम पायल खनकेगी।
भीगे अम्बर के अन्दर से देह दामिनी दमकेगी।।
इन्हें रोकने को ज्यों रुकोगे दामन में लेंगे तभी भर।।

खुल कर खेलो होली प्रिये संग मन में उमड़ा भाव अनंग।
नाचो गाओ रंग लाओ अंग अंग उमड़ी उमंग।।
'दीप' नेह के प्यासे हैं हम छोड़ेंगे न कोई कसर।।

ब्रज की होरी

वनीता सेठ - (कैनेडा)

कान्हां ब्रज में रास रचावे,
सब गोपीयन के मन को भावे।
सुन बंसी धुन दौड़ी आवे,
छुप- छुप कान्हाँ के दर्शन पावे।

होरी खेले हैं ब्रजनारी
भर पिचकारी कान्हाँ ने मारी।
रँग बिरंगे रंगों से देखो,
भीजी उनकी चूनर सारी।

खिल - खिल हंसती , छुपती जाती
प्रेम भाव से गोपियाँ सारी।
सब कान्हा की बाट निहारे
मिल जुलकर पल भर से सबही,
प्रेम रंग में रंगे ब्रज वासी,
देखो, खुशी से फूले न समाये।

होरी आई , होरी आई,
रंग बिरंगी होरी आई,
लाल, गुलाबी , पीले हरे रंग संगे,
सबके आँगन में खुशियाँ लाईं।
होरी गाई रास रचायी,
मात यशोदा दौड़ी आई,
हर चेहरे पे मुस्कान है छाई,
होरी की सब ने धूम मचाई।

होली के रंग....

होली

कवि राजेश चेतन- (भारत)

बस्ती भर में हो रहा , होली का हुडदंग
तुम घर में क्यों बैठकर , करते मुझको तंग
पड़ोसन के गाल पे, जैसे मला गुलाल
बीबी का रंग हो गया, कुछ पीला कुछ लाल

एस एम एस शुभकामना , ई मेल से प्यार
इन्टरनेट पर हो रहा , होली का त्योहार

पनघट मुझको घूरता, पानी में है आग
पिया गये परदेश में, कैसे खेलूँ फाग

लगा लिया है मांग में, चुटकी भर सिन्दूर
होली आंगन आ गई , फौजी हमसे दूर

" होली "

ऊषा देव (अमेरिका)

आओ हिल मिल गाएँ आज नदी के तीरे।
झनन् झनन् झन पायल छनके बाजें ढोल मजीरे।
नए रंग लाई रे, होली आई रे ।
जिस गोरी के प्रीतम संग हैं उसकी असली होली।
लहँगा चूनर भीग गये हैं, भीग गई नई चोली।
नज़र ललचाई रे, होली आई रे।

नीला, पीला,लाल, गुलाबी, उड़ा गुलाल गगन में।
बिना पिये ही नशा आ गया , भाँग घुटे आँगन में।
मस्ती छाई रे, होली आई रे।

रंगों का त्योहार यह ऐसा, दुश्मन मीत बनाए।
बिछड़े साजन होली कारण आज लौट घर आये।
गोरी शरमाई रे, होली आई रे।

जिसके साजन दूर बसे हैं, उसकी कैसी होली।
सबको मिले हैं चांद सितारे, उसकी खाली झोली।
सजन हरजाई रे, होली आई रे।

होरी

सुदर्शन ' प्रियदर्शनी' - (अमेरिका)

रंग रंग
अंग अंग
गुलाल कियो रे
अनंत परंत....
युगोपरन्त
देखी तुम्हारी छवि
मेरे तो तन मन
संवार गइयो रे...।

कैसी है होत होरी
कैसे होरी के रंग रे
मेरे तो तन मन रहे
भौरे के भौरे रे...।

मीठी रतनार छवि
देखी न सुनहुं कबहुं
आज तनह मनह
जादयू डार गइयो रे.....।

एक ही तेरी
झलक....
मन में उमंग
तन में तरंग
के कैसे कैसे
रूप.... उतार गइयो रे...।

यौवन के आस पास
उगा उल्लास हास
तन मन मेरा
आज ...
हुल्लै हुल्लस गइयो रे.....।

मन में उठी तरंग
हृदय की भाखा संग
सारे गुलाल रंग
जन्मजात पात पात
मेरे कपोल गात
रंगई रंग गइयो रे....।

रंग होली के

निर्मल सिद्धू - (कैनेडा)

रंग नहीं होते हैं केवल रंग होली के
प्रेम निरा होते हैं केवल रंग होली के

प्यार मुहब्बत वफ़ा दोस्ती रंग होली के
देते पल पल यही संदेशा रंग होली के

रूह को रंगारंग करें दिल को करें रंगीला
राहे ज़िन्दगी रंगी करते रंग होली के

तक़रार , अदावत , नफ़रत और रंजिश
राख जलाके सबको करते रंग होली के

करते मौसम को ये रंगी, रंगे बसंती से
खुशियों की सौग़ात हैं लाते रंग होली के

हर धड़कन में, घर घर के आँगन में
पैग़ाम एकता का दे जाते रंग होली के

जल्द नशा न उतरे इन मतवाले रंगों का
इतना दिल में जोश हैं भरत रंग होली के

भूल न जायें कहीं अपना वो चलन पुराना
हर साल हमें ये याद दिलाते रंग होली के

खुद को रंगले आज खुदी के रंग से ' निर्मल'
मानो न मानो तुम, ऐसे हैं ये रंग होली के

एक नया काव्य संग्रह जिसमें जीवन के अनेकों रंगों का समिश्रण है मुझे प्राप्त हुई।

होली की बोली

किरन सिंह- (बनारस)

जिस पैंट और
टी शर्ट में,
घूम रही थी एक गोरी,
नाम पूछा तो
बोलती है,
है वो बोली।
मैंने पूछा, तो बताओ
कहाँ है रंग,
कहाँ है गुलाल?
सुन ये वो हँस पड़ी,
और बोली-
नीली है जींस
पीली है ये टी शर्ट,
सुर्ख हैं मेरे गाल,
क्या नहीं दिखते तुम्हें
रंग ये लाल?

अरे वो नासमझ
इक्कीसवीं सदी है ये
समय का है अभाव
रंगों का ऊँचा है भाव
पर्यवरण प्रदूषण मुक्ति
आंदोलन का है ये प्रभाव,
केबल के रस्ते
अब हो रहा है
रंगों का बहाव,
इठला कर होली ये बोली,
खेल रहे हैं लोग अब केवल
साईबर होली।

इस आधुनिक युग में
दूरियाँ तो गयी हैं घट,
पर फाँसला दिलों
का बढ़ गया अब,

रफतार की इस दुनिया में
होली अपना महत्त्व खोने लगी,
और सोच अपने भविष्य को,
होली की आँखें नम होने लगीं।।

होली के कविसम्मेलन में एक महानकवि से परिचय :

सुरेन्द्र पाठक- कैनेडा

होली के एक कवि सम्मेलन में, हमें मिले एक कवि महान
सुनकर उनकी सुन्दर कविता, कर ली उनसे जान पहचान
उच्च कोटि के लगते थे वे, थी उनकी शान निराली
सफेद लंबी अचकन पहने, और थी सरपर टोपी काली
कपड़े ऐसे महक रहे थे, खुली हो जैसे इतर की बोतल
लम्बे बाल और मोटी मूँछें, तन जरूरत से ज्यादा बोझल

माथे तिलक, मुँह में पान , सीने पर था गुलाब का फूल
देख इन्हें यूँ मन में आये, छू लूँ इनके चरणों की धूल
उनकी कविता सुनी तो सोचा , इनको अपने घर बुलबाऊँ
खुद को भाग्यवान मैं समझूँ, कुछ सेवा इनकी कर पाऊं
साहस करके नम्र भाव से , उनसे बोला फिर मैं जाकर
मुझको भी आकार्थ कीजिये, मेरे घर में एक दिन आकर

किया स्वीकार मेरा निमंत्रण, तो हुआ मन अति प्रसन्न
फैल गई मुस्कान लबों पर, कहा प्रभु जी हैं आप धन्य
बात - बात में हो गया निश्चित , आने वाला ही रविवार
हफ्ता अबकी हो गया लम्बा, कर के उनका इंतज़ार
ठीक समय पर कवि जी पहुंचे, यद्यपि उस दिन थी बरसात
बिना सवारी पैदल पहुंचे ,रखने को वे अपनी बात

भीग गए थे कपड़े उनके, भले था सिर पर छाता ताना
मौसम कवि को रोक न पाये, जब कविता पढ़ने हो जाना
जूते कीचड़ से सने थे , भीग गई थी उनकी धोती
पर सँभाल कर दबा रखी थी, बगल में कवितओं की पोथी
हमने करने उनका आदर , अपना कमरा खुब सजाया
दरवाजे से सोफे तक मैने, एक नया कालीन बिछाया

और सोफे पर डाली हमने, एक नयी नर्म सफेद चादर
सोचा आदर्श कवि महोदय ,बैठेंगे अब इस पर आकर
लगे कवि जी हमसे कहने, बुलवाया तुमने आ गये आज
और कोई होता तो हम ना आते, तबियत थी अपनी नासाज
बार - बार वो नाक को पूँछे, घड़ी घड़ वो मारे छींक
हमने कहा प्रभू जी आप, ना ही आते तो था ठीक

जैसे कवि ने जूते खोले, मैने साफ किया सब कीचड़
कोस रहे थे हम मौसम को , कैसे करदी इसने गड़बड़
हमने कहा, उतारो धोती, मैं इसको अभी सुखा देता हूं
इतनी देर में अपना पैजामा , मैं आपको ला देता हूं
जाने धोती के नीचे क्या था , उन्होंने इसे नहीं उतारा
हमने सोचा कि अब तो सोफा, गीला हो जायेगा हमारा

दरवाज़े से सोफे तक थे , उनके चरणों के निशान
पहली बार जब आये दुलहन , वह भी करती ऐसा ही काम
वह पदचिन्ह लाल होते हैं, ये पद चिन्ह थे मैले गीले

दिल ने कहा दड़ बट ले, कुछना बोल लबों को सी ले
हाथ जोड़कर फिर हम बोले, इस सोफे पर आप पधारें
होता गीला हो जाने दो , ऐसा ना कुछ आप बिचारें

पहले हाथ से सोफा परखा, फिर उसमें गिर गये धड़ाम
हमें लगा कि अब सोफे का ,हो जायेगा काम तमाम
कुछ ऐसी आवाज़ें आईं, जैसे सिप्रिगों में हुई लड़ाई
यदि यह सोफा , टूट गया तो, पत्नी करेगी मेरी खिचाई
फिर कवि ने लम्बा साँस लिया, और मुझे धन्यवाद किया
कहा, तुम सुनने वालों ने ही , कवियों को आबाद किया

कौन सुनता है कवियों को , जब से चला है , सिनेमा , टीवी
नहीं फुरसत कविता सुनने की , कह देती है अपनी ही बीबी
कवि सम्मेलन में बोला करेंगे , या कवि या आकर उल्लू
जो आयेंगे उठ जायेंगे , जल्दी अपना झाड़ पल्लू
थोड़े बहुत जो आज आते हैं, निमंत्रण पाकर ही आते हैं
या आने पर पछताते हैं , नहीं तो आकर सो जाते हैं

कभी - कभी वहीं बैठे रहते , जिसने कहनी होती कविता
औरों की सुन अपनी न कहें ?कवि को ऐसा नहीं जचता
कुछ आजकल कवि वेचारे , जब कविसम्मेलन में आते हैं
अपनी जेब से पैसे देकर , साथ में हिजड़े लाते हैं
अपनी अपनी कविता पर वे, बजवा लेते उनसे ताली
आगे पीछे मुड़ मुड़ देखे, वहाँ उनकी घरवाली

ऐसी कविता पर भी ताली? किस प्रकार के ये श्रोता हैं
अच्छी बुरी हर कविता का, इन पर असर एक सा होता
इन हिजड़ों की देखा देखी ,और भी देते इनका साथ
एहसान दिखाते हैं कवियों पर, जैसे उनके घिस गये हाथ
चीनी सीखेंगे अब हिन्दी, वही बनाया करेंगे कविता
किसमे दम है जो बेचेगा , यह प्रोडक्ट भी उनसे सस्ता।

उभरते लेखक :

सन्देश मिला

वास्ती राम घई - (कैनेडा)

इस जीवन की टेढ़ी मेढ़ी राहों पर,
सोच समझ कर चल प्राणी।
पाँव जो फिसला इक बार,
संभल न सकेगा कई बार।
रावण था राह से भटक गया,
राम के बाणों का निशाना बना।
सोच समझकर पग धरो- नर नारी,
यह देश बिगाना है।
वास्ती कहता हिन्दी चेतना पढ़ा करो,
कविताओं का आनन्द उठाया करो।

हँसी - मज़ाक, नोक - झोंक
(साहित्यकारों के किस्से)
रमेश शौनक

एक आदमी ने टोपी उल्टी पहन रखी थी यानी वाइज़र पिछली तरफ था और बटन वाला फीता आगे उसके माथे पर था। मजाज़ लखनवी ने उस आदमी को रोककर पूछा, " अरे भाई, तुम आ रहे हो कि जा रहे हो?"

****

जोश 'मलिहावादी' और मजाज लखनवी शरब पी रहे थे। जोश साहब ने मजाज़ से कहा , " भाई , मैं तो घड़ी रखकर पीता हूं।" मजाज़ ने जवाब दिया , " मैं तो घड़ा रखकर पीता हूं।" मजाज़ लखनवी का परिचय उर्दू के शायर अब्दुल हमीद ' अदम' से कराया गया। ' अदम' का अर्थ है ' जिसका अस्तित्व न हो '। ' अदम ' अच्छे खासे दुहरे बदन के व्यक्तित्व वाले थे। छूटते ही मजाज़ ने कहा , " अगर यह अदम है तो वुजूद ' कैसा होगा? वुजूद का अर्थ है ' अस्तित्व'

****

उपेन्द्रनाथ अश्क ने नीलाभ प्रकाशन नया नया खोला था। एक बार ' अश्क' जी किसी कालेज में कवि सम्मेलन के लिए गए। कवि सम्मेलन के बाद ' अश्क ' जी धर्मवीर भारती से बतियाते हुये हाल से बाहर जा रहे थे। एक लड़की ने अपनी आटोग्राफ बुक उनके सामने कर दी । ' अश्क ' जी ने उसमें लिख दिया : " पुस्तकें ख़रीदकर पढ़ें।" और अपने हस्ताक्षर कर दिए। लड़की ने वही आटोग्राफ बुक धर्मवीर भारती के आगे बढ़ा दी। धर्मवीर भारती ने सामने वाले पृष्ठ पर लिख दिया ।

मिलने का पता-
5 खुसरो बाग रोड
इलाहाबाद (नीलाभ प्रकाशन एवँ अश्क जी के घर का पता)

****

उर्दू के बुजुर्ग शायर, 'रविश सिद्दीकी' की पत्नी का देहान्त हो गया था। सभी दोस्त लोग मातमपुर्सी करने आए हुये थे। एक ने उन्हें धीरज बंधाते हुये कहा कि आप दूसरी शादी तो करेंगे ही। जल्दी क्यों नहीं कर लेते? ग़म ग़लत हो जायेगा।'रविश' साहब ने बड़ी संजीदगी से कहा, ' हाँ शादी तो करूंगा लेकिन चाहता हूं किसी बेवा(विधवा) से करूं।'

मजाज़ लखनवी ने बड़ी संजीदगी और सहृदयता से कहा, " भाई जान , आप शादी कर लीजिये , वह बेचारी खुद ही बेवा हो जायेगी ।"

****

मजाज़ लखनवी दोस्तों के साथ बैठे शराब पी रहे थे । बाहर एक जुलूस निकल रहा था मुस्लिम लीग का। मुस्लिम लीग के लोग हरी बैकग्राउन्ड वाला झंडा लिए जा रहे थे , जिस पर चाँद और तारे का निशान था। खिड़की से बाहर देखते हुये ' मजाज़ ' लखनवी बोले, " यह लोग हरीचंद अख्तर को कहाँ उठाए लिए जा रहे हैं?"

****

अब हंसने के लिए:

कनिका सक्सेना,
(कनाडा)

1. भीड़ को चीरते हुये एक्सीडेन्ट देखने पर उत्सुक युवक - हटो भाई मुझे भी देखने दो, जिसका एक्सीडेन्ट हुआ है, मैं उसका भाई हूं। लोगों ने उसे रास्ता दे दिया। कुत्ता मरा पड़ा था।

2. पुत्र - पिता जी मुझे ढोल खरीद दीजिये।

पिता- तुम ढोल बजाकर मुझे तंग करोगे।

पुत्र-मैं तब बताऊंगा , जब आप सो जायेंगे।

3. पापा - बेटा विदेशों में 15 साल के बच्चे अपने पैरों पर खड़े हो जाते हैं।

पुत्र- भारत में तो एक साल का बच्चा भागने लगता है।

4. सेठानी - (नौकरानी से) क्यों महारानी आज आने में इतनी देर क्यों लगी?

नौकरानी- मैं सीढ़ी से गिर गई थी।

सेठानी- तो क्या उठने में इतनी देर लगती है।

5. आइसक्रीमवाला- एक बार खाओगे तो 100 बार खाओगे।
बच्चा- मुफ़्त में खिलाओगे तो 1000 बार खायेंगे।

होली गीत

भारतेन्दु श्रीवास्तव (कैनेडा)

अब तक हुई सो होली
सँभल अब खेलो होली।
वर भावना विस्मृत कीन्हीं
प्रेम की अँखिया खोली
सँभल अब खेलो होली।
ऊँच नीच बड़ौ न छोटौ,
सभी समान हमजोली;
बरन जाति को ना भेदा भाव,
सब रंगन की रंगोली;
सँभल अब खेलो होली।
पिचकारियों से छुड़त है फुहार,
लाल हरी नीली पीली;
सँभल अब खेलो होली।
अब तक हुई सो होली
सँभल अब खेलो होली।

इस होली पर

राज महेश्वरी (कैनेडा)

ओ! कवि इस होली पर ऐसा गीत रचो
जो देश को सुदिशा दर्शाहे।

देश पे मर मिटने की चाह जगाहे
सुप्त हृदयों में फिर से जोश जगाहे
देश प्रेम से ओत प्रोत अब सबको करहे
नव पीड़ी को नयी दिशा फिर इंगित कर दे।
ओ कवि .....
याद दिलाये बलिदानों बिन कुछ नहिं मिलता
मेहनत मजदूरी के बिन कुछ हो नहीं सकता
जिनके लिये लड़े बलिदानी जीवन देकर
इज्जत और इमान पुनः स्थापित करहे।
ओ कवि.....
भ्रष्टाचारी नेताओं को बंदी कर वादे
देश द्रोहियों को शूली पर चढ़वादे
बिन क्षण दरी अब जनता को मुक्ति करा दे
चरणों में भारत माँ के माथा टिकवादे।
ओ कवि.....

खेतों में लह - लह हरियाली को लह दे
खत्ती खलिहानों में अन्नों के भंडारे भर दे
सारे भारत को एक उथानी जीवन दे - दे
खुशहाली से माँ का सुन्दर आँचल भ दे।
ओ कवि.....

होली के दिन

ब्रज कश्यप (कैनेडा)

होली के दिन होली आई, ज़रा बाजे बाँसुरी
मेरा सँदेसा कोई उनसे कहना
मेरी याद आई रे, ज़रा बाजे बाँसुरी

गोकुल , वृन्दावन , मथुरा की
सभी होलियाँ याद करा दो
जहाँ नाचते कृष्ण - राधिका,
गोप- गोपियाँ सारे मिलकर
कभी नाचते दोनो भाई
गिरधर के संग नाँचे हलधर
तुम भी खेलो जमकर होली और बजाओ बाँसुरी
होली के दिन होली आई रे, ज़रा बाजे बाँसुरी

द्वापर युग की सभी होलियाँ
लोगों को तुम याद करा दो
जहाँ नाचते राधा - माधव
प्रेम बांसुरी बजा - बजाकर
और नाचते दोनो भाई
मिलकर पीताम्बर - नीलाम्बर
तुम भी नाचो गाओ मिलकर और बजाते रहो बाँसुरी
होली के दिन होली आई रे , ज़रा बाजे बाँसुरी
मेरा संदेसा कोई उनसे कहना
फिर से तेरी याद .....

होली का त्योहार

राज कश्यप (कैनेडा)

लाया रंगों का बैछार
याद दिलाता आज मुझे यह
बरसों पहले खेली होली
अपने घर की होली आज
देवर सारे छैल छबीले
होली के दिन सारे मिलकर
हल्ला गल्ला खूब मचाते
सभी भाभियाँ भी मिलकर
, देवर जी कहकर
तरह- तरह के काम करातीं
घड़ी - घड़ी बाजार दौड़ाती
गोदी का लल्ला खिलवाती
और पालना भी झुलवाती
खुद भैया के संग शाम को
सजकर फिल्म देखने जातीं
देवर से बेबी सिटिंग कराती

देवर ने कहा होली पर
भाभी गुझियाँ खूब बनाना
खोया, मेवा सभी डालना
झट से बोली देवर जी
तुमको तो डाइटिंग करनी है
अच्छी सी दुलहिन लानी है
क्या भैया सी तोंद बढ़ानी है
उल्टे देवर से मिठाई मंगवाई
खुद चटखारे लेकर खाई
देवर ने जब करी शिकायत
सुनकर मम्मी भी हँस देती
और भाभियों को झट मिलती
देवर ने फिर भरी बाल्टी
काला नीला रंग बनाया
भाभी के ऊपर उल्टाया
इसी तरह नहले पर दहला
देवर ने भी कर दिखलाया।

हिन्दी चेतना को जो पुस्तकें प्राप्त हुईं....

1) पुस्तक अनुभव अनुभूतियाँ
लेखक- अभिनव शुक्ल
प्रकाशक- पांडुलिपि प्रकाशन , दिल्ली - भारत

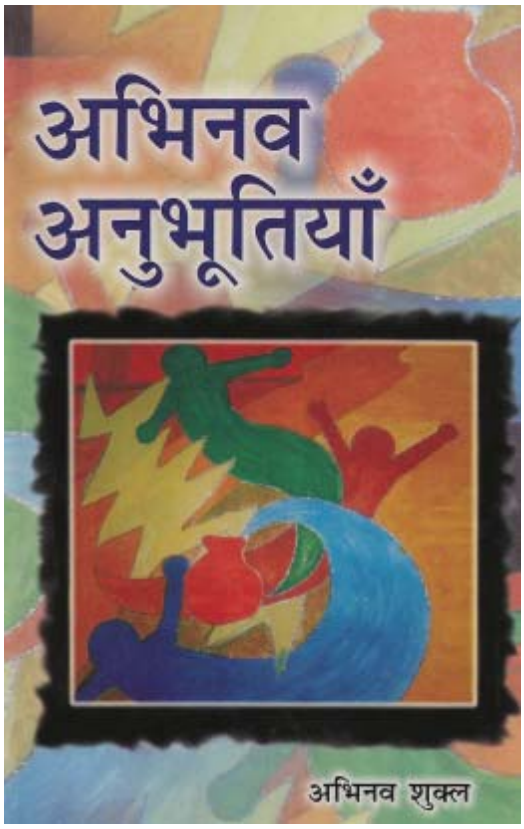

2) पुस्तक - मुट्ठी भर धूप
लेखिका- रेखा मैत्र
प्रकाशक- वाणी प्रकाशन , दिल्ली -भारत

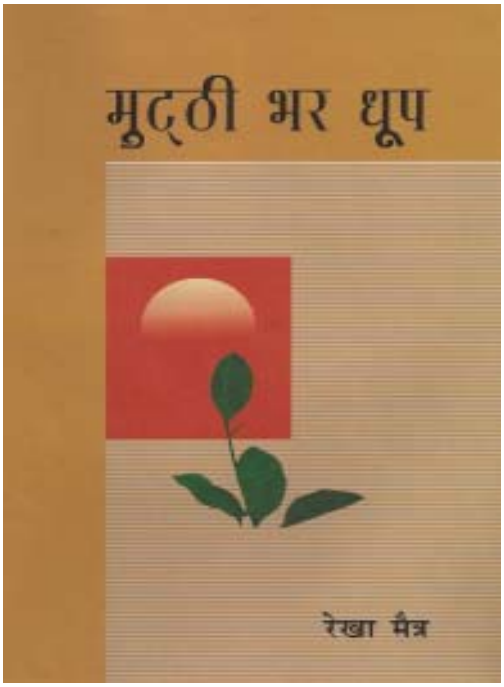

3) पुस्तक- आस्था के अक्षत (कविता संग्रह)
लेखिका - श्रीदेवी त्रिपाठी
प्रकाशक- शब्दायन , बैगंलोर- भारत

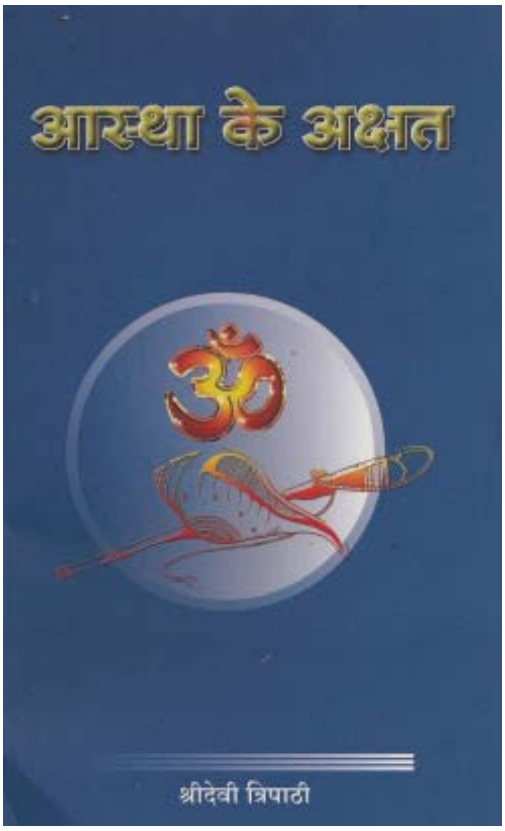

SUBZIMANDI
Middlefield Supermarket

All kinds of Indian Groceries, Masalas, Sweets
Fresh Vegetables and Fruits

Sales & Rental DVDs, Videos
Magazines, Newspapers, Audio CDs
Variety Store, Lottery,
Postal Stamps, All Disposable Items
& Snacks

900 Middlefield Road, Scarborough, Ontario (Across from Guruduara)
Telephone: (416) 754-0033

A1 Sweets & Restaurant

Take-out
Dine-In
Catering

100% Vegetarian Indian Cuisine

"...Where everything is A-1!"

Appetizers Main Dishes Side Orders Indian
Breads South Indian Specialties Namkins
Sweets Desserts Beverages

3300 McNicoll Avenue
(McNicoll & Middlefield)
Near Scarborough Sikh Temple

416-299-9424
1-866-422-1322

चेहरों की दुकान

रमेश शौनक

चेहरा चाहिए हुज़ूर ?

सभी भाँति के चेहरे हैं हमारे पास
हिन्दुओं के लिए चेहरे
मुसलमानों के लिए चेहरे
सिक्खों के लिए चेहरे
क्रिस्तानों के लिए चेहरे

और किसी जात का चेहरा दरकार हो तो
मँगवाए देंगे
हिन्दुस्तान से या पाकिस्तान से
नहीं तो चीन या जापान से
बनवाय देंगे

ये चेहरा मैच करेगा आपकी बीवी के ज़ेवरों के साथ
ये वाला मैच करेगा उनके तेवरों के साथ
बहुत पापुलर है, सेल पर है
यह वाला देसियों के सामने बड़बड़ाने लगता है
गोरों के सामने मिनमिनाने लगता है
यह वाला अज़माइएगा
वतन से आए शरीकों के सामने
यह वाला ख़ालिस अमरीकनों के सामने

यह वाला स्पैशलसेल पर है क्यूँकि लौटाया हुआ है
दरअसल कुछ तरेड़ खाया हुआ है
बात यूँ हुई कि ये चेहरा था बहुत संजीदा
इसको पहनके साहब ने रसेदार जोक सुन लिया
बहुत ज़बर किया पर उनकी हँसी छुट गई
और उनके चेहरे में दरार फूट गई

इस वाले पहन के पापी कामी भी स्वामी कहलायेंगे
इसको पहन के पाजी भी हाजी नज़र आयेंगे
यह वाला सुपरफ़ाइन है
इसे पहन के मुसकुराइएगा नहीं
गुनगुना बेशक लें पर गाइएगा नहीं
चिरौरी सुनने पर चमक जाता है
सच्ची बात सुनते ही फीका पड़ जाता है
यह शरीफ़ाना चेहरा चोरों के लिए है
यह वाला सीनाज़ोरों के लिए है
यह चेहरा भंड का है
यह वाला पाखंड का है।

मगर एक बात कहूँ साहब
यारों के सामने
प्यारों के सामने
बच्चे के सामने
रब के सामने
जो चेहरा भगवान का दिया हुआ है,वही सही है
और अगर ज़रूरत हो दीगर चेहरे की
तो हम मँगवायदेंगे, अपना तो बिज़नेस यही

शिक्षा के दीप जलाओ

सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' (नार्वे)

अब स्वदेश की धरा पर
रह न जाये अपढ़ कोई।
जो लोग पढ़ नहीं पायें,
जब साक्षर उन्हें बनायें।

जहाँ जंगल कट रहे हैं,
नये पौधे हम लगायें।
हम धुँआ भी कम उड़ायें,
साफ पर्यावरण बनायें।।

जल वायु भी साफ होगी
अब पानी नहीं बिकेगा।
कभी देश की जनता को,
अब कोई नहीं छलेगा।।

लोकसभा में रोको भी,
हवा पानी को बेचना।
अमीरों पर कर लगाकर,
तुम गरीबों को बाँटना।।

मिलों-कारखानों नालों
का पानी साफ करो ना।
नदियों में मिलता मलबा,
जनता पर कृपा करो ना।।

जनता बीमार रहेगी
वह समाज कैसा होगा?
सोने-चिड़िया भारत का,
उद्धार भला क्या होगा?

धरा स्वदेश की मुझको
हर पल धड़कन बन जाती।
कंचन मुखरित आभामय
मधु शौर्य गीत सुनाती।

अपनों में व्याप्त अशिक्षा,
अभाव, विषमता कम हो।
आपस में सुख को बाँटें,
करुणा में आँखें नम हों।।

अन्तर में स्वच्छ हृदय हो
चहुओर प्रगति की जय हो।
माटी उपजाये सोना,
समीप कभी नहीं भय हो।।

हम उत्तर के प्रवासी,
मानो अनजान पथिक हों।
मौसम के पंछी जैसे,
चलते रहना जीवन हो।।

राजा का मान तभी है
जनता सुख से सोती हो।
दर्पण सी पारदर्शिता
चन्दा सा मुख धोती हो।।

तुम करते हो आवाहन,
हम बानर सा जुट जाते।
निर्माण देश का होगा,
हम आहुति देते जाते।।

जन्म दे रही भूखी,
भारत की लाखों 'सीता'?
लव कुश को दूध पिलाकर,
भूकर्ज ओढ़ती रीता।।

जब लव कुश ही भूखे हों,
द्रवित हृदय सीता का।
भारत के भावी शिशुओं,
हो कान्धा भारत का।।

जब श्रम से पेट भरे ना,
उपवास करे क्यों जनता?
कब घर-घर फैलाओगे
परिवार नियोजन शिक्षा?

हम नाम ईश का लेकर,
बच्चे जनते जाते हैं।
बहु बच्चों के कारण क्या
पालन-पोषण कर पाते?

सीखें सीमा में रहना,
कर्मों से विमुख नहीं हों।
संतुलन अगर बिगड़ा तो
हम सब भी कुशल नहीं हैं।।

इस जीवन की नौका में,
हम लघु परिवार बनायें।
परिवार साथ सब रहकर
अपनेपन का सुख पायें।।

जब-जब अभाव निर्धनता,
मानवता को घेरेंगे।
तब-तब प्रकाश शिक्षा का,
मार्ग प्रशस्थ करेंगे।।

चित्रकाव्य-कौशल

1
हम ऊँट के खानदानी तो है ज़रूर,
पर ऊँट की तरह गुलामी नहीं मंजूर,
बोझा ढोने के लिए हम नहीं मजबूर,
क्योंकि, अपने रंगों पर है हमको ग़रूर
हरीबाबू जिन्दल, बुई मेरीलैंड, अमेरिका

2
यह कैसी भूल भुलैय्या है,
कोई हमें समझाए तो -
कितने पशु छिपे हैं इसमें,
कोई हमे बतलाए तो।
या फिर अधुनिक कला का है यह कोई अजूबा।
हाथ, मुँह, सिर पे बिना यह रह गया अनबूझा।।
उषा देवा, नॉर्थ कॅरोलैना, अमेरिका

3
लाल बुझक्कड़ बूझेयो, और न बूझै कोय।
जंगल मे पशु-पक्षियो का भला सम्मेलन होय।
गधा, घोड़ा, जिराफ, बन्दर सब आए थे फर्श पर।
भीगी बिल्ली बन गए, लोमड़ी की तर्क पर।।
महेन्द्र देव, नॉर्थ कॅरोलैना, अमेरिका

4
क्यों दी हमको लम्बी गर्दन?
सोंच रहे हैं चार जिर्राफ
उस ईश्वर ने साथ हमारे
किया नही अच्छा इन्साफ
झाड़ों में हम छुप नहीं सकते,
दूर से देख लेते दुश्मन
घनें पेड़ों से होकर भागें,
घायल हो जाता है सारा तन
उनमे से एक सिनियर बोला,
यदि अकल नहीं तो रहो खामोश
ईश्वर ने हर शै सही बनाई,
मूर्ख ही देते हैं दोष
लम्बी गरदन के ही कारण
दूर से लें दुश्मन पहचान
इन लम्बों टांगों से दौड़कर
बचा लेत हैं अपनी जान
ऊंचे नर्म पेडों के पत्ते
सबसे पहले हम ही खाते
होती गर्दन अपनी छोटी,
कैसे उन तक पहुंच हम पाते
सुरेन्द्र पाठक, कैनडा

5
रम्य प्रकृति अंचल में घटा जिराफ निराली।
प्रभु प्रदत्त रेंखाओं की, सुषमा अनुपम जानी।।
सुगल जिराफ शांत है बैठा, ऊंची उठी एक की गर्दन।
दूरस्थ देखता हो जैसे, बोली भी उसकी मन मोहन।।
स्वर में भी है संकेत सदा, सुन सचेत हो जाते वनचर।
सिर ऊंचा रख जियो जगत में, जैसे कहता हो निज स्वर।।
डा. जमुना प्रसाद बड़ैरिया (मथुरा, भारत)

कवि का मूड जब चाहे तब कविता बन जाती है। ऐसे कुछ कवियोंने चेतना में प्रकाशित हुए पुराने चित्रोंपर रचना भेजी है। ऐसी रचनाओं का भी है स्वीकार।

हँसता है नर क्षीण, असुन्दर जर्जर पंजर काया।
वस्त्रहीन तन मुखमंडल पर नहीं दुःख की छाया।।
भद्र पुरुष सम्पन्न सभी विधि मंद-मंद मुस्काता।
सुख-दुख में प्रसन्न चित्त हो यही चित्र दरसाता।।
लख्खूराम चहवरिया (भारत)

जय बजरंग लिखा रिक्शे पर यह दरसाता है -
जाय बसे परदेस हृदय में देश समाता है।।
भूले नहीं संस्कृति अपनी श्रम से नाता है।
युगल सवारी खींच सहज ही बढ़ता जाता है।।
पलट-पलट कर देख रहे वे पीछे वालों को।
जिन पर कृपा पवन पुत्र की कौन हराता है।।
लख्खूराम चहवरिया (भारत)

■ चित्रकाव्य-कार्यशाला

इस चित्र को देखकर आपके मन में जो भी भाव आयें उन्हें अधिक से अधिक छः पंक्तियों के अन्दर व्यक्त करके भेजें।

Personalized Investment Advice

For individual Investors

Member CIPF

Edward Jones®

Serving Individual Investors

Harvinder Anand
Investment Representative

- GICS
- Bonds
- Stocks
- Mutual Funds
- RRSPS RRIFS RESPS
- Life insurance
- Disability Insurance
- Critical Illness Insurance

INSURANCES AND ANNUITIES ARE OFFERED BY
EDWARD JONES INSURANCE AGENCY

Phone No: 905-472-8300 www. edwardjones.com

280 Elson St. Unit # 5, Markham, Ont. L3S 3L1

RIPDUMAN (PAPU) LAMBA
Sales Representative

Cell: (416) 357-8748
Tel: (416) 299-1488
Fax: (416) 299-1308
Email: rlamba@trebnet.com

2400 Midland Ave., Unit 101,
Toronto, M1S 5C1

Century 21
Formula Realty Inc.
Independently Owned and Operated

पुस्तक समीक्षा
'समय के साये'

समीक्षक - श्रीनाथ प्रसाद द्विवेदी
अध्यक्ष, हि.सा.परिषद कैनेडा

'समय के साये ' श्री हरदेव सोढी ' अश्क' जी का यह दूसरा काव्य संग्रह है जिसमें उनकी 108 गज़लें और चंद अशआर संकलित हैं। इसका मुद्रण विश्वास सेल्स प्रा. लिमिटेड चंडीगढ़ से हुआ।

ग़ज़ल के इन्द्रधनुषी रंगों और खुशबुओं में डूबा एक नाम है हरदेव सोढी 'अश्क' जिनकी रचना यात्रा को गत दस वर्षों से नज़दीक से देखा, जाना और पहचाना है। उनका ग़जल पढ़ने का अपना अंदाज़ है जिसमें गहराई और स्वाभाविकता है जो दिलों के तारों को अनायास झंकृत करता है।
यह अश्क जी का दूसरा संकलन है ' समय के साये' जिसमें उनकी अधिकांश ग़ज़लें हैं। वह एक अनुभव सम्पन्न तथा संवेदनशील कवि हैं। उनकी शायरी विभिन्न डगरों तथा पड़ावों को पारकर इन्सानियत के राजमार्ग को प्रशस्त करती है । वाकई में अश्क जी ने अपने तजुर्बे को सहज तथा आकर्षक अल्फाज़ की सितारों वाली चुनरी पहनाई है, उसका रुचि कर श्रृंगार किया है इसलिए उनकी शायरी में अपनापन और सम्मोहन है। वे वैंकुअर सहरे सुखन की ऐसी शख्सियत हैं जिन्होंने पिछले कई सालों में अपनी शायरी के बल पर काफी शोहरत और सम्मान हासिल किया है । काव्य सृजन आपका शौक है व्यापार नहीं ।

अश्क जी की रचनाएँ स्थानीय रेडियो और टेलीविज़न में प्रसारित होती रहती हैं। यही नहीं उनका एक गीत सलोनी सीरियल में भी चर्चित रहा है। विचारों की दृष्टि से उनकी रचनाओं को हम चार भागों में श्रेणीबद्ध कर सकते हैं। - दार्शनिक, परम्परागत, सामान्य और व्यक्तिगत।

यह मेरा विश्वास है कि दार्शनिक मतमतान्तर और शास्त्रगत सिद्धान्तों की दुरुहता और जड़ता से कहीं हट कर उन्होंने अपने जीवनगत अनुभवों के प्रकाश में उन तथ्यों को उजागर किया है जो सामन्य व्यक्तियों को भी बोधगम्य होंगे।

जीवन कभी परमशक्ति की खोज में यूँ ही बीत जाता किन्तु उसका साक्षत्कार सम्भव नहीं हो पाता , इसके बावजूद कहीं न कहीं आशा की किरण टिमटिमाती रहती है। अश्क जी ने इस दिशा में आशा के भाव को इन पंक्तियों में बखूबी ढाला है-

गुजर गई सारी उम्र रब की तलाश में
रह गया है अब तो इन्तजार ज़रा सा।

अश्क जी इस बात को लेकर दुखी हैं कि दुनिया में लोग ईश्वर के नाम को लेकर आपसी बैर तथा नफरत की आग भड़काते हैं जबकि ईश्वर नाम और संबोधनों से परे है। वे कहते हैं -

उसे राम कहो ईश्वर अल्लाह, वो न कोई अन्तर करता है।
इसके आगे वे यह कहना भी नहीं भूलते-
हर तरफ है नाम उसका देखें जहाँ जहाँ
उपरोक्त पंक्तियों में ' एक सत्यं वद् विप्रा बहुधा वदन्ति , तथा ईश्वरी सर्व भूतानाम्' शास्त्रोक्तियों की गूढ़ता को सरल शब्दों में अंकित करना अश्क जैसे सफल कवि द्वारा ही सम्भव है। अश्क जी धर्म के संकुचित तथा सीमित घरौंदों से सभी को बाहर निकलने के लिये प्रेरित करते हैं जो उनके लोककल्याणत्मक दृष्टिकोण का परिचायक है। उनके विचार हैं-

जो खुदा सब बंदों का ऐसा खुदा पैदा करो
अथवा
राम,रहीम जल गये दोनों
धर्म का बवाल आ गया यूँ ही।

वे हिन्दुस्तान तथा पाकिस्तान देशों के मध्य बढ़ रहे शत्रुगत ज़हरीले सम्बन्धों को लेकर चिन्तित हैं वे शान्ति और मैत्रीभाव के पक्षधर हैं तभी तो कह उठते हैं-
आओ मसलों का हल ढूंढ़े
आखिर तो भाई भाई हैं।
अथवा
तूफां ऐटम का ना मांगे बीसा
उधर लाहौर इधर अमृतसर

मानवता का बोध हमें तमाम धर्म,संस्कृति और राजनीति की सीमाओं से मुक्त करता है। यही कारण है कि अश्क मानवीय मूल्यों की रहनुमाई करते थकते नहीं। उदाहरणार्थ ' बामिया के बुद्धा ' में अफगानिस्तान में प्राचीनतम बुद्धा की मूर्ति को तालीबान द्वारा तोपों से नष्ट किये जाने पर अश्क ने अपना दुख और आक्रोश व्यक्त किया है।

बुत कितने गिराओगे खुदा के बंदे
गिराते गिराते बुत बन जाओगे खुदा के बंदे।

उसी प्रकार ' सुनामी ' में हुये जन - धन के अप्रत्याशित विनाश से प्रभावित होकर उनकी आत्मा चीखती है और वे ईश्वरीय न्याय पर सवाल उठाने से हिचकते नहीं-
कैसा खुदा है तू खुदा कैसे खुदा कहूं तुझे।
फूल खिला मेरा चुरा क्या मिल गया सकूँ तुझे।

एटम शस्त्र के विध्वंसकारी प्रभावों के प्रति वे सचेत हैं अत: उसके विरोध में आवाज़ बुलंद करते हैं-
एटम की फनाकुन हवा सरहद पे न ठहरेगी
इसकी जद में देखो घर तेरा है मेरा है।
आज के युग में व्याप्त सामाजिक विघटन , राजनैतिक वितंडावाद और धार्मिक कठमुल्लेपन के पणिामों से उत्पन्न मानसिक तनावों, उलझनों और दुविधाओं में घिर गया है मान और इस मानसिकता को अश्क ने अपनी रचनाओं में सजगता से उकेरा है कुछ इस तरीके से-

जोश - ओ - जुनू में आकर फसीलें फाँद लीं
मस्जिद गिर गई कहीं मन्दिर ढह गया
अथवा
हाँथों की लकीरों से डरकर
हम भागे जायें सब मन्दिर
अथवा
इतना बेजार है दुनिया की चलन से यारो
अब तो अपनों की वफा से भरम करता है।

पारम्परिक तौर पर जाम - मीना और साकी को लेकर बेशुमार शायरी लिखी गई है और अश्क जी ने इनसे जुड़ अपने मधुर भावों की गंघभीनी पंखुरियाँ कुछ इस शैली से बिखेरी हैं कि पाठक का ध्यान बरबस उसी ओर जाता है। इस सिलसिले में भेंट है उनके अश्आर -

जामो मीना उठाओ शराब बाकी है
अथवा
हमने जो तोड़ी कसम और पीने लगे आँखों से
हँसके बोला कि चलो तुमको भी पीना आया

अश्क की ग़जलों में व्याख्यायित प्रेम तथा सौन्दर्य उनकी सुरुचि का प्रमाण है। सच है कि उन्होंने इन प्रसंगों को इस तरह कलमबंद किया है कि हमारे दिलो - दिमाग पर गहरे नक्श छोड़ जाते हैं। आप भी इसका ज़ायका लें-
हुये जो बदनाम कैसा लगेगा , तेरा नाम मेरा नाम कैसा लगेगा।
अथवा
तुझसे नज़र मिला बैठे हैं,दिल से दिल लगा बैठे हैं।
अथवा
आपके शोख होंठ उनपे ये लिपस्टिक , गज़ब ढा रही है हाये ये लिपस्टिक ।

अश्क की भाषा में सरलता और सादगी है । प्राय: उन्होंने बोलचाल की आम भाषा का उपयोग किया है। अच्छे शेर की पहचान है कि वह पढ़ने वाले को तुरंत याद हो जाये।-
दिल कोई बेदाग नहीं है, किस सीने में आग नहीं है।
अथवा
गोली चली दोनो तरफ मंज़र अजीब था अपना शहीद था।
अश्क जी के शब्दों के नये प्रयोग उनकी शायरी में चार चाँद लगाते नज़र आते हैं, जैसे -
हमने पाला ज़ख्मों को इबादत की तरह; थामा अजनबी ने हाँथ पवासी बनकर ;
प्यार मोहब्बत के रिश्तों में , जरब तो है भाग नहीं है।
आदि
अश्क जी की भाषा गत्वर है जिसमें है निर्झरणी का नैसर्गिक प्रवाह। उनकी यह विशिष्टता है कि वे संवेदनाओं और अनुभूतियों को ग़जल के मिज़ाज़ में बखूबी ढालते हुये शब्दों की अनुकूलता का विशेष ध्यान रखते हैं।
इसमें कोई शक नहीं कि कविता आत्मअभिव्यक्ति का एक शाश्वत और अपरिहार्य माध्यम है। मुख्यत: अश्क जी की शायरी शान्ति तथा मैत्रीभाव की सुदृढता का प्रतीक है जो मानवीय मूल्यों के विविध आयामों पर आधारित है। हो सकता है अश्क जी ने कहीं कहीं शायरी की उस्तादों वाली बारीकियों को भली प्रकार गूँथा न हो लेकिन उनके एहसास सरल शब्दों की ताज़गी की बाहों में बाहें डालककर मस्ती से चहलकदमी करते ज़रूर नजर आते हैं।
मैं अश्क जी के इस नवीनतम काव्य संकलन का अन्तरमन से स्वागत करता हूँ और मुझे पूरी उम्मीद है कि यह पुस्तक लोकप्रियता के उच्च शिखर को स्पर्श करेगी।

पुस्तक समीक्षा :-

नाम: उरोज, 'उर के ओज'

लेखक: हरीबाबू विंदल
वितरक: एन.बी प्रोड्क्शन
7605 क्विक सिलवर कोर्ट
बुई, मैरीलैंड 20720
पृष्ठ संख्या: 60

" उरोज, उर के ओज " नारी उरोज की काव्यात्मक एवं श्रंगारिक अभिव्यक्ति है। हरी बाबू विंदल जी की यह नवीन कृति है। हास्य , व्यंग्य और श्रंगार की अभी तक उपलब्ध रचनाओं से हटकर है। विषय वयस्कों के लिए है परन्तु अश्लील बिल्कुल नहीं है। इस में नारी उरोजों की महिमा बड़े ही अलंकृत रूप में उपमाओं से भर - पूर ढंग से की गई है। पुस्तक का पूरा भाव उसके पहले छंद से लगाया जा सकता है।

उरोज, नारी के लिए होते उर के ओज,
झील मध्य खिल रहे हों, जैसे दो सरोज।
जैसे दो सरोज , प्राण हैं इस प्रकृति के,
बाला के हैं बोझ, सोज हैं नवयुवती के।
गार्डन के हैं " रोज़ ", " पोज़" हैं रंगशाला के,
कविता की हैं खोज , " डोज़" हैं मधुशाला के।

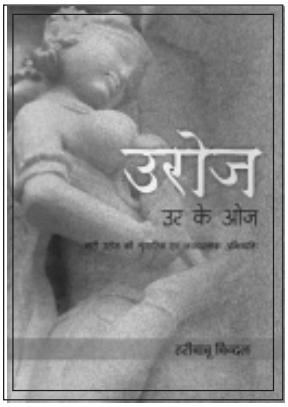

उरोज के आने,पनपने,पूर्ण होने और फिर शिथिलने की प्रक्रिया पर चर्चा है। उनके छोटे- बड़े साइज़ और शेप को बड़ी बारीकी से पेश किया गया है। उरोज के प्रदर्शन को लेकर एलोरा और अजंता , खजुराहो की प्रतिमाओं का ज़िक्र यूँ किया है।

एलोरा और अजंता, खजुराहो की शान
पत्थर में भी डाल दी, कलाकार ने जान।
सागर की लहरें, दर्शित करते हैं जैसे
पत्थर पर स्तन भी हैं, उभार दिये कैसे।

नारी उरोज की गरिमा पुस्तक के अंतिम छंद में है।
शिशुओं के क्रीड़ा स्थल, मातृ हृदय विशाल
धरती, माँ का आँचल, ऐसी देय मिसाल।
कायर इस आँचल में , अपना मुँह छुपाते
वीर उसी माँ के, आँचल की लाज बचाते।
पुस्तक की साज - सज्जा खजुराहो की प्रतिमाओं के साथ आकर्षक और ओजपूर्ण हैं।

लेखक : डा. नरेन्द्र टंडन (अमेरिका)

Maharani Fashions

Ladies Designer Suites

Sarees

Shalwar Kameez

Men's Suiting

Imitation Jewelry

An Exciting Collection of The
Latest in Festive Fashions!!!

1417 Gerrard Street East, Toronto,
Ontario M4L 1Z7
Tel: 416-466-8400

‘ च’ - चमचा - व्यंग्य लेख

प्रो. ओमकुमार आर्य (हरियाणा, भारत)

उस दिन मित्र मंडली में चर्चा हो रही थी कि अब हिन्दी की वर्णमाला बच्चों को नये तरीके से पढ़ाई जानी चाहिये। तरीका जो एक दम आधुनिक एवं वैज्ञानिक हो। ‘ आ’ - आम , ‘इ’ से इमली , ‘उ’ से उल्लू आदि और व्यंजनो में ‘क’ कमल ‘ ख’ खरगोश, ‘ध’ धनुष, ‘न’ से नल, आदि बड़े अरसे से पढ़ाये जा रहे हैं । कुछ ऐसा संशोधन किया जाये कि समसामयिक विचार धारा और आज के युग की वास्तविकता को भी बच्चे जान सकें। जैसे ‘ई’ ई - मेल, ‘क’ कम्प्यूटर, तब हमारे एक बहुत ही यथार्थवादी प्रतिभावान् साथी ने कहा कि जैसे ‘च’ से चमचा क्योंकि वर्तमान युग ‘ चमचा’ प्रधान युग है और जो तर्क उन्होंने अपने सुझाव के पक्ष में दिये वे एकदम जमीन से जुड़े हुये तथा काबिले तारीफ थे। मुलाहिज़ा फरमाइये । उस मित्र ने कहा कि देखो ‘च’ चमचा की पहली विशेषता यह है कि ‘युगबोध’ तो करवाता ही है, साथ ही चमचों की कला अर्थात चमचागिरी , चापलूसी को चमकाकर, चकाचौंध पैदा करके अपने शिकार को चक्रव्यूह में फँसाने के जितने जरूरी साधन हैं वे भी प्राय: ‘ च’ से ही बनते हैं । जैसे चालाक ,चमचा, चापलूसी की चटपटी जायकेदार चटनी चटाकर अपने शिकार को चंगुल में फँसाता है , तलवे चाट - चाट कर औरों से चौगुना लाभ प्राप्त कर लेता है। लल्लो चप्पो की चाशनी के चटखारे लेने का चस्का ‘ साहब’ लोगों को लगा देता है, चटपट उल्लू सीधा करता है और चम्पत हो जाता है , यह सारी शब्दावली ‘ च’ की देन है। इतना ही नहीं चमचागिरी की चहेती चचेरी बहन चुगली भी तो ‘ च’ की ही देन है। चालूपन भी इसी परिवार का सदस्य है।

मित्र का ज्ञान कमाल का था, उनकी बातें बड़ी रोचक और रसभरी थीं। चर्चा को आगे बढ़ाते हुये उन्होंने चुटकी ली कि आज यह ‘ चमचा’ नामक जन्तु चराचर में सर्वत्र पाया जाता है। रिसर्च स्कालर तो यहाँ तक कहते हैं कि जैसे प्राणायाम , योग आसनादि, स्वास्थ्य के लिए जरूरी है, वैसे ही जिनको चस्का लग गया हो उनके लिए चमचागिरी की थोड़ी बहुत खुराक रोज़ाना जरूरी है , अन्यथा वे रोगी हो सकते हैं और यदि ‘चमचों’ को चमचागिरी का मौका न मिला तो वे भी अपचन के मरीज़ हो सकते हैं। मित्र ने यह रहस्योदघाटन भी किया कि वैसे तो चमचों का उद्‌गम स्थान मूलत: और मुख्यत: राजनीति है पर आजकल ये सभी धार्मिक ,सामाजिक , सांस्कृतिक , शैक्षिक संस्थाओं से लेकर कवि सम्मेलनों तक में भी चोखी संख्या में पाये जाते हैं।

चमचा पुराण को और आगे बढ़ाते हुये हमारे मित्र ने बताया कि चमचे अवसर की नज़ाकत के पारखी और मानव मनोविज्ञान के जन्मजात, स्वभावसिद्ध विशेषज्ञ होते हैं। कब क्या कहना है, किसको फुलाकर कुप्पा करना है , किससे नज़रें चुरानी हैं, कब ‘ वृद्धा’ को रीतिकाल की चुलबुली , चपला नायिका से भी बढ़ा चढ़ाकर चित्रित करना है , गरज के के मुताबिक बड़े गधे को बाप और छोटे को चाचा बनाना है , आदि आदि वे बखूबी जानते हैं।

बच्चों को प्रारंभिक शिक्षा में ‘ च’ चमचा की महत्ता बताते बताते मित्र महोदय ने चमचा माहात्म्य पर पूरा प्रकाश डाला और बताया कि आजकल साहित्यिक आयोजनों , कविसम्मेलनों में भी चमचों का बोलबाला रहता है। उन्होंने मजाक में कहा कि भोजन की मेजों वाले सारे चमचे कवि सम्मेलनों में पहुंच जाते हैं । चमचागिरी की बदौलत फटीचर कवि भी कविताएँ पढ़ने का अवसर झटक लेते हैं जबकि एक दम मौलिक , रससिद्ध स्वाभिमानी कवियों को अवसर नहीं दिया जाता। चमचा टाईप कवि चोरी की कविताएँ सुनाने में भी माहिर होते हैं , कुछ लाइनें इधर से कुछ उधर से लेकर भानुमती वाला कुणवा जोड़ लेते हैं और थोड़ी बहुत फेर बदल करके वही कविता ‘ दीवाली’ पर वही स्वाधीनता दिवस पर , वही पुण्य तिथि और वही जयन्ती पर सुना देते हैं। चमचे बेशर्मी प्रूफ होते हैं और ‘ हूटिंग ‘ के बावजूद मंच पर डटे रहते हैं ।

इस प्रकार हमारे मित्र ने ‘ च’ चमचा के निमित्त से चमचों संबन्धी अपने अथाह ज्ञान से हमें लाभान्वित किया और ये पंक्तियाँ गुनगुनाते चर्चा समाप्त की:-

जय श्री चमचा जी की , जय श्री चमचा जी की
शोभा आयोजनों की, चमचों बिन फीकी।
जय श्री चमचा जी.....की।

भारतीय नारी

कनिका सक्सेना (कैनेडा)

जयशंकर प्रसाद को हिन्दी साहित्य में कौन नहीं जानता। यदि उन्हें हिन्दी साहित्य का पंडित कहा जाये तो अनुचित नहीं होगा।

कानन - कामायनी से लेकर ध्रुवस्वामिनी - समुद्रगुप्त तक , हर संग्रह में नारी के हर रूप का वर्णन बहुत ही सजीव ढंग से किया है। नारी के हर पहलू को प्रसाद जी ने बखूबी से प्रस्तुत किया है।

कुछ उनके प्रयास से व कुछ समय की माँग के कारण धीरे - धीरे नारी की परिभाषा बदलने लगी । चूल्हा - चक्की की दीवार से उसने बाहर पैर पसारने शुरू किये। समाज में भी जगरूकता आई और उसने भी नारी के इस रूप को अपनाया। अब नारी बेशक घर से बाहर निकल आई हो, पुरुष के साथ - साथ चल रही हो , परन्तु हमरे घरों में नारी आज भी अपने पति व परिवार के सामने समर्पित है।

आज भी भारतीय नारी अपनी संस्कृति और कर्त्तव्य से जुड़ी है। आज भी भारतीय नारी अपने पति के लिए उपवास रखती है, अपने पुत्र व अपने परिवार में बुढ़ापे का सहारा ढूंढ़ती है।

आज भी भारतीय नारी अपने परिवार - पति के अलग होने के भय से काँप जाती है। फिर वो नारी चाहे भारत मैं हो अथवा विदेश में वास करती हो। भारतीय नारी वो कड़ी है , जो परिवार को जोड़े रहती है।

प्रसाद जी जानते थे कि भारतीय नारी अपनी जड़ों में कभी दीमक नहीं लगने देगी। इसलिए उन्होंने कहा था-

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पग तल में;
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो
जीवन के सुन्दर समतल में।" कामायनी लज्जा सर्ग से

कब से रही पुकार

बी मरियम खान (पाकिस्तान)

मधुर मधुर जीवन के सपने
आग लगा हृदय में अपने
आई तुम्हारे द्वार
क्यों रूखा है व्यवहार
कब से रही पुकार

देखी जब से मोहिनी मूरत
भोली भाली प्यारी सूरत
बैठी सब कुछ हार
क्यों रूखा है व्यवहार
कब से रही पुकार

आशाओं का दीप जला कर
अरमानों का थाल सजा कर
खड़ी तुम्हारे द्वार
क्यों रूखा है व्यवहार
कब से रही पुकार

प्रीत लगा कर हम पछताए
गीत विरह के दिल ने गाए
सोया सब संसार
क्यों रूखा है व्यवहार
कब से रही पुकार

EKAL VIDYALAYA

एकल विद्यालय – एक अध्यापक वाला स्कूल

यह स्वयं सेवकों वाली योजना जो कि आदिवासी व पिछड़ी हुई जातियों के बच्चों को शिक्षित करने के उद्देश्य से बनाई गई है। इसमें सरकार का कोई योगदान नहीं है, यह निःशुल्क है। इसका उद्देश्य आदिवासी लोगों के बच्चों को निरक्षरता से उन्मुक्त करना है। यह जनता का आन्दोलन है। जैसा कि सर्वविदित है कि आदिवासियों में साक्षरता बिल्कुल न के बराबर है। पुरुषों में 12 प्रतिशत और स्त्रियों में 5 प्रतिशत। यह आन्दोलन अभी बिल्कुल नया है किन्तु कुछ ही समय में हमने इस दिशा में आश्चर्यजनक उन्नति की है। भारत में 133,913 आदिवासियों के गाँव हैं जिनमें 10 या 12 प्रतिशत गाँवों में स्कूल हैं।

'एकल विद्यालय' के आन्दोलन से आज 18225 पाठशालाएँ खुल चुकी हैं। ये स्कूल भारत और नेपाल के सीमावर्ती स्थानों में सेवा कर रहे हैं। इस समय 546,750 विद्यार्थी इनमें शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। हमारा विश्वास है कि 2011 के अंत तक हम 100,000 पाठशालाएँ खोल सकेंगे।

इस महान सेवा में हमें आपके सहयोग की बहुत आवश्यकता है। यह सबसे कम खर्चे वाली योजना है जिसमें एक स्कूल को चलाने के लिए लगभग 400 डालर साल में खर्च होते हैं और लगभग 25 से 40 विद्यार्थी इसमें शिक्षा ग्रहण कर सकते है। हमें आशा है कि आप हमारे इस स्वप्न को साकार कराने में हमारे साथ हैं। हम आपको आपके अनुदान के लिए टैक्स की रसीद भी देते हैं।

आओ मिलकर हम सब शिक्षा का दीप जलाएँ।
उन आदिवासियों के जीवन में आशा की किरण जगाएँ।।
जब तक अविद्या का अँधेरा हम मिटावेंगे नहीं,
तब तक समुज्वल ज्ञान का आलोक पावेंगे नहीं।

कैनेडा में एकल विद्यालय फाउन्डेशन का पता

817- 25 KINGSBRIDGE GDN.CIR.,
MISSISSAUGA, ON. L5R 4B1
EMAIL: RV1_CA@YAHOO.COM,
WWW.EKAL.ORG,
T.NO. 905- 568-5235

साउथ ऐशियन सीनियर लोगों के लिए एक शुभ समाचार:-

मार्खम ओन्टोरियो में आनन्दा कम्यूनिटी निवास की स्थापना

मार्खम ओन्टोरियो में आनन्दा कम्यूनिटी निवास की स्थापना आनन्दा कमूनिटी निवास मार्खम , ओन्टेरियो में अपने ही प्रकार का साउथ एशियन लोगों के लिए एक आदर्श शान्तिमय निवास स्थान है। यह निवास विशेषरूप से (साउथ ऐशियन)कमूनिटी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनाया गया है। इसमें हमने सीनियर लोगों की हर सुविधा का बहुत ध्यान रखा है। हमारे पास अच्छे , कुशल , शिक्षित, अनुभवी कार्यकर्ता हैं जो सीनियर्स की जरूरतों का अच्छी तरह समझते हैं। उनकी भाषा, संस्कृति, संगीत, श्रद्धा, भक्ति से पूरी तरह परिचित हैं। मनोरंजन का पूरा -पूरा ध्यान रक्खा गया है। हमने उनके लिए शुद्ध , शाकाहारी भोजन, भारतीय चाय , स्वस्थ व स्वादिष्ट जलपान और शाकाहारी भोजन का प्रबंध किया है। **रहने की व्यवस्था :** यहां लोग कम समय या अधिक समय जैसा उचित समझें ,हमारे पास इसका पूरा प्रबन्ध है। हम उन लोगों की भी सेवा

और देखभाल करते हैं जो कि लम्बी बीमारी के बाद, आराम करना चाहते हैं या वे लोग जिनका कोई आपरेशन हुआ है और उनकी देखभाल का कोई इंतजाम नहीं है। हम उनकी भी सेवा का प्रवन्ध कर सकते हैं। हमारे पास ' होम केयर ' की ओर से अनुभवी नर्से व सेवक , सेविकाएँ भी उपलब्ध हैं जो पीड़ित लोगों को सम्मान पूर्वक उनके साथ रहकर उनका दुख हल्का करने में सहायक हो सकते हैं। हमारे पास सीनयर्स के लिए स्वादिष्ट , संतुलित , शाकाहारी भोजन की व्यवस्था है जो आवश्यकतानुसार उन तक पहुंचाया भी जा सकता है और यदि लोग चाहें तो वे स्वयं वहां जाकर उचित दामों में प्राप्त कर सकते हैं। यह सेवा बहुत कम पैसों में आपके लिए उपलब्ध है। हमारा उद्देश्य सीनयर्स के जीवन को सुखी और आनन्दमय बनाना है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर ही यह सारी व्यवस्था की है। आज नहीं तो कल हम सभी उसी दिशा में जा रहे हैं। मेरा विश्वास है कि आप हमारी सेवाओं से अवश्य लाभ उठायेंगे। 'आनन्दा निवास' जैसे स्थानों पर हम सभी को गर्व होना चाहिये क्योंकि अपनी कमूनिटी में किसी ने तो इस विषय पर विचार तो किया। इस विषय पर आप हमसे संपर्क करें और हम आपको उचित सलाह देंगे।

Ananda Community Living,

4813 – 14th Ave. Brimley Rd. Markham, Ontario, L3S 3K3

Ph. (905) – 479- 0072 Mob. 416- 795- 2661 OR 416- 835- 2550

चित्र में कुलपति राम प्रकाश सिंह जी शरद आलोक को सम्मान करते हुए

लखनऊ विश्वविद्यालय में शरद आलोक सम्मानित

जयप्रकाश शुक्ल

26 नवम्बर, दो बजे हिन्दी विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय में नार्वे से प्रकाशित स्पाइल-दर्पण और वैश्विका के सम्पादक, लेखक सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' को कुलपति राम प्रकाश सिंह द्वारा शाल और सम्मान-फलक देकर सम्मानित किया गया। उन्होंने 'शरद आलोक' को लखनऊ का गौरव से सम्बोधित करते हुए अपनी शुभकामनायें दी और आशिर्वाद प्रदान किया। विभागाध्यक्ष प्रो. प्रेमशंकर तिवारी, प्रो. कालीचरण 'स्नेही', प्रो. पाल, भैया जी और अन्य विद्वानों ने अपने विचार रखे। सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' ने विदेशों में हिन्दी पत्रकारिता पर व्याख्यान देते हुए कहा कि विदेशों में हिन्दी पत्रकारिता का भविष्य उज्जवल है। 'शरद आलोक' ने लखनऊ विश्वविद्यालय से जुड़े अपने संस्मरण सुनाये और कुलपति जी का बहुत आभार व्यक्त किया कि उन्होंने अपने कार्यकाल में विश्वविद्यालय प्रांगण में हिन्दी के तीन मूर्धन्य विद्वानों: यशपाल, अमृतलाल नागर और भगवती चरण वर्मा की प्रतिमा स्थापित की।

उसी सन्ध्या को लखनऊ विश्वविद्यालय के आर्टकालेज के वार्षिक कार्यक्रम में सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' को मुख्य अतिथि बनाया गया जहाँ उन्होंने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि हिन्दी हमारी अस्मिता की पहचान है। अपने नगर में यह सम्मान दिल छू लेने वाली बात है।

नार्वे में तीसरा विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया - माया भारती

10 जनवरी 2008 को भारतीय नार्वेजीय सूचना एवं सांस्कृतिक फोरम के तत्वाधान में आयोजित लेखक गोष्ठी में स्थान वाइतवेत, ओस्लो में तीसरा विश्व हिन्दी सम्मेलन मनाया गया। ध्यान रहे तीन वर्ष पहले प्रधानमन्त्री मनमोहन सिंह ने 10 जनवरी को प्रति वर्ष विश्व हिन्दी दिवस के रूप मनाये जाने की घोषणा की थी। नार्वे में पहला विश्व हिन्दी दिवस भारतीय दूतावास ने तथा दूसरा और तीसरा विश्व हिन्दी दिवस भारतीय नार्वेजीय सूचना एवं सांस्कृतिक फोरम के तत्वाधान में लेखक सुरेशचन्द्र शुक्ल की अध्यक्षता में बहुत धूमधाम से मनाया गया।

तीसरे विश्व हिन्दी दिवस पर लेखक गोष्ठी सम्पन्न हुई जिसमें काव्यपाठ करने वालों में माया भारती, शाहिदा बेगम, राय भटटी, इंगेर मारिये लिल्लेंगेन, इन्दरजीत पाल और सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' प्रमुख थे और बच्चो के हिन्दी पठन-पाठन पर प्रकाश डाला संगीता एस सीमोनसेन ने जो हिन्दी स्कूल में बच्चों को हिन्दी पढ़ाती हैं। ओस्लो स्थित गुरुद्वारे के कार्यकारिणी के सदस्य बलबीर सिंह ने कहा कि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है और पंजाबी मेरी मातृ भाषा है। शरद आलोक ने कहा कि हिन्दी विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली तीसरी बड़ी भाषा है। उन्होंने आवाहन किया कि हिन्दी के लिए आप अपना हर संभव सहयोग दें और आशा व्यक्त की कि हिन्दी एक दिन संयुक्त राष्ट्र संघ में स्वीकृत भाषा के रूप में स्थान प्राप्त करेगी। उन्होंने कहा कि वे गत 19 वर्षों से हिन्दी पत्रिका स्पाइल-दर्पण का सम्पादन कर रहे हैं और सन 2007 में नार्वे से प्रकाशित मात्र दो पत्रिकाओं 'स्पाइल-दर्पण' और वैश्विका के सम्पादक हैं परन्तु जब प्रोत्साहन की बात आती है तब सिफारशी लोग नम्बर मार ले जाते हैं। शरद आलोक ने कहा कि यह अच्छा है कि भारत में आम परिवारो के बहुसंख्यक बच्चे और विदेशों में प्रवासी बच्चे हिन्दी बहुत चाव से सीख रहे हैं जो हिन्दी के भविष्य की उज्ज्वल कामना है। हिन्दी आम आदमी की भाषा है यही इसकी सबसे बड़ी शक्ति है।

26 नवमबर ,2007 भारत में उत्तर प्रदेश की नगरी के लखनऊ विश्वविद्यालय के कुलपति रामप्रकाश सिंह द्वारा सम्मानित।

सुदर्शन फ़ाकिर : कुछ यादें

सुदर्शन फ़ाकिर अब इस दुनिया में नहीं रहे। यह समाचार जब मुझे मिला तो यादों की कई पोटलियाँ धीरे -धीरे खुल गईं। आकाश वाणी जालंधर में बच्चों के प्रोग्राम से युवावाणी और नाटकों तक के मेरे सफर में कई बार फ़ाकिर साहब का ज़िक्र आता था। बम्बई जाने से पहले सुदर्शन फ़ाकिर आकाशवाणी जालन्धर के स्टाफ में थे। हर नई ग़ज़ल के साथ आकाशवाणी में उनकी चर्चा होती थी। कालेज में हिन्दी की प्रो. सुश्री सुदेश विज से मुलाकत हुई। उन्हीं की बदौलत हिन्दी से प्रेम बढ़ा। हिंदी खाना, पीना , ओढ़ना और बिछौना बन गई है। सुदेश मैडम की सुदर्शन फ़ाकिर से प्रीत थी जो बाद में शादी में बदल गई और मैं इनकी शादी में भी शामिल हुई थी। पत्रकार बनी तो अखबारी दुनिया में फ़ाकिर साहब का ज़िक्र होता था। फ़ाकिर साहब जालन्धर की पत्रकारिता का भी हिस्सा रहे हैं।

जालन्धर दूरदर्शन से जुड़ी तो " साज़ और आवाज़" कार्यक्रम मेरे हिस्से आया। इसकी कुछ कड़ियाँ नए उभरते गायक , गायिकाओं पर बनाई गईं। एक कड़ी में राजन एंग्रिश उभरता गायक बुलाया गया। जिसने सुदर्शन फ़ाकिर जी की ही ग़ज़लें गाने की इच्छा ज़ाहिर की तो उस प्रोग्राम की शुरुआत मैंने फ़ाकिर साहब के इस मुक्तक से की थी-

"हम तो स्याह वक्तों के थे काटे फ़ाकिर
लोग भी दूर रहे हमसे उजालों की तरह
सोच की राह ते यक़ीनन बहुत आसां थी मगर
दिल ने चलने न दिया पाँव के छालों की तरह"

मैं अमेरिका आ गई , मेरी एक दुनिया बस गई। सुदर्शन फ़ाकिर जी को बेग़म अख्तर और जगजीत सिंह द्वारा सुनती रही। सुदेश मैडम याद आती रहीं। अक्सर " काग़ज की किश्ती वो बारिश का पानी " इनकी ग़ज़ल गुनगुना भी लेती थी। समय की तेज़धारा पर भागती रही। एक दिन " ग़ालिब छुटी शराब " रविन्द्र कालिया की आत्मकथात्मक किताब मिली। उसमें सुदर्शन फ़ाकिर और अपने परिवार के बारे में पढ़कर अच्छा लगा। जालन्धर के साहित्यिक माहौल का दृष्य घूम गया, जब मैं बड़ी हो रही थी तब काफी हाउस में रविन्द्र कालिया , मोहन राकेश , सुदर्शन फ़ाकिर , सत्यपाल आनन्द, मेरे चाचा नरेन्द्र शर्मा (उपेन्द्र नाथ अश्क के छोटे भाई) इन सबके किस्से सुनने को मिलते थे मैं बड़े उत्साह से उनमें भागीदार होती थी।

इन्हीं यादों के साथ ' हिन्दी चेतना ' परिवार की ओर से श्रद्धा के फूल सुदर्शन जी को अर्पित करती हूँ। अपनी ग़ज़लों और नज़्मों से फ़ाकिर साहब रहती दुनिया तक जिंदा रहेंगे।

किसी ने फ़ाकिर साहब के लिए ठीक ही लिखा है-

फूल में गंध मोतियों में आब मैं ही हूँ
सारे संसार में अपना जवाब मैं ही हूँ,
मेरे दम से ही महफिलों में हलचले हैं
प्यास में प्यास रूप में शराब मैं ही हूँ।

डा. सुधा ओम ढींगरा

श्रद्धाँजलि- डा. प्रताप रस्तोगी
भारतेन्दु श्रीवास्तव

टोरंटो नगर समाज में है जिनका अमूल्य योगदान,
उन डाक्टर प्रताप रस्तोगी का हो गया देहावसान,
भीगे नयन और रुँधे कंठ से ' भारतेन्दु' बारंबार,
शब्द निकलने में कठिनता हो रही विदाई - नमस्कार।

सांस्कृतिक, धार्मिक व अन्य संस्थाओं का उठाया है भार,
व्यक्तिगत रूप से हज़ारों का उन्होंने किया उपकार,
"परहित सरिस धर्म नहिं भाई" का रहा उन्हें नित विचार,
सद्गति देना उन्हें परमेश्वर और अपना ईश प्यार।

न जाने किस लोक में हैं वे अपना बना रहे अब धाम,
उनको देना आश्रय अपना तुम बनवारी राधेश्याम,
और सुधा , संजय, नीरज , मनोज व शेष समस्त परिवार,
सहनशक्ति से हो जाएँ सम्पन्न उनके हृदय अगार।

यह श्रद्धांजलि शब्द ' भारतेन्दु' करता सादर समर्पित,
जब तक हम हैं यहाँ शरीरधारी रहेगी आपकी स्मृति,
सुख शांति से रहें आप प्रताप रस्तोगी इह लोक पार,
आपकी आत्मा परमात्मा सानिध्य में करे बस विहार।

श्रद्धाँजलि: श्रीमती संतोष भूपल के लिए देवी चौकसी

स्वर्गीय संतोष भूपल जो अपने पति श्री बनवारी भूपल के साथ भारत दर्शन के लिए गईं थी अचानक स्ट्रोक से उनकी मृत्यु हो गई। वह उस समय साईं बाबा के पवित्र धाम में थीं। साईं बाबा की परम् भक्त होने के नाते ईश्वर ने उनकी प्रार्थना सुन ली और बिना कष्ट उठाये वे प्रभु के चरणों में चली गईं। भगवान उनकी आत्मा को परम शान्ति दे। वह एक दयालु और परोपकारी महिला थीं।

मिसीसागा ओण्टेरियो, कैनेडा में कवि गोष्ठी

3 फरवरी2008 के अपराह्न में मिसिसागा में श्री निर्मल सिद्धू ने अपने निवास पर एक कवि गोष्ठी का आयोजन किया। इस कवि गोष्ठी में बहुत से कवि और कवयित्रियों को भी आमन्त्रित किया गया था। बेहद सर्दी और बर्फ के होते हुए भी इस क्षेत्र के कविता प्रेमियों ने सहर्ष भाग लिया।

कार्यक्रम का आरम्भ अल्पाहार के पश्चात आचार्य संदीप त्यागी द्वारा सरस्वती वन्दना के गायन से हुआ, शब्द थे - 'नीरस जीवन में प्रेम सुरा रस भर दो।' दीप प्रज्वलन गृह लक्ष्मी श्रीमती गुरमेल सिद्धू ने किया। निर्मल सिद्धू जी ने ग़ज़ल पढ़ कर कवियों और कवयित्रियों का स्वागत किया और काव्य पाठ का कार्यक्रम आरम्भ हुआ।

पहले दौर में निश्चित हुआ कि प्रत्येक कवि या कवयित्री दो-दो कविताओं का पाठ करें। पहली कवयित्री थीं - सविता अग्रवाल। उनके बाद कविता पाठ करने वाले कवियों के नाम इस पकार हैं : विजय विक्रान्त, सुमन कुमार घई, श्याम त्रिपाठी, संदीप त्यागी, मनदीप सिंह, मीना चोपड़ा, लता पाण्डे, भुवनेश्वरी पाण्डे, प्रीति धामने, किरण, निर्मल सिद्धू। क्योंकि पर्याप्त समय था तो कविता का दूसरा दौर भी चला।

इस कवि गोष्ठी की विशेष बात यह थी कि कुछ ने कवियों और कवयित्रिओं का साहित्यिक समाज में प्रथम परिचय था। सविता अग्रवाल, मीना चोपड़ा, मनदीप सिंह, किरण और प्रीति धामने से अनुरोध किया गया कि आगे से भी ऐसे कार्यक्रमों बढ़-चढ़ कर भाग लें ताकि कुछ नए विचार और कविता के नए स्वर सुनने को मिलें।

कार्यक्रम का अन्त प्रीति भोज से हुआ।

प्रसिद्ध कवि सुरेन्द्र भुटानी की ' रुबाईयात ' पुस्तक से

चिराग़ों का मुकद्दर खो गया है
उजालों से बेख़बर हो गया है
दिल में तीरगी यूँ समाने लगी
हर चीज़ से बेअसर हो गया है

आँसुओं को ज़ुबाँ मालूम नहीं
हमको ये दास्ताँ मालूम नहीं
दिल मज़लूम हो गया तो क्या ग़म
मगर दिले-बेअमाँ मालूम नहीं

एक ज़िन्दगी में कई ज़िन्दगी जी गया
उल्फ़त के अहसानों का ज़हर पी गया
अपने इख़्लाक का कुछ तो अहसास था
क्यूँ ख़ूँ में डूबी हुई कबा सी गया

Indo-Canada
Income Tax Services Ltd.
Income Tax / Book keeping Experts
Management Consultants
905-264-9599
905-264-9587
15 Ayton Crescent, Woodbridge, Ontario L4L 7H8

हिन्दी समाचार :

8 मार्च 2008 , वारेन न्यूजर्सी

पिछले शनिवार को वारेन पुस्तकालय ने प्रथम बार भारतीय त्योहार मनाया गया। कार्यक्रम बहुत सफल रहा, पुस्तकालय को काफी पहले से इसके लिए नाम लेना बन्द करना पड़ा, क्योंकि बहुत से लोग पहले से नामंकन कर चुके थे।

वारेन मध्य नयूजर्सी का एक शहर है, यह शहर वाचँड पहाड़ पर बसा हुआ है। यहाँ पर ज्यादातर युरोपियन मूल के लोग बसे हुये हैं। वारेन के दक्षिण में व्रिजवाटर नाम का शहर है जहां परे काफी भारतीय हैं। मेरा यह सब बताने का कारण यह था कि यह बात बड़े महत्त्व की है कि वारेन ने भारतीय सभ्यता को समझने की कोशिश की जब की ऐसी पहल ब्रिजवाटर जहाँ भारतीय मूल के काफी लोग है से कमी आई है।

हिन्दी यू.एस.ए. के कार्यकर्ताओं ने पुस्तकालय और समकक्ष को एक भारतीय रंग में रंग दिया था। रंग बिरंगी साड़ियों से सारी खिड़कियां सजी हुई थीं। कक्ष के प्रवेश द्वार के एक तरफ धनुष और प्रतिमाओं से मंदिर बनाया गया था, दूसरी ओर एक छोटा मन्दिर श्रीमती मीना राठी जी ने बहुत ही सुन्दर तरह से सजाया था। एक दूसरे कोने में श्रीमती रचिता जी ने दीवाली के पटाखे इत्यादि दर्शाये थे और एक मेज पर सुन्दर भारतीय घर का नमूना भी था।

पुस्तकालय के द्वार पर हिन्दी यू. एस.ए. के विद्यार्थियों ने सुन्दर रंगोली बनायी थी। रंगोली खासकर बच्चों को बहुत ही आकर्षित कर रही थी। यह देखकर पुस्तकाध्यक्ष को रंगोली के आसपास सूचना लगानी पड़ी कि यह एक नाजुक कला है कृपया इसे नष्ट न करें।

उत्सव की आयोजिका श्रीमती मंजू मौर्य सबको कक्ष में प्रवेष करने पर होली का टीका लगा रही थी। बाद में कुछ अतिथियों ने जिन्हें यह टीका नहीं लगाया गया था, उन्होंने पूछ कर लगवाया। उत्सव में सबसे ज्यादा लोकप्रिय मेंहदी थी, व्यस्क और बच्चे सब अपने हाथ में मेंहदी लगवा रहे थे।

पुस्तकालय में हिन्दी की पुस्तकों और साफ़टवेयर की प्रदर्शनी भी लगायी गयी थी, अतिथियों ने काफी खरीदारी भी की।

कार्य की शुरुआत एक भरतनाट्यम नृत्य से हुई जो सबको बहुत मनमोहक लगी। कक्ष पूरी तरह भरा था और सबने शान्तिपूर्वक इसका आनन्द लिया।

श्री किशिन कृपलानी जी ने भारत के प्राचीन इतिहास की एक झलक दी, बहुत से अतिथि काफी आश्चर्य चकित लग रहे थे कि भारत का इतिहास इतना पुराना है।

अन्त में भारत के विभिन्न प्रान्तों के विवाह का प्रदर्शन किया गया। घूँघट मे सजी शर्माती दूल्हने अमेरिकी मूल के लोगों को बहुत भायी थी इसका अंदाज़ा अगले दिन यहाँ के समाचार पत्र में विस्तार से निकले समाचार से चला जिसमें दूलहनों की तस्वीरें स्थानीय पत्रों के प्रथम पृष्ठ पर थीं। इस तरह के कार्यक्रमों से भारतीय और अमेरिकी मूल के लोगों में सामंजस्य बढ़ेगा और विश्व के दो सबसे बड़े प्रजातंत्र पास आयेंगे।

प्रतियोगिता दिवस - 23 फरवरी, 2008

23 फरवरी की सुबह को जब सूर्य देवता बादलों में छुपे थे और हिम कण वातावरण को ठंडक प्रदान कर रहे थे, ऐसे मौसम में भी हिन्दी यू.एस.ए. की पाठशालाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों का उत्साह देखने लायक था। सुबह 10.30 बजे से ही न्यू जर्सी के हिल्सबोरो शहर के पुस्तकालय के प्रागंण में नन्हें-मुन्ने कविता प्रतियोगियों की लंबी-लंबी पंक्तियाँ दिखायी देने लगी थी। ये सभी कनिष्ट समूह के विद्यार्थी थे जो पहली बार कविता प्रतियोगिता में भाग ले रहे थे। इसके बाद प्रतियोगियों का तांता लगा तो रुकने का नाम ही नहीं ले रहा था।

`प्रति वर्ष की तरह इस वर्ष भी हिन्दी यू.एस.ए. ने हिन्दी की अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन हिल्सबोरो शहर के सबसे अधिक उत्साह सामूहिक गीत प्रतियोगिता में देखने को मिला। इसमें 29 टीमों ने 3 स्तरों में भाग लिया। प्रत्येक

टीम में 10 से लेकर 20 बच्चे थे तथा विभिन्न हिन्दी पाठशालाओं की शिक्षिकाओं ने इन गीतों को तैयार करवाया था। सुंदर-सुंदर वेशभूषा, साज सज्जा तथा विभिन्न वाद्यों के साथ दर्शकों से खचाखच भरे कक्ष में बच्चों ने पूरे उत्साह से भक्ति गीत, शिक्षाप्रद गीत, देश भक्ति गीत सुंदर हिन्दी उच्चारण के साथ पस्तुत किए। न्यूयार्क शहर से पधारी निर्णायकों की टीम असमंजस में थी कि किसे अधिक अंक दे। काव्य पाठ तथा सामूहिक गीत प्रतियोगिता समाप्त होते-होते दिन ढल गया था। लगभग 4 बजे शब्द अंताक्षरी प्रतियोगिता प्रारंभ हुई। इस प्रतियोगिता में 8 हिन्दी पाठशालाओं ने भाग लिया तथा प्रत्येक टीम में 5-5 प्रतियोगी थे। एक पाठशाला के दल में तो एक अमरीकी मूल की छात्रा भी थी। यह प्रतियोगिता भी बड़ी मनोरंजक रही।

सबसे अंत में अच्छी हिन्दी जानने वाले तृतीय, चतुर्थ तथा पंचम स्तर के 30 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता को शब्द ज्ञान प्रतियोगिता का नाम दिया गया। इसमें प्रोजेक्टर के माध्यम से एक शब्द पर्दे पर आता था जिसे प्रतियोगी को सही उच्चारण के साथ पढ़ना पड़ता था। उसका हिन्दी या अंग्रेजी में अर्थ बताकर एक वाक्य बनाना होता था। दर्शकों ने इस प्रतियोगिता को साँस रोककर देखा और सुंदर वाक्यों पर ताली बजाकर विद्यार्थियों का प्रोत्साहन बढ़ाया।

प्रत्येक श्रेणी में 10 सर्वश्रेष्ठ प्रतियोगियों को चुना गया है जो जून 14-15 को होने वाले सप्तम हिन्दी महोत्सव में पुन: अंतिम (फाइनल) प्रतियोगिता में भाग लेंगे।

बच्चों को हिन्दी बोलने के लिए प्रोत्साहन देने तथा एक मंच प्रदान करने के उद्देश्य को लेकर हिन्दी यू.एस.ए. ने पिछले वर्ष से प्रतियोगिता दिवस का आयोजन प्रारंभ किया था। पिछले वर्ष की तुलना में इस वर्ष प्रतियोगियों की संख्या में चार गुनी वृद्धि हुई। जिस तरह भारतीय अभिभावक बच्चे को गणित, विज्ञान और अंग्रेजी विषयों के लिए प्रोत्साहित करते हैं उसी प्रकार से हमने उन्हें बच्चे को हिन्दी के लिए प्रोत्साहित करते पाया।

इस प्रतियोगिता में कुल 480 बच्चों तथा उनके अभिभावकों ने भाग लिया जो न्यू जर्सी, पेंसिलवेनिया, न्यूयार्क, तथा डेलावेयर के रहने वाले थे। कुल 12 हिन्दी पाठशालाएँ इसमें सक्रिय रहीं तथा अनेक शिक्षकों के अतिरिक्त 25 सक्रिय स्वंयसेवक सुबह 9 बजे से रात के 9 बजे तक तन-मन-धन से कार्यक्रम की व्यवस्था में संलग्न रहे।

हिन्दी महोत्सव की तरह यह कार्यक्रम भी विशाल रूप लेता जा रहा है और यह इस बात का द्योतक है कि लोगों का हिन्दी के प्रति रुझान बढ़ा है।

23 फरवरी 2008 हिल्सबोरो नगर के पुस्तकालय में हिन्दी कविता प्रतियोगिता में भाग लेने वाले तरुण विद्यार्थी

प्रतियोगिता में कविता पाठन करती हुई बालिका

मंच पर उत्साहित युवतियाँ हिन्दी प्रतियोगिता के अवसर पर

"सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तान हमारा..."

एक शाम राष्ट्रभक्ति गीतों और रुबाइयों के नाम

मस्कत में , भारत के 59 वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रमों की श्रंखला के अंतिम कार्यक्रम " सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तान हमारा ..... " दर्शकों ने खूब सराहा।

भारतीय राजदूतावास और इंडियन शोसल क्लव की हिन्दी शाखा द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में दिल्ली से गायक , संगीतकार श्री इन्द्रनील मुकर्जी और वारसा (पोलैंड) स्थित प्रसिद्ध शायर डा. सुरेन्द्र भुटानी विशेष रूप से पधारे। ओमान में भारत के राजदूत श्री अनिल वाधवा ने इस अवसर पर डा. कलाम और उनके स्वप्न "2020 में सर्वश्रेष्ठ भारत" को समर्पित श्री इन्द्रनील की सी डी " मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना " और डा. भुटानी की द्विभाषी (हिन्दी व पोलिश) पुस्तक रुबाईयात का विमोचन किया।

गीत - संगीत और शायरी की इस विभोर शाम को सुन्दर अंदाज़ में पिरो कर प्रस्तुत किया सुवेती भाटिया और गजेश धारीवाल ने। कार्यक्रम के यादगार क्षण रहे , अपनी नई पुस्तक से डा. भुटानी द्वारा अति भावुक रुबाई पाठ, पोलैंड से आयी मोनिका और श्री इन्द्रनील द्वारा मूलत पोलिश गीत " दिल तड़प तड़प के कह रहा है " को पोलिश और हिन्दी में गाना , श्री इन्द्रनील और गजेश धारीवाल द्वारा गीत और शायरी की दिलों को छू जाने वाली प्रस्तुति तथा सुप्रसिद्ध संगीतकार अनिल विसवास द्वारा संगीतबद्ध राष्ट्र गीत का पूर्ण मूल रूप में (गुरुदेव टैगोर द्वारा रचित पाचों अन्तरों सहित) बजना।

लम्बे समय तक याद रहने वाले इस यादगार कार्यक्रम में ओमान के उद्योग जगत व समाज की अनेक प्रतिष्ठित हस्तियाँ उपस्थित रहीं जिनमें उल्लेखनीय हैं सर्व श्री शेख कनक खीमजी, किरण अशर,एस के विरमानी और डा. नामबियार।

संदीप मल्होत्रा
मस्कत , ओमान

जनवरी 2008 मे आयोजित ' सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तान ' कार्यक्रम में दीप प्रज्जवलित करते हुये ओमान में भारत के राजदूत श्री अनिल वाधवा के साथ श्री वीर सिंह , श्री सी एम सरदार और श्रीमती गीता मुन्शी।

चित्र में कार्यक्रम का आनन्द लेते हुये श्रोता गण -प्रथम पंक्ति में बाएं से बैठी हैं श्रीमती एव शेख , श्री कनम खीम जी , भारत के राजदूत श्री अनिल वाधवा, श्री व श्रीमती एस के विरमानी और श्री व श्रीमती वीर सिंह।

इस चित्र में बाएं से सुवेती , पोलैंड से आईं मोनिका , श्री गजेश धारीवाल, श्री सी एम सरदार और डा. सुरेन्द्र भूटानी

CENTENARY OPTICAL

For a Better View of the World

We Offer Affordable Prices in a Wide Variety Of Fashionable Frames and Lenses

Designer Frames
Soft, Colored, Toric, Disposible, Bifocal Contact Lenses
Eye Exams On Premises
We Accept Vision Care Plans

Ravi Joshi

Licensed Optician & Contact Lens Fitter

CENTENARY PLAZA
2864 Ellesmere Rd @ Neilson
Scarborough ON, M1E 4B8
416-282-2030

PRIYAS

Specializing In Indian Groceries

DENISON CENTRE
1661 DENISON STREET
UNIT T-15
MARKHAM, ONTARIO
L3R 6E4
TEL: 905-944-1229
FAX: 905-944-9600

We Believe in Quality

Phone: 905-474-1570

Fax: 905-474-4476

RAVEN Video Productions

... Pictures to Video

A unique gift idea .....

Most people I know have thousands of pictures filed away in family albums, trays of slides, and reels of home movies.

These represent sweet memories of yester-years. How many times are these fond memories viewed? Once in a while, maybe.....

Consider this:

Transfer your photographs, slides, and home movies to video tape. Add a bit of music... some interesting tidbits.... titling and graphics...

and you have a personalized memory for now and forever...

BMS graphics

Choose from a variety of
Birthday - Mundan - Janoi - Anniversary
Indian & western

Wedding Invitations

Choose your own language

शादी, मुंडन,सालगिरह, जनेऊ कोई भी हो शुभ संस्कार।
हर प्रकार के निमंत्रण के लिए हमारी सेवायें हैं सदा तैय्यार।।

21 Bradstone Square, Scarborough, (Toronto) Ontario M1B 1W1
Tel: 416.803.7949 416.292.7959 Fax: 416.292.7969
E-mail: bmsgraphics@rogers.com

Far Eastern Books

(Estd. 1976)

http://www.worldwidebookstore.net e-mail: books@febonline.com

Leading Publisher and Distributors

Books, Periodicals & Multi-Media Material In International languages

A single and reliable source for the supply of print & non-print material from the Indian sub-continent at competitive rates, including:

- *Popular titles in English*
- *Fiction & Non fiction in major regional languages such as, Bengali, Gujarati, Hindi, Punjabi, Urdu, Tamil etc.*
- *Single and dual language children books*
- *Educational material for classrooms*
- *Journals & Periodicals*
- *CD & DVD Labels.*

Tel: (905) 477-2900 Toll Free: (800) 291-8886 Fax: (905) 479-2988

250 COCHRENE DRIVE, SUITE 14, MARKHAM, ON. L3R 8E5

Mistaan Catering & Sweets Inc.

Specializing in Bengali Sweets We do catering for Weddings & Parties

मिष्ठान की मिठाइयाँ

मिष्ठान की मिठाइयाँ
खाओ रसगुल्ले और रस मलाइयाँ

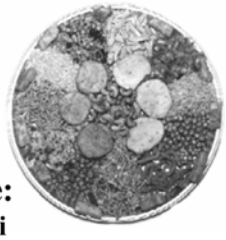

Our Daily Take-out Foods include:

Channa Bhatura **Aloo Ghobi**
Malai Kofta **Matter Paneer**
Channa Masala **Chicken Masala**
Chicken Tikka **Tandoori Chicken**
Butter Chicken **Goat Curry**
& many more delicious items

अब आप बैठ कर खाने-पीने का आनन्द ले सकते हैं

460 McNicoll Avenue, North York, Ontario M2H 2E1

Visit Our Website: www.mistaan.com

Telephone: (416) 502-2737 **Fax: (416) 502-0044**

HOME & AUTO INSURANCE

GOOD RATES FOR DRIVERS WITH ACCIDENTS & CONVICTIONS

EXCELLENT RATES FOR 5-10 STAR DRIVERS MAY QUALIFY FOR UPTO 50% DISCOUNT

SUDESH KAMRA
TEL: 416-666-7512

sdshkam@yahoo.ca

UNITED OPTICAL

WE SPECIALIZE IN CONTACT LENSES

- **Eye exams**
- **Designer's frames**
- **Contact lenses**
- **Sunglasses**
- **Most Insurance plans accepted**

Call: RAJ
416-222-6002

Hours of Operation

Monday – Friday: 10:00 a.m. to 7:00 p.m.
Saturday: 10:00 a.m. to 5:00 p.m.

6351 Yonge Street, Toronto, M2M 3X7
(2 Blocks South of Steeles)

FAMILY DENTIST

Dr. N.C. Sharma
Dental Surgeon

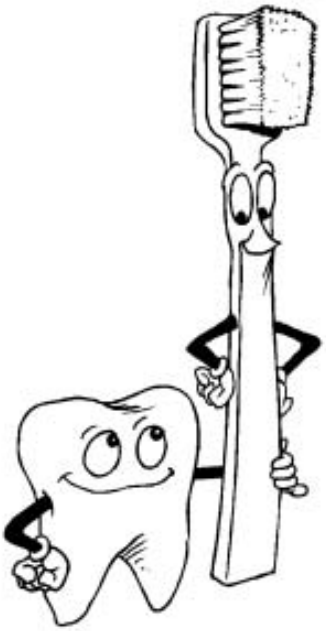

Dr. C. Ram Goyal
Family Dentist

Dr. Jyotica Ahuja
Family Dentist

Dr. Narula Jatinder
Family Dentist

Call us at: 416-222-5718

1100 Sheppard Avenue East, Suite 211, Toronto, Ontario M2K 2W1 Fax: 416-222-9777

Chander M.

Kapur, CMA, CA

~Chartered Accountant~

2750 14th Avenue, Suite #201, Markham, Ont. L3R 0B6

Tel: (905) 944-0370 Fax: (905) 944-0372

Dr. Varsha Vyas B.D.S, D.M.D.
Dental Surgeon

Prompt Emergency care
All Aspects of Dental Care
Teeth Whitening
Evening and Saturday appointments
Hindi, Punjabi & Gujrati spoken

Please call for immediate appointment:

#6 ....55 Harvest Moon Drive, (Steeles & Birchmount)
Markham, Ont. L3R 4C3 Tel. No. : 905-947-0040

Hindi Chetna

Membership Form

Annual Subscription:	**$25.00 Canadian**
Life Membership:	**$200.00 Canadian**
Donation:	**$ _____**
Method of Payment:	**Cash, cheques and drafts payable to "Hindi Chetna"**

Your Name:_____

Address: _____

_____

Telephone: Home: _____

Business: _____

e-mail: _____

_____

Contact in Canada:

Hindi Chetna
6 Larksmere Court
Markham, Ontario L3R 3RI
Canada

e-mail: hindichetna@yahoo.ca

Contact in USA:

Dr. Sudha Om Dingra
101 Guymon Court
Morrisville, North Carolina
NC27560, USA

e-mail: ceddlt@yahoo.com

CARPET PLUS

SAVE UP TO 70%

LUXURIOUS CARPETS
ORIENTAL RUGS

Commercial &
Residential
Installations

F •***Installation***

R •***Underpad***

E •***Delivery***

E •***Shop at Home***

(416) 661-4444
(416) 663-2222

Vinyl Tiles

Broadloom

180 Winges Rd.,
Unit 17-19
Woodbridge, Ontario
L4L 6C6

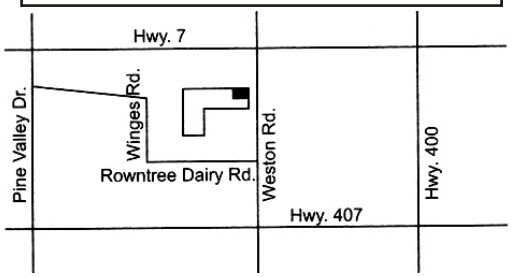

PINS FLAGS

Finest Source of :

International Flag Pins

Campaign Buttons

Friendship Pins

Embroided Crests (Patches) of All Countries

International & Provincial Flags of all sizes, Souvenirs

Mini Banners & Keychains of all countries available

Custom work available for Pins, Buttons, Crests and Flags
At Factory Direct Prices Free Set up & Shipping

We carry more than 500 Titles each of Pins, Flags & Crests in stock

Pinsnflags.com Inc., 395 Spadina Ave., Toronto, Ont., M5T 2G6

Tel: 416-596-1574 Fax: 416-596-2248
Toll Free: 1-877-322-4771 E-Mail: veena@pinsnflags.com
www.pinsnflags.com

मेरे मित्रो! हिन्दी बोलो, अपने बच्चों को हिन्दी सिखाओ! अपनी भाषा और संस्कृति को बचाओ!1